भाद्र मास, कृष्ण पक्ष 20 वर्ष, अंक 322 पृष्ठ 8 मूल्य 1.00

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज से प्रकाशित

www.akhandbharatsandesh.net

नगर संस्करण प्रयागराज मंगलवार 07 दिसम्बर 2021 विश्व निर्माण एवं मानव विकास को द्रुतगति प्रदान करने हेतु क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान आश्रम की अनुपम भेंट

क्रियायोग संदेश

क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान संस्थान प्रयागराज

क्रिया योगः साँच (सच Truth) को आँच नहीं। आँच अज्ञानता (अविद्या Ignorance) समय, दूरी व सापेक्षता की अनुभूति है जो समस्त दुःखों का कारण है। अध्यात्मिक वैज्ञानिकों ने यह सिद्ध कर दिया है कि सामान्य तरीके से जीवन जीने पर सच की अनुभूति के लिए व्याधि रहित लगभग दस लाख वर्ष की आवश्यकता होती है, लेकिन क्रियायोग अभ्यास से सच की अनुभूति एक ही जन्म में सम्भव है।

1. प्राचीन उच्च मानव सभ्यता मे वर्णित यज्ञ, वर्तमान में विश्व विख्यात 'क्रियायोग' है।
2. क्रियायोग अभ्यास वेदपाठ है, पूर्ण ज्ञान की अनुभूति है।
3. क्रियायोग अभ्यास ईश्वर अनुभूति है।
4. क्रियायोग अभ्यास अतीत, वर्तमान व भविष्य से जुड़ना है।
5. क्रियायोग अभ्यास जीवन मृत्यु पर विजय है।

क्रियायोग से सभी प्रकार की समस्याओं का समाधान सुनिश्चित।

10 मिनट का अभ्यास 20 वर्ष का विकास

जैकलीन की बढ़ीं मुश्किलें, मनी लॉन्ड्रिंग मामले में ईडी ने 8 दिसंबर को पूछताछ के लिए बुलाया

नई दिल्ली। जैकलिन फर्नांडिस के खिलाफ ईडी की ओर से लुक आउट सर्कुलर नोटिस जारी किया गया है। बाताया जा रहा है कि जैकलिन किसी शो के लिए मस्कट जा रही थीं। खबर यह भी थी कि जैकलिन फर्नांडीस को हिरासत में लिया गया था। हालांकि बाद में उन्हें छोड़ दिया गया। मनी लॉन्ड्रिंग केस में फिल्म अभिनेत्री जैकलीन फर्नांडिस की मुश्किलें कम होती नजर नहीं आ रही है। 200 करोड़ रुपए की वसूली केस में प्रवर्तन निदेशालय ने उन्हें समन भेजा है और 8 दिसंबर को दिल्ली में होने वाली पूछताछ में शामिल होने के लिए कहा है। इससे पहले जैकलीन फर्नांडिस को मुंबई एयरपोर्ट पर विदेश जाने से रोका गया था। जैकलिन फर्नांडिस के खिलाफ ईडी की ओर से लुक आउट सर्कुलर नोटिस जारी किया गया है। बाताया जा रहा है कि जैकलिन किसी शो के लिए मस्कट जा रही थीं। खबर यह भी थी कि जैकलिन फर्नांडीस को हिरासत में लिया गया था। हालांकि बाद में उन्हें छोड़ दिया गया।

आपको बता दें कि ईडी ने चंद्रशेखर और उसकी अभिनेत्री पत्नी लीना मारिया पॉल के खिलाफ 200 करोड़ रुपये से अधिक के धन शोधन मामले की जांच के सिलसिले में जैकलीन से पहले भी पूछताछ की थी। एजेंसी ने शनिवार को इस मामले में विशेष धन शोधन निवारण अधिनियम (पीएमएलए) अदालत के समक्ष आरोप पत्र दाखिल किया और इसमें चंद्रशेखर, उसकी पत्नी और छह अन्य को नामजद किया। आरोप पत्र में दावा किया गया था कि चंद्रशेखर ने अभिनेत्री को कई महंगे उपहार दिए थे। चंद्रशेखर पर फोर्टिस हेल्थकेयर के पूर्व प्रवर्तक शिविंदर मोहन सिंह की पत्नी अदिति सिंह जैसे कुछ रसूखदार लोगों से भी धोखाधड़ी करने के आरोप हैं।

व्लादिमीर पुतिन से मुलाकात में बोले पीएम मोदी

दुनिया बदल गई, पर हमारी दोस्ती नहीं...

नई दिल्ली (एजेंसी)। रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन से सालाना समिट में दिल्ली के हैदराबाद हाउस में पीएम नरेंद्र मोदी ने मुलाकात की। इस दौरान पीएम नरेंद्र मोदी ने कहा कि बीते कुछ दशकों में दुनिया में बड़े मूलभूत बदलाव हुए हैं। दुनिया ने बहुत से भूराजनीतिक परिवर्तन देखे हैं, लेकिन भारत और रूस की दोस्ती जस की तस रही है।

पीएम नरेंद्र मोदी ने कहा कि भारत और रूस के बीच का रिश्ता यूनिक है और भरोसे की नींव पर खड़ा है। पीएम नरेंद्र मोदी ने कहा कि कोरोना की वजह से दुनिया में बड़े चैलेंज आए हैं, लेकिन भारत और रूस के रिश्तों की ग्रोथ जस की तस है। हमारी रणनीतिक मोर्चे पर खास दोस्ती लगातार बढ़ती रही है। इस दौरान व्लादिमीर पुतिन ने भी भारत को भरोसेमंद दोस्त करार दिया। पुतिन ने कहा कि हम भारत को एक महान ताकत, मित्र देश और भरोसेमंद साथी के तौर पर देखते हैं।

दोनों ही देशों के रिश्ते लगातार मजबूत हो रहे हैं और मैं भविष्य की ओर देख रहा हूं। रूसी राष्ट्रपति ने कहा कि फिलहाल दोनों देशों के बीच करीब 38 अरब डॉलर का कारोबार है। इसके अलावा हम सैन्य और तकनीक के क्षेत्र में भी बड़ी साझेदारी रखते हैं। यही नहीं इस मीटिंग में पुतिन ने आतंकवाद के खिलाफ जंग में भी भारत का साथ लेने की बात कही। उन्होंने कहा कि हम स्वाभाविक रूप से हर चीज को लेकर चिंतित हैं। इनमें से ही एक आतंकवाद भी है।

पुतिन ने कहा कि आतंकवाद के खिलाफ जंग का एक हिस्सा ड्रग तस्करी और संगठित अपराध से लड़ना भी है। इसी के तहत हम अफगानिस्तान में चल रहे घटनाक्रम को लेकर भी चिंतित हैं। पीएम नरेंद्र मोदी और पुतिन की मुलाकात से पहले दोनों देशों के रक्षा और विदेश मंत्रियों की भी सोमवार को ही मुलाकात हुई थी। यहीं रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने रूसी डिफेंस मिनिस्टर से मुलाकात के दौरान 5,000 करोड़ रुपये के प्रोजेक्ट पर हस्ताक्षर किए हैं। इस प्रोजेक्ट के तहत 5 लाख से ज्यादा एके-203 राइफलों की मैन्युफैक्चरिंग यूपी के अमेठी में की जानी है। इस दौरान दोनों देशों के बीच अगले 10 साल तक के लिए रक्षा करार भी हुआ है।

गुलाम कश्मीर में पाकिस्तान आर्मी का हेलीकाप्टर हुआ क्रैश, दो पायलटों की मौत

इस्लामाबाद। गुलाम कश्मीर के गिलगित-बाल्टिस्तान के सियाचिन में पाकिस्तान आर्मी का हेलीकाप्टर क्रैश हो गया है। इस हैलीकाप्टर दुर्घटना में दो पायलटों की मौत हो गई है। यह जानकारी पाकिस्तान आर्मी द्वारा दी गई है। दुर्घटना की वजह खराब मौसम का कारण बताया जा रहा है। पाकिस्तान आर्मी पब्लिक रिलेशंस द्वारा जारी एक बयान के अनुसार इस हैलीकाप्टर दुर्घटना में दोनों पायलट मेजर इरफान बेरचा और मेजर राजा जीशान की मौत हुई है। साथ ही बयान में कहा गया है कि पाकिस्तानी सेना के जवान और बचाव हेलीकाप्टर दुर्घटनास्थल पर पहुंच गए हैं। वहीं, इसके पहले इस साल अगस्त में विमान दुर्घटना की दो ऐसी ही घटनाएं सामने आई थीं। हालांकि, इन दोनों ही घटनाओं में किसी के हताहत होने की खबर नहीं थी। पहली घटना पाकिस्तान के पंजाब में अटक के पास हुई थी जब पाकिस्तान वायु सेना (पीएएफ) का लड़ाकू प्रशिक्षक विमान 6 अगस्त को नियमित प्रशिक्षण मिशन के दौरान दुर्घटनाग्रस्त हो गया था। उस समय पीएएफ के प्रवक्ता द्वारा जारी एक बयान में कहा गया था कि दोनों पायलट सफलतापूर्वक जेट से बाहर निकल गए थे और जमीन पर किसी भी तरह के जान-माल के नुकसान की सूचना नहीं थी। कुछ दिनों बाद 12 अगस्त को एक मुशशाक विमान तकनीकी खराबी के कारण झेलम के पास चममाला गांव के खेतों में दुर्घटनाग्रस्त हो गया था और विमान के अंदर के दोनों पायलटों को मामूली चोटें आई थीं।

बिहार में जातीय जनगणना कराएंगे नीतीश कुमार, राज्य सरकार ही उठाएगी खर्च, सीएम ने किया ऐलान

पटना। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने कहा है कि हमलोग जातीय जनगणना के पक्ष में हैं। इससे सबको फायदा होगा। ये बहुत ठीक चीज है। हमलोग इसे ठीक ढंग से करवायेंगे ताकि कोई छूटे नहीं। जातीय जनगणना को लेकर बिहार में जल्द ही सर्वदलीय बैठक होगी। सोमवार को जनता के दरबार में मुख्यमंत्री कार्यक्रम के बाद पत्रकारों से बातचीत में सीएम ने सर्वदलीय बैठक पर कहा कि हमलोग इसे करना चाह रहे हैं। हमने बात कर ली है। उपमुख्यमंत्री को भी अपनी पार्टी के लोगों से बात करने के लिए कहा है। बाकी सब लोगों से बातचीत हो गई है। जब वे बातचीत कर लेंगे और इसके बारे में बताएंगे तो उसके बाद ऑल पार्टी मीटिंग की जाएगी। इन प्रिंसिपल (सैद्धांतिक तौर पर) हम पहले ही से जातीय जनगणना को लेकर बार-बार कह रहे हैं। हम इसलिए ऑल पार्टी मीटिंग करना चाह रहे हैं कि इसके बारे में सब लोगों की समझ बहुत साफ होनी चाहिए। जनगणना हम किस तरह से कराएंगे, उस पर सब लोगों की एक राय होनी चाहिए। कैसे करेंगे, किस प्रकार से करेंगे, किस माध्यम से करेंगे, इन सब पर पूरी तैयारी करवा रहे हैं। जब इस पर सबकी राय बन जाएगी तो सारी चीजों को मीटिंग में फाइनल करेंगे। सभी पार्टी की मीटिंग में एक राय होगी, उसी के आधार पर निर्णय लेकर सरकार उसका एलान करेगी।

मुख्यमंत्री ने कहा कि यह भी होगा कि बहुत लोग सब-कास्ट (उपजाति) ही बोलेंगे, कास्ट नहीं बोलेंगे। इसलिए सब-कास्ट और कास्ट को हर तरह से देखना है। एक-एक चीज के लिए हमने लोगों को कहा भी है। बात भी की है। क्या-क्या किया जाएगा, इन सब चीजों के बारे में अभी कुछ नहीं कहेंगे। जब मीटिंग होगी, उसी समय कुछ बात को रखेंगे। सबकी सहमति से जो बात निकलेगी, उसी के आधार पर सरकार की तरफ से कास्ट बेस्ड सेंशस का जो तरीका होगा, उसके बारे में एलान किया जाएगा।

सैन्य रिश्तों को और मजबूती देंगे भारत – रूस, चार समझौतों पर हुए हस्ताक्षर

ये हैं चार समझौते

टू प्लस टू बैठक से पहले दोनों देशों के बीच रक्षा और सैन्य सहयोग
से जुड़े चार समझौतों पर हस्ताक्षर किए गए।
क्लाशनिकोव सीरीज के छोटे हथियार बनाने संबंधी 18 फरवरी, 2019 के प्रोटोकाल में संशोधन।
अमेठी के कोरवा में 6,01,427 एके-203 असाल्ट राइफलों का निर्माण।
सैन्य तकनीक सहयोग को 2021 से बढ़ाकर 2031 तक करना।
सैन्य एवं सैन्य तकनीकी सहयोग पर भारत-रूस अंतर सरकारी आयोग से जुड़े प्रोटोकाल पर हस्ताक्षर।

नई दिल्ली। भारत और रूस के सैन्य रिश्तों को मजबूती के नए दौर में ले जाने पर दोनों देशों के रक्षा मंत्रियों ने प्रतिबद्धता जताई है। साथ ही इसे हकीकत में तब्दील करते हुए पहली टू प्लस टू वार्ता से पहले सैन्य और रक्षा क्षेत्र से जुड़े चार समझौतों पर हस्ताक्षर भी किए।

इनमें अमेठी के कोरवा में भारत और रूस की संयुक्त साझेदारी में छह लाख से अधिक एके-203 राइफलें बनाने का समझौता शामिल है। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने भारत-रूस की इस रणनीतिक वार्ता को दो खास साझेदार देशों के लिए ऐतिहासिक करार दिया और चीन का नाम लिए बिना भारत की उत्तरी सीमा पर उसकी पूरी तरह अकारण आक्रामकता व असाधारण सैन्यीकरण की चुनौतियों का उल्लेख किया।

रक्षा मंत्री ने कहा कि अपनी मजबूत राजनीतिक इच्छाशक्ति और प्रतिकूलताओं से निपटने की देश की अंदरूनी क्षमता के बल पर भारत इन चुनौतियों का मुकाबला करने में सक्षम है। उन्होंने कहा कि इन परिस्थितियों में भारत को ऐसे साझेदारों की जरूरत है जो उसकी अपेक्षाओं को लेकर संवेदनशील हों। राजनाथ ने कहा कि भारत की बढ़ी रक्षा जरूरतें सैन्य और सैन्य तकनीक क्षेत्र में भारत-रूस के बीच और गहरे सहयोग का रास्ता खोल रही हैं।

जुबानी जंग: फारुक अब्दुल्ला को संघ नेता इंद्रेश कुमार की सलाह, भारत में दम घुट रहा तो छोड़ दें देश

नई दिल्ली। आरएसएस के वरिष्ठ नेता इंद्रेश कुमार ने सोमवार को जम्मू-कश्मीर के पूर्व सीएम फारूक अब्दुल्ला पर उनके विवादित बयान को लेकर तीखा हमला किया। इंद्रेश कुमार ने कहा कि यदि अब्दुल्ला का भारत में दम घुट रहा है तो वे भारत छोड़ दें। फारुक अब्दुल्ला ने बीते दिनों कहा था कि जम्मू-कश्मीर के लोगों को आंदोलकारी किसानों की तरह 'बलिदान' करना होगा, ताकि वे अपने अधिकार वापस पा सकें। इंद्रेश कुमार ने कहा कि इससे पता चलता है वह हिंसा में विश्वास करते हैं, शांति में नहीं। संघ नेता इंद्रेश कुमार ने केंद्र शासित जम्मू कश्मीर के लोगों के कथित दमन के खिलाफ राष्ट्रीय राजधानी में विरोध प्रदर्शन करने के लिए पीडीपी प्रमुख महबूबा मुफ्ती की भी आलोचना की। उन्होंने कहा कि झूठ बोलना उनके लिए फैशन बन गया है। इंद्रेश कुमार ने कहा कि जम्मू कश्मीर के ये दोनों नेता भड़काने की राजनीति बंद करें और देश की एकता व अखंडता कायम रखने में बाधा बनने का प्रयास न करें। दिल्ली में आयोजित एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में संघ नेता से अब्दुल्ला के बयान पर प्रतिक्रिया मांगी गई थी। उन्होंने कहा कि अब्दुल्ला का बयान साफ दशार्ता है कि उन्हें हिंसा से प्यार है। बकौल इंद्रेश कुमार पूर्व मुख्यमंत्री ने पहले कहा था कि राज्य का विशेष दर्जा बहाल कराने के लिए चीन की मदद ली जाएगी, क्या हम इसे स्वीकार करेंगे? कभी नहीं। यह बकवास है। संघ नेता ने कहा कि यदि पूर्व सीएम को यहां घुटन महसूस होती है, तो वह जहां चाहें अरब या अमेरिका चले जाएं। उनकी पत्नी इंग्लैंड में रहती है। वह अपनी पत्नी के साथ रहने के लिए वहां जाने के बारे में भी सोच सकते हैं। वह वहां खुश रहेंगे।

फारुक अब्दुल्ला ने रविवार को कहा था कि जम्मू-कश्मीर के लोगों को बलिदान करना पड़ सकता है, जैसा कि नए कृषि कानूनों का विरोध करने वाले किसानों ने किया था। नेशनल कांफ्रेंस के संस्थापक शेख मोहम्मद अब्दुल्ला की 116वीं जयंती के अवसर पर उन्होंने श्रीनगर में अपनी पार्टी की युवा शाखा के सम्मेलन में यह बात कही थी। अब्दुल्ला ने यह भी कहा कि उनकी पार्टी हिंसा का समर्थन नहीं करती है। वहीं, पूर्व सीएम व पीडीपी प्रमुख महबूबा मुफ्ती ने केंद्र शासित प्रदेश के लोगों के कथित दमन के विरोध में सोमवार को दिल्ली के जंतर-मंतर पर धरना दिया। उन्होंने मांग की कि राज्य में बेगुनाहों की हत्या तत्काल रोकी जाए। पीडीपी प्रमुख ने कहा कि उन्होंने राष्ट्रीय राजधानी में इसलिए धरना दिया, क्योंकि वह जानती हैं कि उन्हें कश्मीर में विरोध प्रदर्शन की इजाजत कभी नहीं दी जाएगी।

कांग्रेस ने पंजाब चुनाव को लेकर कमेटियों का किया ऐलान

चंडीगढ़। पंजाब में अगले साल विधानसभा चुनाव होने वाले हैं। ऐसे में कांग्रेस ने रणनीतियों पर काम करना शुरू कर दिया है। प्राप्त जानकारी के मुताबिक कांग्रेस ने पंजाब विधानसभा चुनाव के लिए कमेटी की घोषणा कर दी है। वरिष्ठ नेता अंबिका सोनी को समन्वय समिति का चेयरमैन बनाया है। एक समाचार के मुताबिक कांग्रेस ने अंबिका सोनी को चुनाव समन्वय समिति, सुनील जाखड़ को चुनाव अभियान समिति और प्रताप सिंह बाजवा को घोषणा पत्र समिति का चेयरमैन बनाया है। इसके अलावा कांग्रेस ने अजय माकन की अध्यक्षता में स्क्रीनिंग कमेटी का गठन किया है। हालही में मुख्यमंत्री चरणजीत सिंह चन्नी, प्रदेशाध्यक्ष नवजोत सिंह सिद्धू और प्रदेश पार्टी प्रभारी हरीश चौधरी से पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी से मुलाकात की थी। माना जा रहा है कि इस मुलाकात में राहुल गांधी ने पंजाब के नेताओं से चुनाव से संबंधित समितियों को लेकर बातचीत की थी।

नागालैंड गोलीबारी पर अमित शाह के बयान के बाद बोले चौधरी

पीड़ित परिवारों के लिए आर्थिक मुआवजे का ऐलान हो

नयी दिल्ली। नागालैंड गोलीबारी मामले को लेकर कांग्रेस ने मोदी सरकार पर निशाना साधा। इसी के साथ ही कांग्रेस ने पीड़ित परिवारों के लिए आर्थिक मुआवजे की मांग की। दरअसल, नागालैंड में हुई गोलीबारी में 14 लोगों की मौत हो गई। जिसके बाद सड़क से लेकर संसद तक हंगामा मचा हुआ है। इसी बीच केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने सोमवार को सदन में कहा कि सभी एजेंसियों से यह सुनिश्चित करने को कहा गया है कि भविष्य में विद्रोहियों के खिलाफ अभियान चलाते समय इस तरह की किसी घटना की पुनरावृत्ति नहीं हो।

एक समाचार के मुताबिक कांग्रेस नेता अधीर रंजन चौधरी ने बताया कि पीड़ित परिवारों के लिए आर्थिक मुआवजे का ऐलान हो। 2015 में पीएम ने नागालैंड के साथ शांति समझौते पर करार किया था,

तब प्रधानमंत्री ने कहा था कि नागालैंड में अब शांति बहाल होगी। कांग्रेस नेता ने लोकसभा में नागालैंड में गोलीबारी का मुद्दा उठाया। उन्होंने कहा कि नागालैंड में जो घटना घटी है, वह दुखद और शर्मनाक है। कांग्रेस नेता ने पूछा कि नागालैंड में शांति बहाली को लेकर दावे किए गए थे, उनका क्या हुआ ? गृह मंत्री ने बताया कि स्थानीय प्रशासन और पुलिस ने स्थिति को सामान्य करने की कोशिश की है। अभी स्थिति तनावपूर्ण लेकिन नियंत्रण में बनी हुई है। पुलिस महानिदेशक नागालैंड और आयुक्त नागालैंड ने 5 दिसंबर को घटनास्थल का दौरा किया है। इसके साथ ही पुलिस स्टेशन में प्राथमिकी दर्ज की गई है और मामले की गंभीरता को ध्यान में रखते हुए इसे राज्य अपराध पुलिस स्टेशन को जांच के लिए सौंप दिया गया है। इस संदर्भ में एसआईटी का गठन किया गया है।

खबर संक्षेप

खड़ी कार में हाइवा ट्रक ने मारी टक्कर, कार क्षतिग्रस्त

नैनी। कोतवाली क्षेत्र के छिवकी रेलवे क्रासिंग के समीप सोमवार को सड़क किनारे खड़ी एक कार में हाइवा ट्रक ने टक्कर मार दी। हालांकि कार सवार लोग घायल होने से बाल-बाल बच गए, लेकिन कार क्षतिग्रस्त हो गई। सूचना मिलने पर पुलिस मौके पर पहुंची ट्रक समेत चालक को पकड़कर नैनी कोतवाली उठा लाए।

भडेवरा में भागवत कथा आज से

करछना। क्षेत्र के भडेवरा गांव में जन कल्याण हेतु सात दिवसीय संगीतमय श्रीमद्भागवत महापुराण की कथा आज मंगलवार से आयोजित किया गया है। कार्यक्रम के आयोजक राम बल्लभ ओझा व संयोजक कृष्ण बल्लभ ओझा ने संयुक्त रूप से बताया कि कथावाचक के रूप में कथा व्यास पं विद्याधर त्रिपाठी शास्त्री मधुप होंगे। कथा की मुख्य श्रोता यजमान ललिता देवी होंगी। उन्होने बताया कि कुलगुरू पंडित रमेश कुमार शुक्ल के सानिध्य में वैदिक मंत्रोचार के साथ गाजे-बाजे के साथ मंगलवार को भव्य कलश यात्रा निकाली जाएगी।

नैनी के देवरख घाट पर खड़ी कार में अराजक तत्वों ने लगाई आग

पुलिस मौके पर पहुंची, की जांच पड़ताल, भुक्तभोगी ने दी नामजद तहरीर

अखंड भारत संदेश

नैनी के देवरख घाट पर खड़ी कार में अराजक तत्वों ने लगाई आग।

नैनी। कोतवाली क्षेत्र के अरैल पुलिस चौकी के अंतर्गत देवरख घाट के समीप खड़ी कार में अराजक तत्वों ने रात्रि प्रहर में आग लगा दी। जिससे कार धूं-धूं करके राख में तब्दील हो गई। भुक्तभोगी ने रिपोर्ट दर्ज कराने के लिए नैनी कोतवाली में नामजद तहरीर दी है। जानकारी के मुताबिक नैनी कोतवाली क्षेत्र के चक भटाही के रहने वाले अजय कुमार पांडेय की कार खराब होने वह देवरख घाट के समीप लॉक कर खड़ी कर दिए थे। बताया जाता है कि बीती देर रात बाद लगभग 4:00 बजे भोर में एक अन्य चार पहिया वाहन से कुछ लोग पहुंचे और तेल छिड़ककर उक्त खड़ी कार में आग लगा दिए। जिससे कार धूं-धूं कर जलने लगी। घाट के आस पास बालू निकासी के काम में जुटे मजदूरों ने जब कार को जलते हुए देखा तो किसी ने भुक्तभोगी को सूचना दे दी। जब वह मौके पर पहुंचे तो कार आग के हवाले थी और जल रही थी। सूचना मिलने पर 112 नंबर डायल पुलिस के साथ ही अरैल पुलिस चौकी प्रभारी आशीष कुमार यादव दल बल के साथ मौके पर पहुंचे और घटित वारदात की जांच पड़ताल की। वहीं भुक्तभोगी ने पुलिस को तहरीर देकर बताया है कि अशोक टॉकीज, नगर निगम नैनी के समीप रहने वाले एक व्यक्ति अपने कुछ साथियों के साथ एक अन्य चार पहिया वाहन पर सवार होकर उक्त स्थान पर पहुंचे और वहां पर उसकी खड़ी कार में आग लगा दिए। पुलिस तहरीर लेकर जांच पड़ताल करने में जुटी रही, लेकिन देर शाम तक नैनी कोतवाली में रिपोर्ट दर्ज नहीं हो पाया था। इस संबंध में चौकी प्रभारी आशीष कुमार यादव ने बताया कि सूचना मिलने पर वह मौके वारदात स्थल पर गए हुए थे और अजय कुमार पांडेय की तहरीर पर मामले की जांच पड़ताल जारी है।

धूमधाम से मना मेजा ब्लॉक प्रमुख प्रतिनिधि का जन्मदिन

मेजा रोड। मेजा ब्लॉक में प्रमुख प्रतिनिधि गंगा प्रसाद मिश्रा ने समर्थकों के साथ अपना जन्मदिन धूमधाम से मनाया। बता दे की आज सुबह से ही ब्लॉक प्रमुख प्रतिनिधि के चाहने वाले प्रमुख का इंतजार कर रहे थे। जैसे ही प्रमुख अपने कार्यालय पर पहुंचे तो खंड विकास अधिकारी सपना अवस्थी के साथ एडीओ (कोआपरेटिव) विष्णु प्रभाकर मिश्रा,एडीओ (समाज कल्याण) कमलेश मिश्रा, जे ई(एम आई) प्रदीप अवस्थी, अकाउंटेंट मदन, रामकृष्ण गुप्ता व समस्त स्टाफ मिलकर उनका 65 वां जन्मदिन धूमधाम से मनाया। इस दौरान प्रमुख प्रतिनिधि ने कहा कि मेजा का समुचित विकास हमारा उद्देश्य है। जब तक मेजा के विकास को ऊंचाइयों तक नहीं पहुंचा लेंगे तब तक हम नहीं रुकेंगे।इस मौके पर सुंदर पांडे, शोभित शुक्ला, आशुतोष मिश्रा, संजय तिवारी,बबलू पांडे, सोनू शुक्ला, प्रधान गडेवरा अनिल शुक्ला, राहुल मिश्रा आनंद तिवारी,नीरज मिश्रा,सूरज मिश्रा यादव अजय यादव आदि रहे।

न्यूज झरोखा

ब्लाक स्तरीय शारदा आउट आफ स्कूल का तीन दिवसीय नोडल शिक्षक प्रशिक्षण आरम्भ

करछना। ब्लाक संसाधन केंद्र कौंधियारा के पीड़ी में तीन दिवसीय प्रशिक्षण का शुभारम्भ खण्ड शिक्षाधिकारी कौंधियारा अतुल दत्त तिवारी के निर्देशन एवं मार्गदर्शन में किया गया। प्रशिक्षण के द्वारा नोडल शिक्षको को आउट आफ स्कूल, बच्चों का चिह्नीकरण, उनके आयु संगत नामांकन एवं उनका उपचारात्मक शिक्षण कर शिक्षा की मुख्य धारा से जोड़ने के बारे मे प्रशिक्षण दिया जा रहा है। कार्यक्रम की शुरूआत मां सरस्वती का माल्यापर्ण एवं दीप प्रज्वलन खण्ड शिक्षाधिकारी कौंधियारा द्वारा किया गया। संदर्भदाताओं ए आर पी शत्रुघ्न प्रसाद शुक्ल, अनुराग पाण्डेय, विनोद कुमार मल्ल, अनिल कुमार सिंह और नवीन कुमार पांडेय ने प्रशिक्षण के विभिन्न चरणो का सम्पादन किया गया।

एसबीएम स्कूल में आयोजित की गई निबंध प्रतियोगिता

करछना। क्षेत्र के गंधियांव स्थित एसबीएम स्कूल में निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें विद्यालय के 2 दर्जन से अधिक छात्र-छात्राओं ने भाग लिया। निबंध प्रतियोगिता का आयोजन राम आश्रय जन कल्याण संस्थान द्वारा तंबाकू छोड़ो अभियान के तहत तंबाकू से हानियां विषय पर निबंध प्रतियोगिता कराई गई। इसका परिणाम आने पर विजई प्रतिभागियों को पुरस्कृत भी किया जाएगा। उक्त अवसर पर विद्यालय के प्रबंधक पवनेश कुमार रामाश्रय जन कल्याण संस्थान के सचिव हरिओम मिश्रा कोऑर्डिनेटर गुड़िया सिंह एवं विद्यालय के प्रधानाचार्य वी एन दुबे वेदिका श्रीवास्तव आकांक्षा ओझा संध्या तिवारी आदि सहित शिक्षक शिक्षिकाएं उपस्थित रहे।

भाजपा ने जंघई में सदस्यता अभियान कैंप लगाया

जंघई। जंघई कालोनी पर प्रधान सेमरी प्रमोद गुप्ता के कार्यालय के सामने समाजसेवी एवं विधानसभा मुंगरा बादशाहपुर भाजपा नेता इंजीनियर दिनेश शुक्ला गुड्डू भैया ने भाजपा सदस्यता अभियान कैंप लगवाकर सैकड़ों लोगों को भाजपा का सदस्य बनाया।दिनेश शुक्ला ने बताया कि मेरे नेतृत्व में भारतीय जनता पार्टी की सदस्यता अभियान की शानदार शुरूआत हुई इस दौरान अपार जनसमर्थन के बीच उमड़ी भीड़ में युवाओं ने बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया और विश्व की सबसे बड़ी पार्टी को और मजबूत करने महत्वपूर्ण योगदान दिया। इस दौरान ग्राम सभा सेमरी के प्रधान प्रमोद गुप्ता, सूर्यप्रकाश शुक्ला, मदन मिश्रा,बिक्की शुक्ला, कृष्णा प्रताप शुक्ला, अंशुमान शुक्ला, रवि तिवारी, अजीत मिश्रा, रमेश शर्मा व क्षेत्र के अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे और कार्यक्रम को सफल बनाने में सहयोग किया।

सरदार पटेल से जिन्ना की तुलना करने वाले लोगों को देश में जगह नहीं : स्वतंत्र देव

भाजपा प्रदेश अध्यक्ष नें विधान सभा करछना के करेहा में जन सभा को संबोधित किया

अखंड भारत संदेस

भाजपा प्रदेश अध्यक्ष का स्वागत करते भाजपाई

करछना, प्रयागराज। विपक्ष क्या चाहता है कि हिन्दू मुसलमान से आपस मे लडे.और मुसलमान हिंदू से लडें? क्या आप दंगा कराना चाहते है? योगी के शासन मे हिन्दू मुसलमान दोनो मिलकर गरीबी से लडेगा। जो देश का बंटवारा करके हिदुस्तानियो का कत्ले आम कर ट्रेनों से शव भेजने वाले जिन्ना का सम्मान करता है क्या उसे बोट देना चाहिए? धरती माँ की कसम है जो जिन्ना का सम्मान करेगा उसे जनता कभी माफ नही करेगी। उक्त बातें प्रयागराज करछना विधान सभा के करेहा बाग मे प्रदेश अध्यक्ष व विधान परिषद सदस्य स्वतंत्र देव सिंह ने जनसभा में उमड़ी जन सैलाब को संबोधित करते हुए कही।

आगे कहा कि विपक्ष सदन में श्री राम के लिए हाथ नहीं उठाएगी. वह जिन्ना के लिए हाथ उठाएगी। ऐसे लोगो को क्या आप मतदान करेगे। ये चुनाव जाति पांती के लिए नहीं ये चुनाव राष्ट्र की खुशहाली और राष्ट्र को मजबूत करने के लिए है। यह चुनाव राष्ट्रवाद के लिए है। मोदी और योगी गरीबों की आत्मा से सम्मान करते हैं। प्रदेश में गरीबों के 42 लाख से अधिक पक्के मकान बनाएं जा चुके है। आगामी 2024 तक मे सभी गरीबों के पक्के मकान हो जायेगे। और घर घर शौचालय निर्माण करवाया जा रहा है। घर घर स्वच्छ पेयजल पहुंचाया जा रहा है। गरीबों को इलाज के लिए पांच लाख का आयुष्मान भारत कार्ड से अपना इलाज करवा रहे है। विपक्ष के समय में विजली के लाले पड़े थे। और बिजली के बिल देख लोगो को पसीने आ जाते थे। लेकिन योगी सरकार मे 18 से 23 घंटे तक बिजली मिल रही है। उत्तर प्रदेश में पहले गुंडों माफियो के लिए पुलिस सड़कों पर झाड़ू लगाती थी गुंडों के कहने पर ठेका मिलता था। लेकिन वहीं आज योगी के सरकार मे प्रदेश की पुलिस गुंडों माफियों को जेल में ठूंस रही है। दलित शोषित गरीब पहले बैंक में जानें से घबड़ाते थे आज केन्द्र व प्रदेश सरकार ने सभी का बैंक में खाता खुलवाया। और गरीब भी बचत करने लगे।श्री सिंह ने कहा कि सायकिल और हाथी पर लक्ष्मी नहीं आती है कमल के फूल पर ही लक्ष्मी आती है। इसलिए आप लोग कमल के फूल खिलाए। विकास रूपी लक्ष्मी को घर लाए।कोराना मे मोदी और योगी ने जान और जहान को बचाने के लिए काम किया है-सरदार पटेल ने पूरे देश को एकीकरण कर दिए लेकिन नेहरू की वजह से जम्मू कश्मीर का एकीकरण नहीं किया जा सका। नेहरू की सरकार मे वहां तिरंगा भी ले कर चलना राष्ट्र दोह था। जम्मू कश्मीर में आजादी के पहली बार भाजपा के राष्ट्रीय महामंत्री रहे वर्तमान के प्रधान मंत्री मोदी जी ने वहां पर तिरंगा फहराने का काम किया था।सांसद डॉ. रीता बहुगुणा जोशी ने राज्य एवं केंद्र सरकार की उपलब्धियों को गिनाते हुए प्रदेश अध्यक्ष की शालीनता की तारीफ कर करछना मे भी कमल खिलाने की अपील की।ज़िलाध्यक्ष विभव नाथ भारती ने प्रदेश अध्यक्ष वा मंचस्थ अतिथियों पदाधिकारियों के परिनिर्माण दिवस पर श्रद्धाजलिं देते हुए अतिथियों का स्वागत किया और यमुनापार मे विकास की बात दोहराई।इसके पूर्व ज़िलाध्यक्ष विभव नाथ भारती, ज़िला प्रभारी ओंकार केशरी, कार्यक्रम संयोजक ज्ञान सिंह पटेल ज़िला,कार्यक्रम सह संयोजक जिला महामंत्री राजेश शुक्ल,ज़िला महामंत्री पुष्पराज सिंह पटेल, विधायक बारा डॉ. अजय कुमार, इसी क्रम में पूर्व विधायक दीपक पटेल सरकार की उपलब्धियां गिनाई प्रदेश कार्य समिति सदस्य पियूष रंजन निषाद, पटेल, डॉ. भगवत पांडेय, क्षेत्रीय उपाध्यक्ष रमाकांत विश्वकर्मा, जिला मीडिया प्रभारी दिलीप कुमार चतुर्वेदी, जिला सह मीडिया प्रभारी राम कुमार शर्मा, सुभाष सिंह पटेल,अरुण कुमार सिंह आदि ने बड़ी माला, पुष्प गुच्छ, अंग वस्त्र, स्मृति चिन्ह देकर स्वागत करते हुए सभा को संबोधित किया। इस अवसर पर मंचस्थ विक्रमादित्य मौर्य, विजय शंकर शुक्ल, शिवदत्त पटेल, अश्वनी सिंह पटेल,आकांक्षा विजय पटेल रामअचल पटेल चंडिका पटेल सोनकर ,धनंजय पांडेय, अवधेश उमर वैश्य, महेंद्र कुमार बिंद, मनोज पासी, शोभ नारायण द्विवेदी, त्रिवेणी प्रसाद पांडेय, जगदीश सिंह यादव, राजेश्वरी तिवारी, जय सिंह पटेल आदि मंचस्थ रहे।

प्रदेश अध्यक्ष के आगमन पर हैलीपेड पर हुआ जोरदार स्वागत

भाजपा जिला पदाधिकारी, मोर्चा, एवं जन प्रतिनिधियों ने हैलीपेड पर स्वागत किया। व मंडल अध्यक्षों ने स्वागत करते हुए हैलीपैड तक जाकर विदा किया।

कान्यकुब्ज भूर्जी यमुनापार का बैठक सम्पन्न

जारी। रघुनन्दन भोजवाल कान्य कुब्ज भूर्जी यमुनापार प्रयागराज का बैठक (भारतीय मजदूर संघ जिला उपाध्यक्ष) के सौजन्य से इठळ इंटर कालेज मेजा रोड में बैठक का आयोजन किया गया जिसकी अध्यक्षता श्री बरमदीन भोजवाल की उपस्थित में किया गया जिसमे मेजा ब्लॉक, उरुवा ब्लॉक एवं मांडा ब्लाक के पदाधिकारियों का चयन किया गया एवं साथ ही साथ भुर्जी समाज के उत्थान किस प्रकार से सुदृढ़ हो इस पर विचार विमर्श हुआ जिसमे भोजवाल समाज के सम्मानित व्यक्ति बेचन लाल भोजवाल, नंदू भोजवाल (संस्थापक) , सुभाष भोजवाल,बैजनाथ भोजवाल,मनीष भोजवाल,अधिवक्ता कपिलदेव भोजवाल ,शिवजी भोजवाल ,घनश्याम भोजवाल , मिठाई लाल भोजवाल ,रविराज भोजवाल ,हर्षित भोजवाल (सचिव),विष्णु भोजवाल (राष्ट्रीय संयोजक),अरविंद भोजवाल ,अरुण गुप्ता भोजवाल,दीपक भोजवाल,अनिल भोजवाल,गंगा भोजवाल,बुद्धि प्रकाश कान्यकुब्ज आदि लोग उपस्थित रहे(भारतीय मजदूर संघ जिला उपाध्यक्ष के सौजन्य से इठळ इंटर कालेज मेजा रोड में बैठक का आयोजन किया गया। जिसकी अध्यक्षता बरमदीन भोजवाल की उपस्थित में किया गया जिसमे मेजा ब्लॉक, उरुवा ब्लॉक एवं मांडा ब्लाक के पदाधिकारियों का चयन किया गया एवं साथ ही साथ भुर्जी समाज के उत्थान किस प्रकार से सुदृढ़ हो इस पर विचार विमर्श हुआ जिसमे भोजवाल समाज के सम्मानित व्यक्ति श्री बेचान लाल भोजवाल, नंदू भोजवाल (संस्थापक) , सुभाष भोजवाल,बैजनाथ भोजवाल,मनीष भोजवाल,अधिवक्ता कपिलदेव भोजवाल ,शिवजी भोजवाल ,घनश्याम भोजवाल , मिठाई लाल भोजवाल ,रविराज भोजवाल ,हर्षित भोजवाल (सचिव),विष्णु भोजवाल (राष्ट्रीय संयोजक),अरविंद भोजवाल ,अरुण गुप्ता भोजवाल,दीपक भोजवाल,अनिल भोजवाल,गंगा भोजवाल,बुद्धि प्रकाश कान्यकुब्ज आदि रहे।

जनाधार बढ़ाने के लिए कांग्रेस ने सदस्यता अभियान किया शुरू

मेजा रोड। उत्तर प्रदेश में पार्टी का जनाधार बढ़ाने के लिए कांग्रेस ने 15 दिवसीय सदस्यता अभियान शुरू किया है। प्रियंका गांधी के निर्देश पर कांग्रेस पार्टी द्वारा गांव गांव में चलाए गए प्रतिज्ञा यात्रा के समापन के बाद अब सदस्यता अभियान चलाया जा रहा है, जिससे कांग्रेस पार्टी में अधिक से अधिक लोगों को जोड़ा जा सके।उसी क्रम में सोमवार को मेजा विधानसभा के मेजारोड बाजार में युवा कांग्रेस की नगर उपाध्यक्ष व मेजा विधानसभा प्रत्याशी युवा नेता माधवी राय ने सदस्यता अभियान को गति देने जा रहे प्रदेश महासचिव राघवेन्द्र प्रताप सिंह तथा वसीम अंसारी प्रदेश सचिव,यमुनापार प्रभारी का मेजारोड पहुंचने पर उनका माल्यार्पण करते हुए जोरदार स्वागत किया। वार्ता के दौरान माधवी राय ने कहा कि प्रियंका गांधी ने प्रतिज्ञा यात्रा के बाद अब कांग्रेस की सदस्यता अभियान गांव-गांव में चलाने का निर्णय लिया है।इसी के तहत प्रत्येक गांव में सदस्यता अभियान चलाया जा रहा है। इसमें तमाम लोग कांग्रेस के साथ तेजी से जुड़ रहे हैं।वही देखा जाय तो मेजा के लोगो से माधवी राय जनसंपर्क भी जोर शोर से कर रही है उन्होंने बताया कि जनसंपर्क के दौरान किसानों का कहना है की अगर किसानो का कर्ज अगर माफ हो जाता तो किसान काफी खुशहाल हो जाते। सदस्यता अभियान के दौरान माधवी राय ने लोगों से अपील करते हुए कहा कि 2022 में बहन प्रियंका गांधी के हाथों को मजबूत करते हुए कांग्रेस की सरकार बनाएं। माधवी राय ने बताया कि सोमवार को सदस्यता अभियान मेजा व कोरांव विधानसभा में चलाया गया जहाँ सैकड़ों लोगों ने कांग्रेस की सदस्यता ली। सदस्यता लेने वाले लोगों को माधुवी राय ने बधाई। स्वागत के दौरान अंशु तिवारी उमेश तिवारी, घनश्याम प्रजापति, मुन्ना पांडे,राजन तिवारी सहित दर्जनों लोग मौजूद रहे।

अपनी मांगों को लेकर आंगनबाड़ी कार्यकत्रियों ने किया महापौर का घेराव

आंगनबाड़ी कार्यकर्ता मुख्यमंत्री के लिए कल करेंगे बुद्धि शुद्धि यज्ञ

अखंड भारत संदेश

अपनी मांगों के लिए महापौर का घेराव करती आंगनबाड़ी कार्यकत्रियां

प्रयागराज। अपनी मांगो को लेकर अनिश्चित कालीन आंदोलन कर रही आंगनवाड़ी कार्यकत्रियों ने संघ के प्रांतीय आवाहन पर धरने के पांचवे दिन हजारों की संख्या में सड़क पर उतर कर आंदोलन किया। सरकार विरोधी नारे लगाते हुए उन्होंने मुख्यमंत्री को संबोधित मांग पत्र कैबिनेट मंत्री नंद गोपाल गुप्ता नंदी की पत्नी प्रयागराज महापौर अभिलाषा गुप्ता को सौंपा। सोमवार को आंगनवाड़ी कार्यकत्री व सहायिका एसोसिएशन प्रयागराज के बैनर तले चल रहे अनिश्चित कालीन आंदोलन के पांचवे दिन हजारों की संख्या में सिविल लाइंस हनुमान मंदिर के पास जुटी आंगनवाड़ी व सहायिकाएं संघ के मंडल संरक्षक संतोष मिश्र व जिला संरक्षक मौजी लाल रावत के नेतृत्व में जुलूस निकाल कर पैदल मार्च करते हुए नगर निगम ऑफिस पहुंची। सरकार विरोधी नारे लगाते हुए अभिलाषा गुप्ता बाहर आओ, आंगनवाड़ी को न्याय दिलाओ,सरकार अपना वादा पूरा करे वर्ना,गद्दी छोड़ दे आदि नारे लगाने लगी। जिससे परिसर में अफरा तफरी मच गई। देखते ही देखते बड़ी संख्या में महिला पुलिस बल के साथ कई थानों की पुलिस मौके पर पहुंच गई। इस दौरान मुख्यमंत्री को संबोधित सात सूत्रीय मांग पत्र महापौर को सौंपा गया। संघ के मंडल संरक्षक संतोष मिश्रा ने कहा की सरकार आंगनवाड़ी के साथ अन्याय कर रही है जो कत्तई बर्दास्त नही किया जाएगा। वही संघ के जिला संरक्षक मौजी लाल रावत ने कहा की जब तक सरकार आंगनवाड़ी का मानदेय नहीं बढ़ा देती तब तक आंदोलन जारी रहेगा। इस मौके पर निर्णय लिया गया की बुधवार को आंदोलन के दौरान आंगनवाड़ी कार्यकत्रिया कलेक्ट्रेट में मुख्यमंत्री के लिए बुद्धि शुद्धि यज्ञ करेंगी। इस मौके पर प्रदेश प्रभारी श्याम सूरत पांडेय, श्यामा द्विवेदी, सुशीला देवी, पुष्पा, शशि बाला, सुरूर फातिमा, सुशीला मिश्रा, प्रभा देवी, सरिता देवी, राजकुमारी, विमला देवी सहित हजारों की संख्या में आंगनबाड़ी मौजूद रहीं।

कौड़िहार ब्लाक के खेलकूद मुकाबला में लालगोपालगंज का कब्जा

ब्लॉक स्तरीय खेलकूद प्रतियोगिता में छात्र एवं छात्राओं ने दिखाई प्रतिभा

कबड्डी में रसूलपुर चांदी तो गोला फेंक में लालगोपालगंज के दिव्यांश और नीलू अव्वल

ब्लॉक के विजेता छात्र एवं छात्राओं को प्रथम गोल्ड पदक, द्वितीय रजत पदक और तृतीय कांस्य पदक के रूप में सम्मानित किया गया

अखंड भारत संदेश

कौड़िहार प्रतियोगिता में विजेता छात्रों को पदक देते खंड शिक्षाधिकारी ओपी मिश्रा तथा प्रमाण पत्र दिखाते विजेता छात्र एवं छात्राएं।

लालगोपालगंज। परिषदीय विद्यालय के छात्र एवं छात्राओं के ब्लॉक स्तरीय क्रीडा प्रतियोगिता आयोजित हुई। जिसमें लालगोपालगंज और रसूलपुर चांदी के छात्र एवं छात्राओं ने शानदार प्रदर्शन कर अव्वल मुकाम हासिल किया। ब्लॉक के मुकाबला में जीतने वाले छात्र एवं छात्राओं को अब जिला स्तर के मुकाबले में प्रतिभा दिखाने का मौका मिलेगा। कौड़िहार के मलाकहरहर स्थित आरपी रस्तोगी इंटर कॉलेज में सोमवार को ब्लॉक स्तरीय खेलकूद प्रतियोगिता शुरू हुई। कौड़िहार खंड शिक्षा अधिकारी ओम प्रकाश मिश्रा ने मां सरस्वती की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर खेलकूद मुकाबले का शुभारंभ किया। 12 न्याय पंचायत से आए छात्र एवं छात्राओं की पहले लंबी दौड़ कराई गई। जिसमें रसूलपुर चांदी की करिश्मा यादव प्रथम और सेजल ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। गोला फेंक के बालक वर्ग में दिव्यांशु पाठक ने प्रथम और लालगोपालगंज के अजय यादव ने द्वितीय मुकाम हासिल किया। वहीं गोला फेंक की बालिका वर्ग में लालगोपालगंज के कम्पोजिट पटना की नीलू और पलएं की मुस्कान ने सभी को पछाड़कर अव्वल रहीं। कबड्डी के बालक एवं बालिका वर्ग में रसूलपुर चांदी के सूरज यादव, सोनू यादव, मुकेश सुमित ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। तो वहीं बालिका वर्ग में सेजल यादव, अंतिमा, संजना, करिश्मा, विभा, सोनाली और मनीषा ने प्रथम पदक जीता। खोखो में रसूलपुर चांदी प्रथम, तो बुदौना ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। बीईओ ओपी मिश्रा ने प्रथम विजेताओं को गोल्ड पदक, द्वितीय को रजत पदक और तृतीय को कांस्य पदक से नवाजा। प्रतियोगिता में कॉलेज के प्रिंसिपल स्वतंत्र सिंह ने अपने स्टाफ सुदर्शन सिंह, राजेश कुमार, राकेश कुमार ने सहयोग किया। रेफरी की भूमिका ज्ञानेंद्र सिंह और दिनेश कुमार ने निभाई। जबकि कमेंट्री और संचालन की भूमिका विनित सिंह यादव ने अदा किया। हरेंद्र सिंह और रघुवंश मणि त्रिपाठी ने स्कोरर की भूमिका निभाई। प्राथमिक शिक्षक संघ अध्यक्ष राधे कृष्ण, मंत्री बालेंद्र पांडे, राजेश शुक्ला, इमरान कलीम, मदन शुक्ला, फूलचंद्र, जानकी, राम लाल प्रजापति आदि मौजूद रहे।

समस्त बीमारियों की जड़ है उर्वरक व कीट नाशक का अंधाधुंध प्रयोग

अखंड भारत संदेस

करछना। शेष दुर्गा हर्बल कृषक उत्थान ट्रस्ट कबरा व नमामि गंगे योजना के तत्वावधान में प्राथमिक विद्यालय कबरा के प्रांगण में विशाल किसान गोष्ठी का आयोजन किया गया जिसमें कबरा, रवनिका, डीहा, मनईया व आस पास के गांवों के किसान शामिल हुए। शेष दुर्गा हर्बल प्रोड्यूसर कम्पनी लिमिटेड प्रयागराज व दुर्गा हर्बल कृषक उत्थान ट्रस्ट, कबरा के संस्थापक श्री आर पी पाण्डेय द्वारा किसानों को औषधीय खेती, जैविक खेती, जीवामृत, वरमी कम्पोस्ट, वेस्ट डी कंपोजर के लाभ व निर्माण व उनके प्रयोग करने की महत्वपूर्ण जानकारियां दी गईं। बृजेश सोलंकी, डिस्ट्रिक्ट कोऑर्डिनेटर नमामि गंगे ने किसानों को संबोधित करते हुए जैविक खेती करने पर जोर दिया और सरकार द्वारा नमामि गंगे योजना के अन्तर्गत किसानों को मिलने वाले सरकारी लाभ व अनुदान के सम्बन्ध में विस्तार से अवगत कराया। किसान गोष्ठी की अध्यक्षता कर रहे कबरा गांव के वरिष्ठ अधिवक्ता श्री महेन्द्र नारायण तिवारी जी ने किसानों को संबोधित करते हुए जैविक खेती करने की सलाह दिया। श्री शेषमणि मिश्रा, एडवोकेट,श्री विद्याधर मिश्रा, एडवोकेट ने भी अपने संबोधन में किसानों को बताया की आज के वर्तमान समय में फैल रही गंभीर बीमारियों का कारण सिर्फ डी ए पी, यूरिया व कीटनाशक का अंधाधुंध प्रयोग को जिम्मेदार बताया।संचालन आशीष कुमार तिवारी डायरेक्टर (एच आर एम) शेष दुर्गा हर्बल प्रोड्यूसर कम्पनी लिमिटेड प्रयागराज ने किया। संयोजन स्वतंत्र तिवारी जी ने किया। किसान गोष्ठी में प्रमुख रूप से शामिल सर्व श्री चन्द्र प्रकाश तिवारी वरिष्ठ समाज सेवक, श्री कृष्ण प्रकाश तिवारी प्रिंसिपल साहब, कमलेश तिवारी सोपरी, राजेश श्रीवास्तव पी एम श्याम डेरी, रविन्द्र राय प्रोडक्शन मैनेजर श्याम डेरी,अरुण मिश्रा, एडवोकेट, हाई कोर्ट, श्री बब्बू लाल आदिवासी, ग्राम प्रधान कबरा, अश्विनी तिवारी, धर्मेन्द्र तिवारी, संजय निषाद, लक्ष्मी नारायण निषाद, प्रभात तिवारी, हितेश तिवारी, पारस नाथ मिश्रा, सुरेन्द्र प्रताप तिवारी, अतुल तिवारी, नयन, अमन, नमन, शिवाकांत पाण्डेय, साधु प्रजापति, अशर्फी लाल प्रजापति, हजारी प्रसाद प्रजापति, पंचम लाल प्रजापति, बृज लाल आदिवासी एवम श्री ननकऊ मौर्य बी डी सी सदस्य आदि शामिल रहे।

खबर संक्षेप

सीएमपी डिग्री कॉलेज का असिस्टेंट प्रोफेसर गिरफ्तार

प्रयागराज। रेप पीड़िता को नाले में गिराने और पुलिसकर्मियों के साथ मिलकर फजीवाड़ा करने के मामले में फरार सीएमपी डिग्री कॉलेज के असिस्टेंट प्रोफेसर मदन यादव को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है। पूछताछ में मदन यादव ने स्वीकार किया कि उसी ने हंडिया और फूलपुर थाने में रेप पीड़िता के गवाह के खिलाफ फर्जी मुकदमा दर्ज कराया था। पुलिस दोनों मुकदमों में मदन यादव को आरोपी बना रही है। सीओ कर्नलगंज अजीत सिंह चौहान ने बताया कि मदन यादव मोबाइल बंद करके थरवई में छुपा था। वहां पर इलाहाबाद डिग्री कॉलेज के एक शिक्षक ने अपने घर पर शरण दी थी। वहीं पर छापेमारी करके पुलिस ने मदन यादव को गिरफ्तार किया है। सभी मामलों में पूछताछ चल रही है। बता दें कि गाजीपुर की रहने वाली युवती ने असिस्टेंट प्रोफेसर मदन यादव के खिलाफ शादी के नाम पर झांसा देकर रेप करने का मुकदमा दर्ज कराया था। जमानत पर छूटने के बाद मदन यादव ने रेप पीड़िता और उसके गवाह के खिलाफ फजीवाड़ा करके कई मुकदमे दर्ज कराएं। एक फर्जी गैंगरेप मामले में पुलिस ने गवाह को जेल भी भेज दिया था।

गिरफ्तार दोस्त ने कहा- पहले राजेश ने मारी गोली, फिर मैंने भी दाग दिया फायर

प्रयागराज। मेडिकल कॉलेज के पास ठेकेदार वीरेंद्र उर्फ बच्चा यादव की हत्या का दूसरा आरोपी महेंद्र यादव भी गिरफ्तार कर लिया गया। पुलिस ने उसे जार्जटाउन क्षेत्र से ही गिरफ्तार कर हत्या में प्रयुक्त पिस्टल भी बरामद कर ली है। पूछताछ में उसने बताया है कि मृतक वीरेंद्र पर पहले उसके दोस्त राजेश ने गोली मारी। इसकेबाद उसने भी अपनी पिस्टल से उस पर ताबड़तोड़ फायर झोंक दिए। पुलिस ने उसे जेल भेज दिया है। महेंद्र एक दिसंबर को घटना के बाद से ही फरार चल रहा था। सूत्रों का कहना है कि उसने पूछताछ में पुलिस को बताया है कि राजेश और वह वीरेंद्र के साथ मिलकर ठेकेदारी करते थे। उसकी फर्म केनाम से ही गंगानगर व टीपी नगर में दो ठेके जारी हुए थे जिसका काम चल रहा था। इसी काम के रुपयों केसंबंध में बातचीत के दौरान ही यह घटना हुई। पुलिस के मुताबिक, आरोपी ने पूछताछ में कहा कि बातचीत के दौरान वीरेंद्र के मांगने पर उसने जल्द ही रुपये देने का आश्वासन दिया। लेकिन इसी दौरान वीरेंद्र आक्रोशित हो गया। मना करने पर वह राजेश पर भी भड़क गया और उसे भला-बुरा कहने लगा। जिस पर तैश में आकर राजेश ने अपनी लाइसेंसी पिस्टल निकालकर उस पर फायर झोंक दिया। इसकेबाद उसने भी अपनी लाइसेंसी पिस्टल निकालकर उस पर ताबड़तोड़ फायर झोंक दिया। वीरेंद्र के लहूलुहान होकर गिरने पर पहले राजेश और फिर वह मौके से भाग निकला। सीओ अजीत सिंह चौहान ने बताया कि आरोपी को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया गया है।

संयुक्त सचिव प्रशासन पद पर संजय सोमवंशी व लाइब्रेरी पद पर यादवेश यादव हुए विजयी

संयुक्त सचिव पद पर विजई हुए संजय सिंह

संयुक्त सचिव लाइब्रेरी के पद पर विजई हुए यादवेश

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट बार एसोसिएशन की नई कार्यकारिणी के लिए सोमवार को दो पदों पर मतगणना पूरी होने के बाद परिणाम जारी कर दिए गए। संयुक्त सचिव प्रशासन पद पर संजय सिंह सोमवंशी 965 मत और लाइब्रेरी पद पर यादवेश यादव 1218 मत पाकर विजयी हुए। वहीं दूसरी ओर अध्यक्ष पद पर राधाकांत ओझा और महासचिव पद पर एसडी सिंह जादौन निर्णायक बढ़त बनाए हुए थे। वरिष्ठ उपाध्यक्ष पद के लिए मनोज कुमार मिश्रा अपने निकटतम प्रतिद्वंद्वी अमित कुमार से मात्र 129 मतों से आगे चल रहे थे।एल्डर्स कमेटी के चेयरमैन शशि प्रकाश सिंह ने बताया कि मंगलवार से पंडित केएन मिश्र अध्ययन कक्ष में संयुक्त सचिव प्रेस और संयुक्त सचिव महिला एवं कोषाध्यक्ष पद के लिए मतगणना सुबह 10 बजे से शुरू की जाएगी। इससे पहले सोमवार को अध्यक्ष, उपाध्यक्ष और महासचिव पद के लिए कुल 64 सौ मतों की गिनती पूरी कर ली गई। अध्यक्ष पद पर राधाकांत ओझा अपने प्रतिद्वंद्वी अशोक कुमार सिंह से 780 मतों से और महासचिव पद पर एसडी सिंह अपने प्रतिद्वंद्वी विक्रांत पांडेय से 322 मतों से आगे थे। संयुक्त सचिव प्रशासन पद पर विजयी प्रत्याशी संजय सिंह सोमवंशी ने अपने निकटतम प्रतिद्वंद्वी सर्वेश कुमार दुबे को मात्र 66 मतों से हराया। इसी तरह संयुक्त सचिव लाइब्रेरी पद पर विजयी यादवेश यादव ने अजय सिंह को 279 मतों से शिकस्त दी। संयुक्त सचिव प्रशासन पद पर 30 मत और संयुक्त सचिव लाइब्रेरी पद पर 35 मत अवैध रहे। दो पदों केपरिणाम घोषित होने के बाद दोनों विजयी प्रत्याशियों को उनके समर्थकों ने फूलमालाओं से लाद दिया। इस मौकेपर एनसी राजवंशी, टीपी सिंह, ओपी सिंह, अनिल तिवारी, वशिष्ठ तिवारी, बीएन मिश्र, महेंद्र बहादुर सिंह, सौरभ शुक्ला, शैलेंद्र सिंह राठौर, प्राणेश दत्त त्रिपाठी, विनोद कुमार सिंह परमार, आरके गौतम, सोम नारायण मिश्रा, अनिल श्रीवास्तव, राकेश कुमार गुप्ता, कामेशवर सिंह, वशिष्ठ दुबे, धमेंद्र शुक्ला, कुलदीप सिंह, उत्पल कुमार निषाद आदि मौजूद रहे।

कांग्रेसियों ने सोरों सहकारी समिति के सामने मुख्यमंत्री का पुतला फूंका

अखंड भारत संदेश

जंघई। प्रतापपुर विधानसभा में डीएपी खाद ना मिलने और खुलेआम कालाबाजारी होने पर कांग्रेस कार्यकताओं ने मुख्यमंत्री का पुतला जलाया उत्तर प्रदेश कांग्रेस कमेटी के आवाहन पर कांग्रेस के कार्यकर्ता प्रतापपुर ब्लॉक स्थित सोरों सहकारी समिति पहुंचे और वहां पर पता किया की डीएपी खाद मिल रही है कि नहीं वहां के सचिव ने बताया कि डीएपी खाद है ही नहीं मिलना तो दूर जिस पर आक्रोशित होकर कार्यकताओं ने उत्तर प्रदेश सरकार विरोधी नारे लगाए तथा खाद दो वरना गद्दी छोड़ दो योगी मोदी होश में आओ किसान विरोधी यह सरकार नहीं चलेगी नहीं चलेगी योगी सरकार निकम्मी है जो सरकार निकम्मी है वह सरकार बदलनी है। प्रियंका गांधी जिंदाबाद का नारा लगाते हुए उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री के पुतले को आग के हवाले कर दिया उक्त जानकारी देते हुए उत्तर प्रदेश कांग्रेस कमेटी के सचिव संजय तिवारी ने बताया कि पूरे उत्तर प्रदेश में किसान इस समय बुवाई कर रहा है और डीएपी खाद के बिना आज किसान दर-दर भटक रहा है लेकिन

सोरो सहकारी समिति के सामने कांग्रेसियों ने फूंका सीएम का पुतला

डीएपी खाद सरकार सरकार ने सरकारी समितियों में अनुपलब्ध रखकर आ रखा है लेकिन बाजार में खुलेआम 1450 से 1600 रुपए में मिल रहा है और उत्तर प्रदेश सरकार की लापरवाही के कारण किसान आत्महत्या करने को मजबूर है। कालाबाजारी डीएपी खाद की जोरों पर है इसको तत्काल दूर नहीं किया गया तो जल्दी कांग्रेस के कार्यकर्ता सहकारी समितियों पर तालाबंदी करेंगे। कार्यक्रम में ब्लॉक अध्यक्ष कमलेश पांडेय, सोनू दुबे, राजेश भारतीय, आदर्श प्रजापति, त्रिलोकी नाथ गुप्ता, प्रदीप यादव, हरिश्चंद्र यादव, विनोद, अनिल, संदीप सोनू मुंशी बनवासी आदि प्रमुख रूप से उपस्थित थे।

ये हुजूम बयां करता है रामलीला की प्रासंगिकता और इसका महत्व : लहरी भइया

मेजा। मयार्दा परुषोत्तम भगवान श्री राम के चरित्र और उनकी लीलाओं के प्रस्तुतिकरण का माध्यम है रामलीला मंचन। भारतीय लोक परम्परा संस्कृति और धार्मिक मान्यताएं लोगों को खुद से ही नहीं अपितु एक.दूसरे से भी जुड़ने की सीख देते हुए पूरे समाज को एक सूत्र में पिरोने की जिम्मेदारी निभा रही रही हैं। रामलीला इन्हीं परम्पराओं संस्कृतियों में से एक हैए जिसके माध्यम से समाज में बुराई पर अच्छाई की जीत का सन्देश मिलता है तो वहीँ सामाजिक समरसता की भी अनूठी झलक रामलीला मंचन के दौरान उसके माध्यम से प्रस्तुत की जाती है। उक्त उद्गार मिजार्पुर और प्रयागराज के प्रसिद्ध समाजसेवी श्यामाकांत शुक्ल उर्फ लहरी भईया ने क्षेत्र के विभिन्न रामलीला मंचन के अवसर पर बतौर मुख्य अतिथि व्यक्त किए।उन्होंने कहा कि रामलीला को जिस भी दृष्टिकोण से देखा जाए उसमें हर क्षेत्र के विषय में कुछ न कुछ सीख सन्देश जानकारी अवश्य छिपी होती है और आज भी 21वीं सदी में भारत की यह प्राचीन परम्परा देश ही नहीं दुनिया में भी अपनी पहचान अपना अस्तित्व बनाए हुए है। रामलीला मंचन ने गाँवों की गलियों से निकलते हुए महानगरों की लाइम लाइट दुनिया तक का सफर किया है। सात समंदर पार भी रामलीला ने भारत की लोक संस्कृति की पहचान कराइ तो साम्प्रदायिक सद्भाव की मिसाल भी कायम हुईए इस बात का प्रमाण है इंडोनेशिया जैसे मुस्लिम बाहुल्य देश के कलाकारों द्वारा रामलीला मंचन करना। श्री शुक्ल ने कहा कि आज के आधुनिक परिवेश में जब टेलीविजन की दुनिया में प्राइम टाइम पर लुभावने सीरियल्स प्रसारित होते हैं। ऐसे में रामलीला मंचन के नौ दिनों के दौरान शायद इन सीरियल्स की टीआरपी सबसे कम होती है। बड़े शहरों महानगरों में आधुनिक साज सज्जा स्पेशल इफेक्ट के माध्यम से रामलीला मंचन को भावपूर्ण और आकर्षक दशार्या जाता है तो वहीं ग्रामीण क्षेत्रों छोटे शहरों आदि में आज भी पारंपरिक वाद्ययंत्रों पर श्री रामचरितमानस की चौपाइयों पर अभिनय करते कलाकार लोगों को घण्टों बांधे रखने पर मजबूर कर देते हैं। रामलीला देखने के लिए उमड़े हुए हुजूम को देखकर यह कहना गलत नहीं होगा कि आज भी कायम है। रामलीला की प्रासंगिकता और उसका महत्व। समाजसेवी ने आगे कहा कि लोक परम्परा संस्कृति कला और मान्यताओं की नींव पर खड़े भारतीय समाज में आज भी अपनी जड़ों से जुड़े रहने की ललक दिखती है और कई ऐसे माध्यम हैंए जो समाज भारत की प्राचीन परम्पराओं से जोड़े रखने का दायित्व बखूबी निभा रहे हैं। समाज को धर्म अधर्म अच्छा बुरा सत्य असत्य की पहचान और सीख देती हुई ये लोक परम्पराएं नित नई यात्रा की ओर

रामलीला इन्हीं परम्पराओं संस्कृतियों में से एक है जिसके माध्यम से समाज में बुराई पर अच्छाई की जीत का सन्देश मिलता है

अग्रसर हैं। रामलीला ऐसा ही एक माध्यम है समाज को एक डोर में पिरोने का और आज भी इस माध्यम का क्रेज समाज के बीच से कम नहीं बल्कि और मजबूती के साथ बढ़ा है। रामलीला देखने के लिए उमड़ने वाली भीड़ से इस बात की तस्दीक काफी हद तक स्पष्ट हो जाती है कि यदि समाज के सामने आकर्षक और रोचक तरीके से किसी कला का प्रस्तुतिकरण किया जाए तो मनोरंजन के नाम पर समाज के सामने फूहडता प्रदर्शित करने और अश्लीलता परोसने की जरूरत नहीं। दस दिनों के रामलीला मंचन के दौरान कई ऐसे प्रसंग आते हैंए जब दर्शक हंसता भी हैए भाव में आंसू भी बह निकलते हैं और उत्तेजना में रोंगटे भी खड़े हो जाते हैंए इन्हीं विशेषताओं के कारण रामलीला ने अपनी अलग पहचान विभिन्न लोकसंस्कृतियों के बीच बना रखी है।आज का दौर घर घर टीवी का है और इस टीवी का सबसे खास साथी है प्राइम टाइम। जिस दौरान न जाने मनोरंजन के कितने माध्यम उपलब्ध रहते हैं और आम दिनों में तो इस वक्त पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों की टीआरपी की लड़ाई सबसे ज्यादा होती है। इन सबके इतर रामलीला मंचन के दस दिनों के दौरान टीवी का यही प्राइम टाइम फीका पड़ जाता है और लोग बरबस ही रामलीला मंचन का आनंद उठाने को आतुर दिखते हैं। समाजसेवी का कहना है कि आज रामलीला में कई जगहों से अश्लील कार्यक्रम होने की सूचना मीडिया और सोशल मीडिया के माध्यम से मिलती है जो सर्वथा गलत है। रामलीला भारत की पहचान उसका गौरव और लोक संस्कृति की आत्मा है इसपर किसी भी प्रकार की अश्लीलता उचित नहींए आयोजकों को इससे दूर रहना चाहिए। फिल्मी गानों पर नहींए बल्कि भक्ति संगीतों पर नृत्य आदि का स्वस्थ मनोरंजन कराया जा सकता है। समाजसेवी ने विभिन्न रामलीला मंचो पर सबसे पहले भगवान श्री राम को सादर नमस्कार करते हुए रामलीला देखने के लिए बैठी भीड़ को भी नमस्कार कर भगवान की आरती के बाद दर्शकों को संबोधित किया। श्री शुक्ल जहा भी पहुंचे उनका रामलीला संचालकों व कलाकारों द्वारा भव्य स्वागत किया गया। उन्होंने कहा कि रामलीला मंचन के समय उमड़ने वाली भीड़ इस बात की गवाही देती है कि आज भी कायम है और शायद कल भी रहेगा रामलीला का महत्व और उसकी प्रासंगिकता।

कार्यालय ग्राम पंचायत डांडो वि. ख. करछना प्रयागराज

टेण्डर/कोटेशन

मनरेगा/चतुर्थ राज्य वित्त/14वां/15वां वित्त योजनाअन्तर्गत ग्राम पंचायत डांडो विकास खण्ड करछना में अद्योलिखित कार्यो के आगणन /प्राकलन के अनुसार यथा आवश्यक मात्रा में सामग्री कार्य स्थल पर आपूर्ति भाड़ा सहित पहुंचाकर आपूर्ति हेतु आपूर्तिकर्ता से सील बन्द लिफाफे में टेन्डर/कोटेशन अद्योहस्ताक्षरी के कार्यालय में दिनांक 06–12–2021 से दिनांक 10–12–2021 को अपराह्न 3 बजे तक आमंत्रित किया जाता है। उक्त तिथि के बाद प्राप्त किसी भी टेन्डर/कोटेशन पर विचार नहीं किया जायेगा आपूर्तिकर्ता अपना कोटेशन/टेन्डर उक्त तिथि तक जमा कर सकते हैं नियम व शर्ते किसी भी समय कार्यालय कार्यदिवस में देखी जा सकती है तथा टेन्डर फार्म की बिक्री उक्त अवधि में कार्यालय समय 10 से 12 बजे तक प्रत्येक कार्यदिवस पर की जायेगी। किसी एक व समस्त टेन्डर/कोटेशन को निरस्त करने का अधिकार ग्राम पंचायत डांडो में निहित होगा। टेन्डर/कोटेशन दिनांक 15–12–2021 को अपराह्न 4 बजे पूर्व निर्धारित कमेटी के समक्ष खोला जायेगा। टेन्डर/कोटेशन फार्म कार्यालय में ग्राम पंचायत विकास अधिकारी के पास दिनांक 15–12–2021 कार्यालय अवधि में समय 3.30 अपराह्न तक जमा किया जा सकता है। निम्नलिखित कार्य पर पर जिस–जिस सामग्री की आवश्यकता है उसका विवरण कार्यलय/नोटिस बोर्ड पर चस्पा है उत्त्तर प्रदेश माल एवं सेवाकर अधिनियम के अन्तर्गत अनुमन्य जी.एस.टी. का भुगतान किया जायेगा। जिसके जमा करने का दायित्व आपूर्तिकर्ता का होगा साथ ही जी.एस.टी जमा चालान की आपूर्तिकर्ता द्वारा स्वप्रमाणित प्रति भुगतान के एक माह के अन्दर अपरिहार्य रूप से जमा करना होगा उसके उपरान्त ही अगला भुगतान किया जायेगा उस भुगतान पर ही उक्त नियम व शर्ते लागू रहेगी। इसके विपरीत स्थिति पाने पर भविष्य के उक्त फर्म को काली सूची में डालने हेतु यथोचित विधिक कार्यवाही कर दी जायेगी।

क्र0	कार्य का नाम	अनुमानित लागत (लाख में) सामग्री अंश	सामग्री अंश आपूर्ति की अवधि
1.	पक्की सड़क से कपिल के घर तक इंटरलाकिंग कार्य	2.50000 लाख	2 माह
2.	पक्की सड़क से राम लौटन के घर तक इंटरलाकिंग कार्य	2.50000 लाख	3 माह
3.	पक्की सड़क से बब्बू सिंह के मंदिर तक इंटरलाकिंग कार्य	2.50000 लाख	2 माह
4.	पक्की सड़क से दशरथ लाल के घर तक इंटरलाकिंग कार्यअन्डरग्राउण्ड नाली कार्य	2.50000 लाख	2 माह

मिथिलेश कुमार
ग्राम प्रधान
ग्राम पंचायत डांडो
वि0 ख0 करछना प्रयागराज

पत्रांक: मेमो/ग्राम पं. वि. अ./टेण्डर/ कोटेशन/ 2020–21/ दिनांक

प्रीती शुक्ला
ग्राम विकास अधिकारी
ग्राम पंचायत डांडो
वि0 ख0 करछना प्रयागराज

बाबा साहब की पुण्यतिथि पर दी गई श्रद्धांजलि

अखंड भारत संदेश

सहसों। बाबा साहब को याद करते हुए उनके पुण्यतिथि पर दी गई भावभीनी श्रद्धांजलि। कांग्रेस पार्टी के पूर्व जिला उपाध्यक्ष अशफाक अहमद के नेतृत्व में सोमवार को पार्टी कार्यालय बाबूगंज में संविधान निमार्ता बाबा साहब भीमराव अंबेडकर की 65वीं पुण्य तिथि पर उनके छायाचित्र पर पुष्पांजलि अर्पित करके भावभीनी श्रद्धांजलि दिया गया। इस अवसर पर अशफाक अहमद ने कहा कि भारतीय संविधान के निमार्ता बाबा साहब देश के बड़े समाज सुधारक तो थे ही, वे जीवन भर समाज में फैली हुई कुरीतियों के विरुद्ध जीवन पर्यंत संघर्षरत रहे। उनके जन्मदिवस को समानता दिवस के रूप में भी जाना जाता है। तथा उनके पुण्यतिथि पर हम लोग महापरिनिर्वाण दिवस के रूप में मना रहे हैं। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए कांग्रेस पार्टी के वरिष्ठ नेता एडवोकेट देवराज उपाध्याय ने कहा की बाबा साहब अर्थशास्त्री और समाज सुधारक थे। उन्होंने दलित और मौज आंदोलन को प्रेरित किया और अछूतों, दलितों से सामाजिक भेदभाव के विरुद्ध आंदोलन चलाकर उन्हें जागरूक किया। बाबा भीमराव अंबेडकर की पुण्यतिथि पर पूरा देश उन्हें श्रद्धांजलि देते हुए याद कर रहा है। मरणोपरांत उन्हें भारत रत्न से सम्मानित किया गया था। इस अवसर पर कांग्रेस सदस्यता अभियान भी चलाया गया और लोगों में मिठाईयां बांटी गई। इस अवसर पर प्रमुख रूप से अकबर अली, तहजीब उल हसन, रंजीत कुमार, रामनरेश, अंसार अहमद, मकसूद अहमद, दरगाही, लाल बहादुर यादव, मोहम्मद यूसुफ, रंजीत यादव आदि उपस्थित रहे।

इसी क्रम में भारद्वाज गुरुकुलम संस्थान रुदापुर देवनहरी में बाबासाहेब भीमराव अंबेडकर की पुण्य तिथि पर महापरिनिर्माण दिवस के रूप में मनाते हुए उनके छायाचित्र पर श्रद्धा सुमन अर्पित किया गया एवं उनको याद करते हुए संस्थान के प्रबंधक विनय कुमार उपाध्याय की अध्यक्षता में विद्यालय के बच्चों को डॉ आंबेडकर के व्यक्तित्व, कृतित्व के बारे में चर्चा करते हुए बताया गया कि डॉक्टर भीमराव अंबेडकर को गरीबों, शोषितों व वंचितों के परम हितेषी एवं जीवन भर उनके प्रति लड़ाई लड़ते रहे और शिक्षा पर निरन्तर जोर देते रहे उनका मानना था कि शिक्षित व्यक्ति ही समाज में अपने हित के लिए लड़ सकता है। उनके जीवन पर प्रकाश डालते हुए बच्चों को बताया गया कि समाज में सबको शिक्षित होना अति आवश्यक है एवं समाज में समानता का अधिकार होना चाहिए। बाबा साहब को उनके मरणोपरांत भारत रत्न से भी नवाजा गया। इस अवसर पर कुमारी अंजली, कुमारी आबिदा, कुमारी जमीना, गौरव श्रीवास्तव, दिवेश कुमार सिंह, प्राची श्रीवास्तव, जोया खान, अमित कुमार पटेल, रमेश कुमार यादव सहित आदि लोग उपस्थित रहे।

बाबा साहब को उनके पुण्यतिथि पर याद करते हुए बच्चे एवं कांग्रेस के नेता।

अंबेडकर जयंती के अवसर पर रक्तदान बधूता दिवस

रक्तदान से समाज में फैलेगा भाईचारा : राजेश पांडेय

पीपुल्स वॉइस संस्था द्वारा रक्तदान बंधुत्व दिवस मनाया गया

अखंड भारत संदेश

कोरांव। जहां एक तरफ आज पूरे देश में डॉक्टर भीमराव अंबेडकर की पुण्य तिथि मनाई जा रही है वहीं टाउन एरिया कोरांव अंतर्गत पीपुल्स वॉइस संस्था द्वारा रक्तदान बंधुत्व दिवस मनाया गया जहां पर पूरूषो के महिलाओं ने पढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया महिलाओं का उत्साह सराहनीय रहा आपको बता दें कि सदियों पुरानी दलित महिला आदिवासी गरीब जनता को जाति व्यवस्था ने कलंकित किया उस जाति व्यवस्था के उन्मूलन के लिए नेतृत्व लेने वाले संविधान निमार्ता डॉ भीमराव रामजी अंबेडकर को 65 वीं पुण्यतिथि पर श्रद्धांजलि देने के लिए रक्तदान कार्यक्रम का आयोजन किया गया उक्त बातें पीपुल्स वाइफ संस्था के संयोजक राजेश एडवोकेट ने कहीं रक्तदान शिविर में मुख्य अतिथि के रूप में समाजवादी पार्टी के जिला सचिव राजेश पांडे ने कहा कि जिस तरह से दलित समाज आगे आकर रक्तदान कर अपनी जागरूकता का परिचय दे रहा है इससे निश्चित ही समाज में छुआछूत ऊंच नीच का भेदभाव दूर होगा यह रक्त किसी जरूरतमंद की जिंदगी प्रदान करेगा वही पूनम ने रक्तदान के दौरान कहा कि बाबा साहब द्वारा बताई गई बंधुता के मूल को उजागर करने के लिए देशभर के स्त्री पुरुष भारत के संविधान के प्रति अपनी वफादारी दिखाने के लिए रक्तदान कर रहे हैं किसान नेता ललन सिंह पटेल ने इस रक्तदान बंधुता की प्रशंसा की रक्तदान करने वालों में प्रमुख रूप से बसंत लाल अरविंद कुमार संध्या शाक्य इरफान अंसारी दीपक कुमार राजेश कुमार एडवोकेट वीरेंद्र अंतिमा प्रियंका कुमारी पुष्पांजलि सरस्वती सुशीला के साथ 25 महिला पूरुष ने रक्तदान किया।

महापरिनिर्वाण दिवस पर श्रद्धांजलि सभा आयोजित

जंघई। महापरिनिर्वाण दिवस पर किरण ढाबा जलालपुर के पास सपा कार्यालय पर पूर्व प्रधान जलालपुर सपा नेता राधेश्याम भास्कर की अध्यक्षता में श्रद्धांजलि सभा हुई। बाबा साहब को याद किया गया जिसमें राधेश्याम भास्कर ने कहा कि 6 दिसंबर 1956 को संविधान निमार्ता विद्वान पुरुष महामानव भारत रत्न भारत के मसीहा विश्व के नेता बोधिसत्व बाबा साहेब डॉक्टर बीआर अंबेडकर जी हम सब को छोड़ कर चले गए थे।महापरिनिर्वाण दिवस पर

उपस्थित लोगों ने बाबा साहब को कोटि-कोटि नमन किया।श्रद्धांजलि सभा में अरविंद पांडेय विधानसभा अध्यक्ष मजदूर सभा, शिवराम यादव, पुष्पराज भास्कर एडवोकेट, प्रेमराज भास्कर एडवोकेट, लालचंद यादव पूर्व प्रधान, सुभाषचंद्र बिंद, प्रमोद यादव, आदित्य भास्कर, अभिषेक भास्कर, सुरेश बिंद, महेंद्र कुमार यादव जिला सचिव समाजवादी पार्टी उपस्थित रहे।

सपा नेताओं ने संविधान निर्माता बी.आर. अंबेडकर को श्रद्धांजलि अर्पित करते

कार्यालय ग्राम पंचायत डांडो वि. ख. करछना प्रयागराज

टेण्डर/कोटेशन

मनरेगा/चतुर्थ राज्य वित्त/14वां/15वां वित्त योजनाअन्तर्गत ग्राम पंचायत डांडो विकास खण्ड करछना में अद्योलिखित कार्यो के आगणन /प्राकलन के अनुसार यथा आवश्यक मात्रा में सामग्री कार्य स्थल पर आपूर्ति भाड़ा सहित पहुंचाकर आपूर्ति हेतु आपूर्तिकर्ता से सील बन्द लिफाफे में टेन्डर/कोटेशन अद्योहस्ताक्षरी के कार्यालय में दिनांक 06–12–2021 से दिनांक 15–12–2021 को अपराह्न 3 बजे तक आमंत्रित किया जाता है। उक्त तिथि के बाद प्राप्त किसी भी टेन्डर/कोटेशन पर विचार नहीं किया जायेगा आपूर्तिकर्ता अपना कोटेशन/टेन्डर उक्त तिथि तक जमा कर सकते हैं नियम व शर्ते किसी भी समय कार्यालय कार्यदिवस में देखी जा सकती है तथा टेन्डर फार्म की बिक्री उक्त अवधि में कार्यालय समय 10 से 12 बजे तक प्रत्येक कार्यदिवस पर की जायेगी। किसी एक व समस्त टेन्डर/कोटेशन को निरस्त करने का अधिकार ग्राम पंचायत डांडो में निहित होगा। टेन्डर/कोटेशन दिनांक 20–12–2021 को अपराह्न 4 बजे पूर्व निर्धारित कमेटी के समक्ष खोला जायेगा। टेन्डर/कोटेशन फार्म कार्यालय में ग्राम पंचायत विकास अधिकारी के पास दिनांक 20–12–2021 कार्यालय अवधि में समय 3.30 अपराह्न तक जमा किया जा सकता है। निम्नलिखित कार्य पर पर जिस–जिस सामग्री की आवश्यकता है उसका विवरण कार्यलय/नोटिस बोर्ड पर चस्पा है उत्त्तर प्रदेश माल एवं सेवाकर अधिनियम के अन्तर्गत अनुमन्य जी.एस.टी. का भुगतान किया जायेगा। जिसके जमा करने का दायित्व आपूर्तिकर्ता का होगा साथ ही जी.एस.टी जमा चालान की आपूर्तिकर्ता द्वारा स्वप्रमाणित प्रति भुगतान के एक माह के अन्दर अपरिहार्य रूप से जमा करना होगा उसके उपरान्त ही अगला भुगतान किया जायेगा उस भुगतान पर ही उक्त नियम व शर्ते लागू रहेगी। इसके विपरीत स्थिति पाने पर भविष्य के उक्त फर्म को काली सूची में डालने हेतु यथोचित विधिक कार्यवाही कर दी जायेगी।

क्र0	कार्य का नाम	अनुमानित लागत (लाख में) सामग्री अंश	सामग्री अंश आपूर्ति की अवधि
1.	पक्की सड़क से राम लौटन के घर तक नाली निर्माण कार्य	2.50000 लाख	2 माह
2.	सरताज सिंह के घर से तालाब तक नाली निर्माण कार्य	2.50000 लाख	3 माह
3.	विभवनाथ के बाग से काली चौरा मंदिर तक इंटरलाकिंग कार्य	2.50000 लाख	2 माह
4.	काली चौरा के रोड से पिपरा के घर तक इंटरलाकिंग कार्य	2.50000 लाख	ढाई माह
5.	पक्की सड़क से इन्दल और दशरथ लाल के घर तक इंटरलाकिंग एवं अन्डरग्राउण्ड नाली कार्य	2.00000 लाख	3 माह

मिथिलेश कुमार
ग्राम प्रधान
ग्राम पंचायत डांडो
वि0 ख0 करछना प्रयागराज

पत्रांक: मेमो/ग्राम पं. वि. अ./टेण्डर/ कोटेशन/ 2020–21/ दिनांक

प्रीती शुक्ला
ग्राम विकास अधिकारी
ग्राम पंचायत डांडो
वि0 ख0 करछना प्रयागराज

दलितों व वंचितों के मसीहा थे डा० भीमराव अम्बेडकर: राजू गौतम

बाबा साहब के परिनिर्वाण दिवस पर दी गई श्रद्धांजलि

परिनिर्वाण दिवस पर आयोजित समारोह में बोलते अतिथि

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। बहुजन समाज पार्टी के तत्वाधान में भारतीय संविधान के शिल्पकार भारत रत्न बोधिसत्व परम पूज्य बाबा साहेब डॉक्टर भीमराव अंबेडकर के परिनिर्वाण दिवस पर श्रद्धांजलि सभा का आयोजन नगर के एक मैरिज हॉल में संपन्न हुआ।

श्रद्धांजलि सभा के मुख्य अतिथि प्रयागराज मंडल के मुख्य मंडल प्रभारी राजू गौतम ने कहा कि बाबा साहेब दलितों दोस्तों और वंचितों के मसीहा थे। बाबा साहब ऐसे महान विचारों वाले महापुरुष थे जिन्होंने समाज में व्याप्त भेद भावको खत्म करने के लिए जीवन में बहुत ही संघर्ष किए तथा सर्व समाज की प्रखर आवाज बने। राष्ट्र निर्माण के सर्वप्रिय लोकतांत्रिक व्यवस्था में उनका योगदान अतुलनीय है। पूर्व विधायक संजय तिवारी ने कहा कि बाबा साहब के सपनों का भारत बनाने के लिए बहन मायावती को उत्तर प्रदेश का पांचवीं बार मुख्यमंत्री बनाना ही सच्ची श्रद्धांजलि होगी। विधानसभा रानीगंज के प्रभारी डॉ अजय यादव ने कहा कि डॉक्टर अंबेडकर सामाजिक समरसता के पुजारी थे। जिला अध्यक्ष लालचंद गौतम ने आए हुए मेहमानों का स्वागत करते हुए लोगों के प्रति आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम को अश्विनी कुमार राणा, सुशील कुमार गौतम, राम समाज गौतम, सुभाष पासी, ओमप्रकाश मौर्य आदि लोगों ने संबोधित किया।

सपाइयों ने बाबा साहब की प्रतिमा पर किया माल्यार्पण

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। भारत के संविधान निर्माता एवं दलितों वंचितों के मसीहा बाबासाहेब डॉ० भीमराव अंबेडकर के परिनिर्वाण दिवस के अवसर पर समाजवादी पार्टी कार्यालय मीरा भवन पर कार्यक्रम किया गया। इस अवसर पर जिला महासचिव अब्दुल कादिर जिलानी ने अंबेडकर चैराहे पर अंबेडकर की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया और बताया कि भारत के संविधान के निर्माता और निर्माण करने वाले बाबासाहेब थे परंतु इस समय भाजपा सरकार पूरे संविधान को बदलने की कोशिश कर रही है और लोगों को परेशान कर रही है। इस मौके पर प्रदेश कार्यकारिणी सदस्य गुलफाम खान, जिला उपाध्यक्ष जगदीश मौर्य, जिला सचिव शफ़त खान, विधानसभा अध्यक्ष शेर बहादुर यादव, अश्वनी सोनी ,शिवेश शुक्ला जिला पंचायत सदस्य असद अली, सद्दाम अहमद संतोष यादव तनवीर मिल्की, प्रदीप यादव, आदि लोग मौजूद रहे।

गल्ले के गोदाम से गेहूं चोरी करने वाले चार अभियुक्त गिरफ्तार

पिकअप वाहन के साथ 50 बोरा गेहूं पुलिस ने किया बरामद

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। थाना कंधई के मंगरौरा गांव में तीन दिसम्बर की रात्रि में अज्ञात चोरों द्वारा उनके गोदाम मे पीछे से सेंध लगाकर 50 बोरी गेहूं चोरी कर लिया गया था। इसी क्रम में थाना कंधई पुलिस द्वारा उक्त घटना का सफल अनावरण करते हुए मुखबिर खास की सूचना पर थाना क्षेत्र कंधई के जफरापुर मोड़ के पास से चार व्यक्तियों को महेन्द्रा पिकप नं0 (यूपी 44 टी 5534) पर लदे उक्त अभियोग से संबंधित 50 बोरी गेहूँ के साथ गिरफ्तार किया गया।

गिरफ्तार अभियुक्तों ने पूछताछ में बताया कि हम लोगों ने पास जो गेहूँ के बोरे हैं, इन्हें हम लोगों ने दो दिसम्बर की रात में थाना क्षेत्र कंधई के मगरौरा में गल्ले के गोदाम से चुराया था। आज हम लोग इसे कहीं बेंचने के फिराक में थे कि आप लोगों ने पकड़ लिया। गिरफ्तार अभियुक्तों में अनीश पुत्र बांके निवासी राजमलपुर थाना कंधई, विजय कुमार वर्मा पुत्र राम बहादुर वर्मा निवासी गुलरा थाना कंधई, अजय कुमार वर्मा पुत्र वीरेन्द्र कुमार वर्मा निवासी राजमलपुर थाना कंधई व रवि कुमार गौड़ पुत्र राम प्रताप गौड़ निवासी गुलरा थाना कंधई शामिल रहे। पुलिस टीम में उ0नि0 सुरेन्द्र प्रताप सिंह, हे0का0 रिजवान खान, का0 कुलदीप, आरक्षी रजनेश व का0 विवेक थाना कंधई रहे।

बाबा साहब सहित सभी महापुरुषों की मूर्तियों की हुई धुलाई व सफाई

डिवाइडरों में लगी फूल-पत्तियों की हुई सिंचाई

महापुरुष की मूर्तियों की धुलाई करते सफाई कर्मचारी

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। संविधान निर्माता डा0 भीमराव अम्बेडकर के परिनिर्वाण दिवस के अवसर पर नगर पालिका ने अम्बेडकर चैराहा स्थित बाबा साहब की मूर्ति सहित नगर के सभी चैराहों पर लगी महापुरुषों की मूर्तियों की धुलाई व सफाई की। इसी के साथ सड़कों के डिवाइडरों में हरियाली बनाये रखने के लिये व पर्यावरण को शुद्ध रखने के लिये फूल-पत्तियों में पानी का छिड़काव किया गया।

यह जानकारी देते हुए नगर पालिका के सफाई निरीक्षक संतोष कुमार सिंह ने बताया कि नगर पालिका अध्यक्ष प्रेमलता सिंह व अधिशाषी अधिकारी मुदित सिंह के निर्देशन में सोमवार को सुबह से ही सफाई कर्मचारी महापुरुषों की मूर्तियों की धुलाई व सफाई करने में जुट गये थे। सबसे पहले बाबा साहब अम्बेडकर की मूर्ति की धुलाई व सफाई की गई। उसके बाद चंद्रशेखर आजाद, भगत सिंह, महाराणा प्रताप सिंह आदि की मूर्तियों की भी सफाई की गई। सोमवार को सफाई निरीक्षक के साथ नगर पालिका कर्मी मिथिलेश सिंह भी धुलाई सफाई का निर्देशन करते देखे गये।

मारपीट के मामले में चार पर रिपोर्ट दर्ज

पट्टी, प्रतापगढ़। घर में एक युवक द्वारा सामान चोरी करने के बाद उलाहना देने पर आरोपीयो ने एक महिला को जमकर मारपीट गाली गलौज किया और जान से मारने की धमकी देते हुए तोड़फोड़ कर दिया। पीड़िता की तहरीर पर कोतवाली पुलिस ने आरोपियों पर मामला दर्ज कर लिया। पट्टी कोतवाली क्षेत्र के पट्टी ग्रामीण की रहने वाली प्रभावती देवी ने बताया कि उसके पड़ोसी माताफेर राजकुमार, गौरी शंकर तथा शिव कुमार ने उसके घर से कुछ सामान चुरा लिया जब वह उलाहना देने के लिए गई तो आरोपियों ने उसे जमकर मारा पीटा। गाली गलौज करते हुए उसके घर का सामान भी तोड़ दिया। पीड़ित महिला की तहरीर पर कोतवाली पुलिस ने सभी आरोपियों पर संबंधित धाराओं में मामला दर्ज कर लिया।

किसानों की समस्याओं को लेकर कांग्रेसियों ने दिया धरना

राज्यपाल को सम्बोधित ज्ञापन मुख्य राजस्व अधिकारी को सौंपा

मुख्य राजस्व अधिकारी को ज्ञापन देते जिलाध्यक्ष डा0 लालजी त्रिपाठी

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। किसानों की समस्याओं को लेकर अम्बेडकर चैराहे पर जिला कांग्रेस कमेटी अध्यक्ष डॉ0 लालजी त्रिपाठी की अध्यक्षता में कांग्रेस जनों ने धरना दिया तथा अपनी मांगों के समर्थन में प्रदेश के राज्यपाल को संबोधित ज्ञापन जिलाधिकारी के प्रतिनिधि मुख्य राजस्व अधिकारी को सौंपा।

जिलाध्यक्ष डॉ0 लालजी त्रिपाठी ने कहा कि प्रदेश की भाजपा सरकार की उदासीनता एवं अव्यवस्था के चलते प्रदेश में किसानों को बुवाई के इस मौसम में सुबह से शाम तक भूखे-प्यासे खाद वितरण केंद्रों पर लाइन में खड़े रहने के बाद भी डी0ए0पी0 खाद नहीं मिल पा रही है। डॉ0 त्रिपाठी ने कहा कि कुम्भकर्णीय नींद में सोई प्रदेश सरकार किसानों के इस दुख-दर्द को समझने को तैयार नहीं है। इस दौरान कांग्रेस के वरिष्ठ नेता मुंशी रजा (82) का आकस्मिक निधन ही जाने पर मौजूद कांग्रेस जनों ने शोक सभा कर श्रद्धांजलि दी। इस अवसर पर डा0वी0के0सिंह, इरफान अली, वेदान्त तिवारी, नरसिंह प्रकाश मिश्र, महेंद्र शुक्ल, राम रतन तिवारी, ज्योति कुमार तिवारी, सुभाष तिवारी, मकरंद शुक्ल, मनीष सिंह आदि मौजूद रहे।

सरकारी कुप्रबन्धन के चलते किसान हो रहा हर कदम पर हताश : प्रमोद तिवारी

मनीपुर गांव में सीडब्ल्यूसी मेंबर ने किया भ्रमण

मनीपुर गांव मे प्रमोद तिवारी का स्वागत करते ग्रामीण

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। केन्द्रीय कांग्रेस वर्किंग कमेटी के सदस्य प्रमोद तिवारी ने रवी की लगभग दो तिहाई बुवाई हो जाने के बावजूद किसानो को खाद व बीज को लेकर कालाबाजारी का शिकार होने पर गहरी चिंता जताई है। वहीं सीडब्ल्यूसी मेंबर प्रमोद तिवारी ने कहा कि सरकारी केन्द्रों पर बुवाई के तेज मौसम मे भी किसानो को उन्नतशील बीज तथा गुणवत्तापरक खाद भी उपलब्ध नही हो पा रहा है।

सोमवार को रामपुर खास के दो दिवसीय दौरे पर पहुंचे प्रमोद तिवारी ने विधायक मोना के कैम्प कार्यालय पर पार्टी कार्यकर्ताओं से रूबरू होते हुए कृषि क्षेत्र मे मोदी तथा योगी सरकारों के कुप्रबंधन को आडे हाथों लेते हुए कहा कि एक तरफ किसान खेत की बुवाई के लिए परेशान है वहीं दूसरी तरफ सरकार व प्रशासन की अनदेखी से सरकारी धान क्रय केन्द्रों पर किसान सरकारी मूल्य पर धान खरीद को लेकर चक्कर काट रहा है। वहीं मनीपुर मे डा. रामपाल तिवारी के संयोजन मे आयोजित धार्मिक अनुष्ठान मे भी प्रमोद तिवारी शामिल हुए। प्रमोद तिवारी ने संग्रामगढ़ मे पार्टी के वरिष्ठ कार्यकर्ता रामदुलारे पटेल के भी आकस्मिक निधन पर गहरी संवेदना प्रकट की। प्रमोद तिवारी के दौरे मे क्षेत्रीय विधायक आराधना मिश्रा मोना की ओर से उनके पुत्र राघव मिश्र ने भी पार्टी कार्यकर्ताओं व क्षेत्रीय लोगों से मुलाकात की। इस मौके पर चेयरपर्सन प्रतिनिधि संतोष द्विवेदी, सांगीपुर प्रमुख अशोक सिंह बब्लू, मीडिया प्रभारी ज्ञानप्रकाश शुक्ल, केडी मिश्र, महमूदआलम, छोटेलाल सरोज, पप्पू जायसवाल, घनश्याम सरोज, झुन्ना तिवारी, पप्पू तिवारी, रामू मिश्र, नामवर सिंह, ज्ञानू तिवारी, शास्त्री सौरभ, त्रिभु तिवारी, रामू मिश्र, संतोष तिवारी आदि रहे।

करंट की चपेट मे आने से युवक की मौत

लालगंज, प्रतापगढ़। लालगंज कोतवाली क्षेत्र के दिगवस पूरे वीरबल निवासी राजबहादुर यादव पुत्र सूर्यबली ने तहरीर मे कहा है कि सोमवार की सुबह करीब साढे दस बजे उसका भाई उदयबहादुर यादव 35 गांव मे ही विमलेश तिवारी के घर पर मजदूरी मांगने गया था। इसी दौरान वहां टूट कर गिरे विद्युत तार मे उतरे करंट की चपेट मे आ गया। उसे इलाज के लिए ट्रामा सेंटर लालगंज ले आया गया। जहां चिकित्सको ने उसे मृत घोषित कर दिया। इधर उदय बहादुर के मौत की सूचना मिलते ही परिवार के लोगों मे कोहराम मच गया। मृतक की पत्नी अनीता बेटी शिवानी (13) व बेटे आशुतोष (08) का रो-रो कर बुरा हाल हो गया। कोतवाल कमलेश पाल का कहना है कि शव को पीएम के लिए भेजा गया है, मृतक के भाई ने इत्तेफाकिया तहरीर दी है। घटना को लेकर जांच के बाद उचित कार्रवाई की जाएगी।

शक के चलते भाई ने महिला का चाकू से गोदकर बेरहमी से किया था कत्ल

चैबीस घण्टे मे सांगीपुर पुलिस को ने किया खुलासा

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। सांगीपुर इलाके मे अज्ञात महिला के शव की पहचान होने के चैबीस घण्टे के भीतर पुलिस ने हत्याकांड का खुलासा कर दिया। चाल-चलन ठीक न होने की आशंका के चलते सगे भाई ने ही महिला को चाकुओं से गोदकर बेरहमी से मार डाला था। हत्या के बाद शव को बाग मे छोडकर हत्यारा भाई भाग निकला। सर्विलांस की मदद से पुलिस ने हत्यारोपी को धर दबोचा। घटना का खुलासा करने वाली पुलिस टीम को पुलिस अधीक्षक ने पन्द्रह हजार का पुरस्कार दिया है।

लालगंज सीओ कार्यालय पर सोमवार को पत्रकारों से बातचीत मे क्षेत्राधिकारी रामसूरत सोनकर ने घटना के बाबत विस्तृत जानकारी दी। सीओ के मुताबिक मृतका किरन वर्मा पत्नी विनोद वर्मा निवासी दुल्हिनपुर अमेठी छः माह से अपने बुआ के घर कन्धई इलाके के नौवावार मे रहती थी। सीओ ने बताया कि बीती चार दिसंबर को उसका भाई सचिन वर्मा पुत्र रामबहादुर निवासी गाजीपुर थाना अंतू उसको बुआ के घर से लेकर उसके ससुराल अमेठी के दुल्हिनपुर गया। वहां काफी देर बातचीत के बाद भी किरन ससुराल मे रहने को तैयार नही हुई। पुलिस के मुताबिक घर ले आते समय सांगीपुर थाना क्षेत्र के बासुपुर के उसरापट्टी मे रात दस बजे के करीब लघुशंका के बहाने सचिन ने बाइक रोक दी। बाइक रोकने के बाद उसने अपनी बहन किरन वर्मा को चाकुओं से गोद गोद कर मार डाला। घटना की जानकारी होते ही पुलिस अधीक्षक सतपाल अंतिल के निर्देशन मे सीओ रामसूरत सोनकर की देखरेख मे सांगीपुर कोतवाल जीतेन्द्र कुमार सिंह ने हमराहियों के साथ आरोपी को सिंघनी गांव के पुल के पास से धर दबोचा। पुलिस की सख्ती से पूछताछ के बाद सचिन टूट गया और उसने हत्या की बात कबूल करते हुए पूरी कहानी बताई। चैबीस घंटे के भीतर घटना का खुलासा करने वाली टीम को पुलिस अधीक्षक सतपाल अंतिल ने पन्द्रह हजार रुपए का नकद पुरस्कार प्रदान किया है।

दबंगों ने शादी समारोह में मचाया ताण्डव

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। नगर कोतवाली इलाके के सगरा गांव के एक मैरिज हाल में आयोजित शादी समारोह में लाठी-डण्डों से लैस दबंगों ने जमकर ताण्डव मचाया। कोविड गाइड लाइन के तहत डीजे साउण्ड बंद कराने पर दबंग लोग भड़क गये और मैरिज हाल के संचालक सुनील कुमार मौर्य और उनके रिश्तेदार को लोहे की रॉड से मारपीट घायल कर किया जिससे अफरा-तफरी मच गई। मामले की सूचना पुलिस को दी गई। जब तक पुलिस आती, दबंग भाग चुके थे। मामले की तहरीर पुलिस को दी गई है। पुलिस मामले की छानबीन कर रही है। दबंगों के इस ताण्डव से शादी समारोह में अफरा-तफरी मची रही।

बिस्तर पर युवक का शव मिलने से मचा हड़कम्प

पुलिस ने पत्नी को लिया हिरासत में

अखंड भारत संदेश

परियावां, प्रतापगढ़। हथिगवां थाना क्षेत्र के मौजा मस्तापुर कैमा गांव निवासी लालचन्द यादव पुत्र किशोरी लाल यादव (40) वर्षीय का बीती रात को अपने ही बिस्तर पर संदिग्ध परिस्थितियों में शव मिलने पर परिजनों में कोहराम मच गया। मौके पर ग्रामीणों की भारी भीड़ जमा हो गई।

सूचना पर पहुची हथिगवां पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पंचनामा करके पीएम के लिए भेजा। पुलिस ने पति की हत्या की आशंका को देखते हुए पत्नी पार्वती यादव को हिरासत में ले लिया जिससे हर पहलू पर पूछताछ कर रही है। परिजनों का आरोप है कि मृतक की पत्नी पार्वती का पति से अच्छे सम्बन्ध नहीं थे। मृतक के पिता किशोरी लाल ने घटना की तहरीर पुलिस को देते हुए मृतक की पत्नी पार्वती यादव पर हत्या का आरोप लगाया है। मृतक लालचन्द के चार बच्चे खुशी यादव, अभी यादव, शुभी यादव व अंश यादव है। परिजनों का रो रोकर बुरा हाल है।

करंट की चपेट में आने से छात्र की मौत

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। दातुन के लिए गांव के बाहर बाग में नीम के पेड़ पर युवक जैसे ही चढ़ा, वह करंट की चपेट में आ गया जिससे वह अचेत होकर गिर गया। परिजन इलाज के लिए उसे सीएचसी गौरा ले गये जहां पर डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। जानकारी के मुताबिक जिले के फतनपुर थाना क्षेत्र के पूरे खरग राय निवासी अमरनाथ यादव के तीन पुत्रों में दूसरे नंबर का पुत्र संदीप यादव प्रयागराज से बीएससी कर रहा था। सोमवार की सुबह वह घर के पास नीम के पेड़ पर दातून तोड़ने के लिये चढ़ा था। इसी दौरान वह करंट की चपेट में आ गया जिससे वह पेड़ से नीचे गिर गया। इलाज के लिये उसे अस्पताल ले जाया गया जहां उसे मृत घोषित कर दिया गया। घटना के बाद घर में कोहराम मच गया। परिजनों का रो रो कर बुरा हाल है।

भयहरणनाथ धाम में अमृत महोत्सव का वार्षिक अधिवेशन सम्पन्न

मां भारती के चित्र पर किया गया माल्यार्पण

मां भारती के चित्र पर माल्यार्पण करते अतिथिगण

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। पांडवकालीन ऐतिहासिक भयहरणनाथ धाम पर क्षेत्रीय ग्राम्य विकास संस्थान भयहरणनाथ के आजादी के 75 वर्ष अमृत महोत्सव पर केंद्रित वार्षिक अधिवेशन आयोजित किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ के जिला महामंत्री एवं अमृत महोत्सव आयोजन समिति के सदस्य राजेश कुमार मिश्र ने माँ भारती के चित्र पर माल्यार्पण कर किया गया। इसके उपरांत प्रयागराज से आये कवि डॉ पीयूष द्वारा अमृत महोत्सव गीत को स्वर दिया गया। विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित डॉ विनोद त्रिपाठी ने स्वाधीनता के राष्ट्रीय आन्दोलन में जनपद प्रतापगढ़ के योगदान को रेखांकित किया। गंगा समग्र के जिला संयोजक प्रभात मिश्र ने जीवन मे जल और नदियों के महत्व का उल्लेख किया। कार्यक्रम के अध्यक्ष राजेश मिश्र ने अमृत महोत्सव के उद्देश्य की चर्चा करते हुए बताया कि अपने देश का एक गौरवशाली इतिहास है जिसे हम भूल रहे हैं। संस्थान के महासचिव डॉ समाज शेखर ने 1857 के स्वतंत्रता संग्राम के जनपद के अप्रतिम योद्धा बाबू गुलाब सिंह के इतिहास से परिचित कराया। प्रयागराज से आयी कवयित्री रेनू मिश्र एवं उपासना मिश्र ने राष्ट्रवादी कविताओं का पाठ किया। भयहरणनाथ धाम संस्थान के प्रबंध समिति के राजकिशोर मिश्र, अमर बहादुर सिंह, लालजी सिंह, आलोक बैरागी सहित अनेक पदाधिकारी एवं क्षेत्रीय नागरिक उपस्थित रहे।

सपा नेता पर रिपोर्ट दर्ज

पट्टी, प्रतापगढ़। पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव के पट्टी आगमन पर और वैवाहिक कार्यक्रम में शामिल होने पर समाजवादी पार्टी में कुछ कार्यकर्ताओं में असंतोष फैल गया था। मामला आगे बढ़ा तो सोशल मीडिया पर बहस हुई। समाजवादी पार्टी प्रतापगढ़ के जिला उपाध्यक्ष जीतलाल यादव उर्फ पप्पू यादव ने एक सपा कार्यकर्ता अजय यादव को फोन पर जमकर गाली-गलौज करते हुए जान से मारने की धमकी दिया। पीड़ित ने मामले की गाली गलौज और जान से मारने की धमकी भरा आडियो सोशल मीडिया पर वायरल किया और पट्टी कोतवाली में तहरीर देकर आरोपी के खिलाफ कार्रवाई की मांग की।

खबर संक्षेप

कोरोना के दृष्टिगत पुलिस ने वसूला जुमार्ना

कौशाम्बी। जनपद मे लाकडाउन के दृष्टिगत सरकार द्वारा निर्गत निदेर्शों के अनुपालन के क्रम में पुलिस अधीक्षक के निदेर्शानुसार जनपद स्तर पर विभिन्न थानों द्वारा अनावश्यक रूप से बाहर घूमने मास्क न लगाने एवं सोशल डिस्टेसिंग का पालन करने वालों के विरुद्ध सघन चेकिंग की गई एंव चेकिंग के दौरान दो पहिया व चार पहिया वाहनों को चेक किया गया जिनमें 94 वाहनों का ई चालान किया गया व 02 वाहन का चालान कर 1000 रुपए सम्मन शुल्क वसूला गया।

वारण्टी अभियुक्त गिरफ्तार

कौशाम्बी। थाना पिपरी पुलिस बल द्वारा वारण्टी अभियुक्त रामसिंह पुत्र रामदुलार निवासी मकदूमपुर थाना पिपरी को गिरफ्तार कर विधिक कार्यवाही के पश्चात अभियुक्त को न्यायालय भेज दिया है। इसी प्रकार थाना चरवा पुलिस बल द्वारा वारण्टी अभियुक्त राम शिरोमणि पुत्र राम शंकर निवासी शेखपुर रसूलपुर थाना चरवा को गिरफ्तार कर अभियुक्त को न्यायालय भेज दिया है।

बड़े पैमाने पर उप निरीक्षकों के किये गये स्थानांतरण

अखंड भारत संदेश

कौशाम्बी। पुलिस अधीक्षक ने जनपद में कानून व्यवस्था चुस्त-दुरुस्त बनाए रखने के उद्देश्य से बड़े पैमाने पर उप निरीक्षकों का स्थानांतरण किया है स्थानांतरण के क्रम में उपनिरीक्षक चंदन सिंह से चौकी प्रभारी चंपहा का चार्ज छीनते हुए उन्हें मंझनपुर कोतवाली भेजा गया है उपनिरीक्षक सुनील कुमार सिंह को पुलिस लाइन से चंपहा चौकी इंचार्ज तैनाती का आदेश जारी किया गया है। पुलिस लाइन में रहे उपनिरीक्षक शैलेन्द्र कुमार पाण्डेय को मंझनपुर कोतवाली के नारा पुलिस चौकी इंचार्ज बनाया गया है उपनिरीक्षक दिलीप कुमार सिंह अपर पुलिस अधीक्षक के वाचक होंगे उपनिरीक्षक राकेश कुमार को करारी थाना के आवाना आलमपुर पुलिस चौकी का दायित्व सौंपा गया हैं अभी तक पुलिस लाइन में रहे उपनिरीक्षक जितेन्द्र प्रताप सिंह को सराय अकिल थाना के भगवानपुर चौकी का इंचार्ज बनाया गया है राम प्रवेश

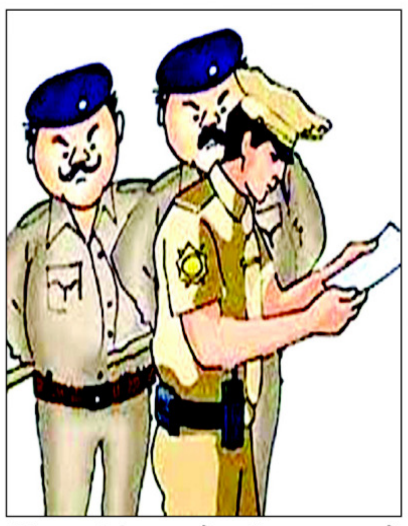

सिंह उपनिरीक्षक को पुलिस लाइन से महेवाघाट भेजा गया है और उप निरीक्षक अजीत कुमार उपाध्याय को पुलिस लाइन से मंझनपुर कोतवाली के सिविल लाइन चौकी का प्रभारी बनाया गया है। श्रीमती नीलम राघव उपनिरीक्षक को पुलिस लाइन से महिला सहायता प्रकोष्ठ की जिम्मेदारी सौंपी गई है अभिषेक गुप्ता उप निरीक्षक को मंझनपुर कोतवाली से इसी कोतवाली के कोर्राई पुलिस चौकी की जिम्मेदारी सौंपी गई है कमलेश कुमार सिंह उप निरीक्षक को डायल 112 से मंझनपुर कोतवाली और रमाकान्त मिश्रा उपनिरीक्षक को डायल 112 से थाना कोखराज हरगोविन्द सिंह उपनिरीक्षक को डायल 112 से थाना सराय अकिल भेजने के निर्देश जारी किए गए हैं विरेन्द्र नाथ तिवारी उपनिरीक्षक को डायल 112 से हटाते हुए कड़ा धाम धाम कोतवाली भेजा गया है और इसी तरह उप निरीक्षक रमाशंकर मिश्र को डायल 112 से महेवा घाट थाना में तैनाती दी गई है पुलिस अधीक्षक ने स्थानांतरण आदेश जारी करते हुए निर्देशित किया है कि संबंधित प्रभारी तत्काल उक्त उपनिरीक्षकगण को नवनियुक्त स्थान में रवाना कर अनुपालन सुनिश्चित करे।

दूध डेयरी से निकलने वाला अपशिष्ट पदार्थ बना बीमारी का घर

कौशाम्बी। तिल्हापुर स्थित दूध डेयरी से निकलने वाला दूषित पानी लोगों के लिए गंभीर बीमारी का घर बन गया है। इस दूध डेयरी से निकल रहे दूषित पानी के बदबू से आस - पास निवास कर रहे लोगों को सांस लेना तो दूर उनका जीना मुहाल हो गया है आसपास के लोग तेजी के साथ गंभीर बीमारी का शिकार हो रहे हैं। दूध डेयरी से निकलने वाले दूषित पानी का बदबूदार गंध कहीं महामारी के रूप में तब्दील ना हो जाए उससे पहले जिम्मेदार अधिकारियों को संज्ञान लेकर दूध डेयरी से निकल रहे दूषित पानी को बन्द कराए जाने और संचालक के खिलाफ कड़ा रुख अख्तियार कर कठोर कार्यवाही करना होगा। गौरतलब है कि चायल तहसील क्षेत्र के तिल्हापुर में कई वर्षों से बेखौफ तरीके से सुषमा डेयरी का संचालन हो रहा है और उक्त डेयरी में बड़े पैमाने पर दूध खरीद फरोख्त का कारोबार किया जाता है। सुषमा डेयरी में खरीदे गए दूध को मशीन में डालकर फिल्टर किया जाता है उसके पश्चात दूध से पौष्टिक तत्व निकालकर बाकी अपशिष्ट पदार्थ को नाली में डाल दिया जाता है। दूध डेयरी से नाली के माध्यम से निकलने वाला अपशिष्ट पदार्थ बाहर जाकर सड़क के किनारे गड्ढानुमा जगह पर जमा हुआ है। जिससे सड़क से गुजर रहे लोगों को भी दिक्कतों का सामना करना पड़ता है। बदबूदार गंध से परेशान होकर लोगों ने कई दफा जिम्मेदार अधिकारियों का ध्यान सुषमा डेयरी की तरफ आकृष्ट कराया लेकिन ग्रामीणों की समस्या जस की तस बनी हुई है।

कौशांबी के गांजा तस्कर 50 किलो गांजा के साथ चित्रकूट से भेजे गए जेल

अखंड भारत संदेश

एक बार फिर गांजा तस्करों से सराय अकिल थाना पुलिस की दोस्ती हुई उजागर

गांजा तस्करों से सराय अकिल पुलिस की दोस्ती के मामले को पुलिस महानिरीक्षक ने गंभीरता से लेते हुए कठोर कार्यवाही के दिए संकेत

कौशाम्बी। सराय अकिल थाना क्षेत्र के ग्राम सभा बसुहार और जयंतीपुर ग्राम सभा से गांजे का बड़ा व्यवसाय लम्बे समय से संचालित हो रहा है समय-समय पर कौशांबी पुलिस से ग्रामीणों ने गांजा व्यवसाय की सूचना भी दिया लेकिन सराय अकिल पुलिस ग्रांजा माफियाओं पर ठोस कार्यवाही नही कर सकी बल्कि रलगातार उनका बचाव कर रही थी आठ दिन पहले गांजा बेचकर डेढ़ लाख रुपए ले जा रहे एक युवक को सराय अकिल पुलिस ने पकड़ा था लेकिन आरोप है कि 40 हजार रुपए लेकर सराय अकिल पुलिस ने पकड़े गए गांजा माफिया को छोड़ दिया इसके 5 दिन बाद चित्रकूट पुलिस कौशांबी के बसुहार गांव पहुँची और गांव के मनबोध शिवबोध पुत्रगण श्री श्याम मिश्रा निवासी और अर्पित मिश्रा निवासी जयंतीपुर को गिरफ्तार कर इनके कब्जे से 50 किलो से अधिक अवैध गांजा बरामद कर चित्रकूट उठा ले गयी कौशांबी पुलिस इस खुलासे पर ताकती रह गई कौशांबी के तीनों गांजा माफियाओं को चित्रकूट पुलिस ने जेल भेज दिया है। अब सवाल उठता है कि कौशांबी जनपद में लगातार गांजा का अवैध व्यापार थाना पुलिस के संरक्षण में फल फूल रहा है गांजा माफियाओं से थाना पुलिस की सांठगांठ के बाद भी मामले से आला अधिकारियों को थाना पुलिस लगातार गुमराह कर रही है जिससे गांजे का कारोबार कौशांबी में रुकने के बजाय दिनोंदिन पांव पसार रहा है इसके पहले भी सराय अकिल थाना क्षेत्र के बसुहार गांव के गांजा कारोबारियों को इलाहाबाद सहित अन्य क्षेत्र की पुलिस बड़े पैमाने पर गांजा बरामद कर जेल भेज चुकी है लेकिन फिर भी सराय अकिल पुलिस गांजा के व्यवसाय से इंकार करती है अवैध तरीके से कौशांबी में फल फूल रहे गांजे के बड़े कारोबार पर पुलिस महानिरीक्षक प्रयागराज बात की गई तो उन्होंने कहा कि मामले की जांच कराई जाएगी और गांजा कारोबारियों के ऊपर गैंगस्टर एक्ट की कार्यवाही के साथ-साथ थाना पुलिस की संलिप्तता पर उन्हें कठोर दंड दिया जाएगा।

योगी सरकार की उपलब्धियां गिनाते मंच पर उपस्थित भोज में शामिल राज्य मंत्री

भोज में पहुंचे राज्यमंत्री ने गिनाई योगी सरकार की योजनाएं

कौशाम्बी। करारी क्षेत्र के मोअज्जम पुर गांव पहुंचे उत्तर प्रदेश सरकार के राज्यमंत्री औद्योगिक विकास विभाग धर्मवीर प्रजापति ने कहा कि उत्तर प्रदेश की योगी सरकार ने आम जनता के हित में तमाम योजनाएं संचालित की हैं उन्होंने सरकार की योजनाओं का बखान करते हुए कहा कि निशुल्क श्रम कार्ड बनवाएं गए बच्चे के जन्म लेते ही माता को 6000 रुपये दिए गए गरीबो को आवास दिया जाता है गंभीर बीमारी की अवस्था में हमारी सरकार ने आयुष्मान कार्ड बनवाया जिससे 5 लाख का निशुल्क इलाज दिया जाता है शादी समारोह में गरीब कन्याओं को प्रधानमंत्री की ओर से 55 हजार का लाभ दिया जाता है उन्होंने कहा कि पूरा यूपी भय मुक्त है पूर्वांचल एक्सप्रेस की एक सौगात प्रधानमंत्री देने जा रहे हैं यूपी में नौजवानों को रोजगार दिया गया साथ में साम्राज्य भोज किया जिसमें सभी के साथ बैठ कर वह खाना खाए उनके साथ विधायक लाल बहादुर अंगद सिंह कुशवाहा गजराज प्रजापति सुरेश जयसवाल अखिलेश कुशवाहा खुदा लाल दिवाकर आदि लोग मौजूद रहे।

छात्रों की प्रतिभाओं को तराशना खेल शिक्षक का है कार्य : सुधाकर सिंह

खेल शिक्षक ने कहा कि अपने नैतिक कर्तव्यों को भूलने की वजह से नहीं दे पाते अच्छे खिलाड़ी

अखंड भारत संदेश

भरवारी कौशाम्बी। भवंस मेहता विद्याश्रम भरवारी में खेल आयोजन के दौरान खेल अध्यापक सुधाकर सिंह ने कहा कि अपने नैतिक दायित्व को भूलने की वजह से खेल शिक्षक अच्छे खिलाड़ी नहीं तैयार कर पाते हैं उन्होंने कहा कि खेल शिक्षकों को उनके दायित्व से हट कर तमाम जिम्मेदारियां दे दी जाती हैं यदि खेल शिक्षकों को केवल खेल की जिम्मेदारी दी जाए तो वह अच्छे छात्र तैयार कर सकते हैं। खेल शिक्षक सुधाकर सिंह ने कहा कि शारीरिक शिक्षक का कार्य बच्चों का शारीरिक एवं मानसिक रूप से विकास करना ही उनका महत्वपूर्ण कार्य है लेकिन स्कूल एवं कालेजों में इन शिक्षकों को इस कार्य के अलावा और

बच्चो को खेल के दौरान टिप्स देते खेल शिक्षक

कई जिम्मेदारियां दे दी जाती हैं जिनको यह शिक्षक बखूबी भलीभांति निभाते है इनके कार्य करने की क्षमता अथाह होती है यह स्कूल कालेजों की रीड़ की हड्डी होते है। स्कूल -कालेजों के अनुशासन में यह लोग महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते है क्यौंकि यह अनुशासित जीवन ही जीते है। उन्होंने कहा कि मेरा अपना यह मानना है कि शारीरिक शिक्षक इन सब बातों का तो ध्यान रखते हैं लेकिन अपने नैतिक कर्तव्य को वह भूलने लगे हैं जो उनका कार्य क्षेत्र है अगर वह उससे दूर होते हैं तो उनके सम्मान में कमी आना स्वाभाविक है।और यही कारण है कि हम लोग अच्छे खिलाड़ी नहीं दे पाते हैं। उन्होंने कहा कि छात्रों बच्चों में प्रतिभायें हैं उनको तरासना शारीरिक-शिक्षक का कार्य है अपने कार्य से कुछ शिक्षक अलग होते जा रहे हैं जो कि इस पद की गरिमा को दागदर बना रहे हैं शिक्षक अपनी प्रतिभा को शिष्य में उतार कर जब तरासता है तब वह अपने को गौरवान्वित महसूस करता है और वह उसमें लीन हो जाता है।यही उनके जीवन की सफलता की कुंजी है उन्होंने कहा कि अपने कर्तव्यों के दौरान जैसा बोयेंगे वैसा पाएंगे।

न्यूज झरोखा

डीएम ने मतदान जागरूकता वैन को हरी झण्डी दिखाकर किया रवाना

कौशाम्बी। जिलाधिकारी सुजीत कुमार ने सोमवार को कलेक्ट्रेट परिसर में ईवीएम और वीवीपैट हो साथ-साथ मतदान में संदेह की न होगी कोई बात-बात लोकतन्त्र के भागीदार बनिए भारत की सुगम चुनाव प्रक्रिया में भाग लीजिए, एलईडी वैन को हरी झण्डी दिखाकर रवाना किया इस वैन का मुख्य उद्देश्य गांव-गांव में जाकर लोगों को ईवीएम और वीवीपैट मशीन से मतदान करने के लिए जागरूक करना है। इस अवसर पर अपर जिलाधिकारी जयचन्द्र पाण्डेय उप जिलाधिकारी मंझनपुर प्रखर उत्तम एवं अतिरिक्त उपजिलाधिकारी सहित अन्य अधिकारीगण उपस्थित रहे।

संदिग्ध परिस्थितियों में फांसी पर झूली बुजुर्ग महिला हुई मौत

अझुवा कौशाम्बी। कड़ा धाम कोतवाली क्षेत्र के दारानगर में एक बुजुर्ग महिला ने फांसी लगाकर अपनी जीवन लीला समाप्त कर दी है मामले की सूचना मिलने के बाद स्थानीय पुलिस मौके पर पहुंची है और महिला की लाश को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। जानकारी के अनुसार कड़ा धाम कोतवाली क्षेत्र के दारा नगर निवासी सोनू मोदन वाल परिजनों संग दारानगर में निवास करते हैं बीती शाम परिजनों समेत सोनू प्रयागराज एक शादी समारोह में शामिल होने चले गए थे घर पर उनकी बुजुर्ग माँ थी घर सुना था अज्ञात कारणों से महिला ने फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली है पड़ोसियों की सूचना पर कड़ा धाम पुलिस पहुंचकर परिजनों को सूचना देते हुए कार्रवाई में जुट गई है।

फरार बालिका को पुलिस ने किया बरामद

कौशांबी। मंझनपुर कोतवाली क्षेत्र के बहादुरपुर गांव से रविवार को एक बालिका दो युवकों के साथ फरार हो गयी थी परिजनों ने मामले की सूचना कोतवाली पुलिस को दी थी मंझनपुर कोतवाल ने मुखबिरों की सटीक जानकारी पर बालिका को बरामद करते हुए उसके साथ दोनों युवकों को अपने कब्जे में ले लिया है।

गौशाला के पास मिला नवजात शिशु

कौशांबी। मंझनपुर कोतवाली क्षेत्र के शमशाबाद पुलिस चौकी अंतर्गत गौशाला के पास एक नवजात शिशु मिला है आसपास जानवरों को खेतों में चरा रहे युवकों ने नवजात शिशु को देखा तो मामले की सूचना उन्होंने पुलिस को दिया है नवजात शिशु को फेंक कर कौन बालिका फरार हुई है यह बात लोगों के बीच चर्चा का विषय है।

गांजा के साथ अभियुक्त गिरफ्तार

कौशाम्बी। थाना सराय अकिल पुलिस बल द्वारा अभियुक्त मोहम्मद इमरान पुत्र नन्हउ निवासी बुद्धपुरी थाना सराय अकिल को गिरफ्तार कर उसके कब्जे से 01 किलो 800 ग्राम नाजायाज गांजा बरामद होने पर अभियुक्त का चालान न्यायालय कर दिया है।

अवैध तमंचा के साथ अभियक्त गिरफ्तार

कौशाम्बी। थाना कोखराज पुलिस बल द्वारा अभियुक्त सद्दाम पुत्र अब्दुल सलीम चिमरूपुर थाना कोखराज जनपद को गिरफ्तार कर कब्जे से एक अदद तमचा 12 बोर व 02 अदद कारतूस 12 बोर बरामद होने पर अभियुक्त का चालान किया गया।

भवंस मेहता के निदेशक संदीप सक्सेना को ट्रस्ट ने इलाहाबाद का भी सौंपा दायित्व

अखंड भारत संदेश

निदेशक संदीप सक्सेना के कार्यों से प्रसन्न होकर मेहता ट्रस्ट के हाईकमान ने भेजा बधाई संदेश

भरवारी कौशाम्बी। भवंस मेहता महाविद्यालय भरवारी के निदेशक संदीप सक्सेना के बेहतर कार्यों से प्रसन्न होकर मेहता ट्रस्ट के हाईकमान ने उन्हें पत्र भेजकर बधाई दी है साथ ही साथ मेहता ट्रस्ट के हाईकमान ने निदेशक संदीप सक्सेना को ट्रस्ट की कौशांबी की संपत्तियों के साथ-साथ इलाहाबाद की संपत्तियों की देखरेख करने की जिम्मेदारी सौंप दी है मेहता संस्थान के हाईकमान ने कहा कि निदेशक संदीप सक्सेना आपकी जबरदस्त सक्रियता के चलते आपको कौशाम्बी व प्रयागराज की सभी सम्पत्तियो की देखभाल करते हुए संस्थान को अग्रसारित करने पर बधाई दिया जाता है मेहता संस्थान के हाई कमान ने नव नियुक्त निदेशक को 2 दिसम्बर 21 को पत्र भेजकर अपनी तरफ से प्रसन्नता ब्यक्त करते हुए दो जनपदों की संपत्तियों की भी देखभाल व उसको और आगे बढ़ाने का निर्देश दिया है। मेहता ट्रस्ट के हाई कमान ने अपने पत्र में यह भी कहा है कि आपकी मेहनत से दिन प्रतिदिन संस्थान और उचाईयो की ओर जा रहा है जिससे हम सभी लोग आपकी कार्य शैली से बहुत ही खुश है एक पत्र के माध्यम से प्रसन्नता ब्यक्त की है। इनकी कार्यशैली से भरवारी में भी भवंस मेहता विद्याश्रम व भवन्स मेहता महा विद्यालय के भी सभी कर्मचारी अपनेआपको गौरवान्वित महशूस कर रहे हैं।

8 दिन बीते चोरी की घटना का नहीं लगा सुराग

कौशांबी। मंझनपुर कोतवाली क्षेत्र के कस्बे के अंदर खोजवा पुर गांव निवासी शिक्षक त्रिभुवन सिंह परिवार सहित फौजी श्यामसुंदर उर्फ पप्पू के घर में किराए पर रहते हैं 28 नवंबर को घर में ताला बंद कर परिवार सहित निमंत्रण खाने वह चले गए जब 29 नवंबर को लौटे तो घर का ताला टूटा था सामान बिखरा था मौके से साढ़े तीन तोला सोने का जेवर चांदी का जेवर और लगभग डेढ़ लाख रुपए नगद गायब थे मामले की सूचना उन्होंने पुलिस को दिया है। त्रिभुवन सिंह ने बताया कि जिस मकान में वह ऊपरी मंजिल में किराए में रहते हैं उसी मकान के नीचे के मंजिल के कमरों को पिंटू केसरवानी ने किराए पर ले रखा है और उनके ऊपर जाने के गलियारे में पिंटू सामान रख देते हैं उनके निमंत्रण जाने के बाद पिंटू केसरवानी ने गलियारा का ताला तोड़ दिया था और जब पिंटू केसरवानी ने दूसरा ताला लगाया तो खुला रह गया। आधी रात को उनके घर के ऊपर के कमरे का ताला तोड़कर घुसे चोरों ने अलमारी संदूक तोड़कर तीन लाख रुपए से अधिक कीमत के सोने चांदी के जेवर नगदी टीवी आदि समान उठा ले गए हैं। सूचना पुलिस को दी गई है पुलिस सुराग रस्सी में लगी है सिलेंडर एक युवक के घर से पुलिस बरामद कर चुकी है लेकिन बताया जाता है कि घर के नीचे नाले के पास सिलेंडर पड़ा हुआ था जिसे युवक उठा ले गया था।

सीएचसी कड़ा में राष्ट्रीय वेक्टर जनित रोग नियंत्रण कार्यक्रम हुआ संपन्न

अखंड भारत संदेश

टेढ़ी मोड़ कौशांबी। सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र कड़ा में सोमवार को सीएचसी अधीक्षक डॉ नीरज सिंह की अध्यक्षता में राष्ट्रीय वेक्टर जनित रोग नियंत्रण कार्यक्रम के तहत स्वास्थ्य कार्यकताओं के संवेदीकरण एवं दक्षता स्तर में सुधार हेतु प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया।जिसमें मलेरिया, डेंगू, चिकनगुनिया संबंधित बीमारियों से किसी पीड़ित के सामने आने पर प्रथम चरण में जिम्मेदारी का निर्वहन करना है उसके बारे में बताया गया। रैपिड एक्जामिन टेस्ट की भी जानकारी दी गई। इस दौरान बताया गया कि डेंगू व चिकनगुनिया संक्रमित मादा एडिस मच्छर के काटने से होता है। डेंगू तथा चिकनगुनिया होने पर अचानक तेज बुखार आता है। तेज सिर दर्द होने लगता है। इससे बचने के लिए साफ-सफाई जरूरी है ताकि

वेक्टर जनित रोग नियंत्रण प्रशिक्षण कार्यक्रम में शामिल चिकित्सक

मच्छर पैदा न हो सके। वहीं मलेरिया भी मच्छर के काटने से होता है। इसमें भी समय समय पर बुखार आता है। इससे बचने के लिए भी साफ सफाई जरूरी है। वहीं जल-जमाव से मच्छर पैदा होते है इसलिए पानी को बहुत दिनों तक जमाव नहीं होने देना चाहिए। बुखार होने पर चिकित्सक से सलाह लेकर ही दवा खाना चाहिए।इस मौके पर सहायक मलेरिया अधिकारी धीरेन्द्र सिंह, एलटी राधिका सिंह, एमआई रवि कुमार विश्वकर्मा, बीपीएम प्रदीप सिंह, बीसीपीएम रोहिणी त्रिपाठी, बीएमसी यूनिसेफ हिना खान सहित आशा संगिनी, एएनएम मौजूद रहीं।

बाधित डीएपी आपूर्ति से किसानों को हुआ है आर्थिक नुकसान : वेद प्रकाश सत्यार्थी

कांग्रेसियों ने खाद वितरण स्थल पर किया विरोध प्रदर्शन, डीएपी ना मिलना सरकार की नाकामी

अखंड भारत संदेश

कौशाम्बी। जिले में खाद आपूर्ति पूरी तरह से ठप है किसानों को डीएपी नहीं मिल पा रही है। जिसके चलते आलू और गेहूं जो कि कौशांबी जिले की सबसे प्रमुख फसलें हैं उनकी बुवाई बाधित हो रही है देर से हो रही इस बुवाई के चलते किसानों को भारी आर्थिक नुकसान हो रहा है। यह नुकसान पूरी तरह से भारतीय जनता पार्टी सरकार की नाकामी को दशार्ता है। उक्त बातें पार्टी नेता वेद प्रकाश पाण्डेय सत्यार्थी ने सोमवार को जिला मुख्यालय स्थित सहकारी समिति के खाद वितरण केंद्र में प्रदर्शन करते हुए कही। इस मौके पर बोलते हुए उन्होंने कहा कि मौजूदा सरकार किसानों को तोड़ने के

उर्वरक की समस्या से त्रस्त किसानों के साथ धरना देते कांग्रेसी नेता

लिए साजिश से कर रही है और समय से डीएपी का ना मिल पाना सरकार किसी साजिश का एक नमूना है। इस मौके पर बोलते हुए अल्पसंख्यक कांग्रेस के जिलाध्यक्ष तमजीद अहमद ने कहाकी सरकार ने डीएपी यूरिया और बिजली के बिल में बेतहाशा वृद्धि की है जो सरकार के किसानों के प्रति नफरत भरे रवैए और उनके उदासीनता को दशार्ता है। लेकिन कांग्रेस पार्टी किसानों के लिए संघर्ष कर उनका हक दिलाने का काम करेगी। प्रदर्शन के दौरान बोलते हुए एनएसयूआई के जिलाध्यक्ष अरुण अमित द्विवेदी आजाद ने जिला प्रशासन को चेतावनी देते हुए कहा कि वह जल्द से जल्द किसानों को डीएपी आपूर्ति कराए। यदि आपूर्ति जल्द ने शुरू किया गया तो कांग्रेस सड़क पर उतर कर प्रशासन के खिलाफ प्रदर्शन कर ईट से ईट बजाने का काम करेगी जिसकी पूरी जिम्मेदारी जिला प्रशासन की होगी। इस मौके पर प्रमुख रूप से शाहिद सिद्दीकी, वेद प्रकाश पाण्डेय, तमजीद अहमद, अमित द्विवेदी आजाद, भारत गौतम, विनोद चौधरी, मो. सफीक, गुलाम , राम प्रकाश , सेबू , सैफ मंसूरी, जयचंद तिवारी, मो खालिक, इजहार अब्बास, अलफैज फारूकी, सहित सैकड़ों की संख्या में कांग्रेसी जन मौजूद रहे।

सड़क हादसे में घायल युवक की इलाज के दौरान हुई मौत

करारी कौशांबी। करारी थाना क्षेत्र के सैदनपुर गांव के गेट के पास 27 नवंबर को विकास कुमार उम्र 24 वर्ष पुत्र राजेंद्र प्रसाद निवासी हिसामपुर गोपसहसा थाना कौशाम्बी सामने से आ रहे बाइक सवार रमाशंकर चतुर्वेदी पुत्र आद्या प्रसाद चतुर्वेदी निवासी गंगा विहार कॉलोनी टीपी नगर प्रयागराज से टकरा गए थे इस हादसे में रमाशंकर चतुर्वेदी का बेटा अभिषेक कुमार उम्र 32 वर्ष की घटनास्थल पर मौत हो गई थी और रमाशंकर चतुर्वेदी गंभीर घायल थे इस हादसे में घायल विकास कुमार पुत्र राजेंद्र प्रसाद की इलाज के दौरान आज निजी नर्सिंग होम में मौत हो गई है मौत की जानकारी मिलते ही परिवार में कोहराम मच गया है।

भूमि प्रबंधन समिति के पद से ग्राम प्रधान को हटाए जाने की मांग

अखंड भारत संदेश

गुवारा गांव में अवैध तरीके से सरकारी जमीन पर ग्राम प्रधान कर रहे कब्जा

अधिकारियों से शिकायत के बाद भी ग्राम प्रधान के सरकारी भूमि पर अवैध कब्जे पर नहीं लग सकी रोक

कौशांबी। मंझनपुर तहसील क्षेत्र के गुवारा ग्राम सभा में सरकारी भूमि पर अवैध तरीके से ग्राम प्रधान कब्जा कर रहे थे जिसकी शिकायत ग्रामीणों ने अधिकारियों से की है लेकिन कई दिन बीत जाने के बाद सरकारी भूमि पर ग्राम प्रधान द्वारा किए जाने वाले कब्जे पर रोक नहीं लग सकी है अवैध कब्जे के मामले में राजस्व लेखपाल की भूमिका सवालों के घेरे में है ग्रामीणों ने आला अधिकारियों का ध्यान आकृष्ट कराते हुए सरकारी भूमि पर अवैध कब्जे को रोके जाने निमार्णाधीन दीवार को गिराए जाने और कब्जा धारक के साथ-साथ लेखपाल पर कठोर कार्यवाही की मांग की है ग्रामीणों ने भूमि प्रबंधन समिति के अध्यक्ष पद से ग्राम प्रधान को हटाए जाने की मांग की है

बताते चलें कि ग्राम प्रधान गुवारा पर सरकारी जमीन का अवैध तरीके से कब्जा किए जाने का आरोप ग्रामीणों ने लगाते हुए मामले की शिकायत एसडीएम मंझनपुर से की है एसडीएम ने लेखपाल को भेजकर अवैध निर्माण पर रोक लगा दिया था लेकिन उसके बाद भी सरकारी जमीन पर अवैध कब्जा कर निर्माण नहीं रुक सका है ग्रामीणों ने बताया कि ग्राम प्रधान इंद्राज सरोज की माता के नाम 12 धुर जमीन का पट्टा हुआ था लेकिन वह डेढ़ विश्वा कीमती जमीन पर कब्जा कर रहा है।

ग्रामीणों का कहना है कि नियमानुसार पट्टा मिलने के बाद जमीन पर निर्माण करा लिया जाना चाहिए लेकिन समय सीमा बीत चुकी है और पट्टा स्वतः निरस्त हो गया है फिर भी ग्रामसभा की सरकारी भूमि पर पट्टे से अधिक जमीन का प्रधान कब्जा कर निर्माण कर रहा है शिकायत के बाद भी अवैध कब्जे को ना रोके जाने के मामले में लेखपाल की भूमिका सवालों के घेरे में है ग्रामीणों ने अधिकारियों का ध्यान आकृष्ट कराते हुए अवैध कब्जा रोके जाने निमार्णाधीन दीवाल को गिराए जाने लेखपालों पर कार्यवाही के साथ-साथ भूमि प्रबंधन समिति के अध्यक्ष पद से ग्राम प्रधान को हटाने की मांग की है।

सम्पादकीय

हम क्या हो गए हैं

पिछले दिनों सोशल मीडिया पर एक व्यथित करने वाला वीडियो सामने आया। इसमें एक मुस्लिम बुजुर्ग को नमाज पढ़ने से रोकने की कोशिश कुछ धर्मांध हिंदू कर रहे हैं। आस-पास की भीड़ जय श्रीराम के नारे लगा रही है। कुछ पुलिस वाले उन उत्पाती लोगों को रोकने की कोशिश कर रहे हैं और इस हंगामे के बीच वो बुजुर्ग जमीन पर नमाज पढ़ने बैठ रहे हैं। यह वीडियो दिल्ली से सटे गुरुग्राम का है, जहां पिछले कुछ वक्त से खुले में नमाज का मुद्दा जबरदस्ती विवाद का विषय बना दिया गया है। इसे लैंड जिहाद जैसे नाम देकर समाज में सांप्रदायिक तनाव बढ़ाने की साजिशें की जा रही हैं। गौरतलब है कि 2018 से ही कुछ इलाकों को चिन्हित कर खुले में नमाज की अनुमति प्रशासन ने दी हुई है। पहले 37 जगहें चिन्हित की गईं थीं, फिर इनकी संख्या घटाकर 29 कर दी गई। हर जुमे को इन जगहों पर मुस्लिम समाज के लोग नमाज के लिए पहुंचते हैं। लेकिन पिछले कुछ समय से इसमें अनावश्यक तरीके से बाधा पहुंचाने की कोशिश हो रही है। उपरोक्त वीडियो ऐसी ही एक कोशिश का प्रमाण है। एक महीने पहले भी भाजपा नेता कपिल मिश्रा ने कुछ दक्षिणपंथी संगठनों के लोगों के साथ गुड़गांव के सेक्टर 12 ए के उस स्थान पर गोवर्धन पूजा में शिरकत की थी, जहां मुसलमान हर हफ्ते नमाज अदा करते हैं। इधर खुले में नमाज रोकने के लिए नियोजित तरीकों की श्रृंखला में ट्रक खड़ा करना प्रदर्शनकारियों का नवीनतम हथियार है। इससे पहले पिछले दिनों कई गांवों के लोगों ने सेक्टर 37 थाने के पास दी गई जगह पर पहुंच कर हवन किया था और दावा किया था यह मुंबई आतंकी हमले के शहीदों को श्रद्धांजलि देने के लिए किया जा रहा है। एक नमाज स्थल पर कुछ लोगों को क्रिकेट खेलते देखा गया था और एक अन्य स्थान पर पूजा की गई और बाद में वहां गोबर फेंक दिया गया। ये सारे हथकंडे महज इसलिए कि मुस्लिमों को खुले में नमाज पढ़ने से रोका जाए, अल्पसंख्यकों को ये अहसास दिलाया जाए कि वे दोयम दर्जे के नागरिक हैं। हालांकि संविधान में इस देश के सभी नागरिकों के लिए बराबरी का अधिकार दिया गया है, फिर चाहे वो किसी भी धर्म के अनुयायी हों और हर नागरिक को अपनी पूजा पद्धति के पालन की इजाजत है।

गुरुग्राम की घटना बताती है कि कैसे संविधान की मयार्दा का हनन सायास किया जा रहा है और इसमें वो लोग भी शामिल हैं जो खुद को जनप्रतिनिधि मानते हैं। हिंदू-मुस्लिम के बीच इस तरह की सांप्रदायिकता के बीज बोने का सिलसिला केवल गुरुग्राम में ही नहीं है, देश के बाकी हिस्सों में यही कोशिश चल रही है। अभी कुछ समय पहले गृहमंत्री अमित शाह ने उत्तराखंड में हाईवे पर नमाज का मुद्दा उठाया था। उप्र में केशव प्रसाद मौर्य ने जालीदार टोपी और लुंगी वालों को हटाने वाला बयान दिया और भाजपा के लिए वाहवाही लूटना चाही। इससे पता चलता है कि सांप्रदायिक वैमनस्य बढ़ाना इनका प्रमुख राजनैतिक एजेंडा है और सबका साथ जैसी बातें खोखली हैं। अगर प्रधानमंत्री या उत्तरप्रदेश और हरियाणा में मुख्यमंत्री इन घटनाओं और बयानों पर कड़ी आपत्ति जतलाते और ये कहते कि इस तरह की घटनाओं की पुनरावृत्ति नहीं होना चाहिए, तब तो ये माना जा सकता था कि प्रधानमंत्री वाकई सबको साथ लेकर चलने में यकीन करते हैं। लेकिन उनका मौन इन घटनाओं का समर्थन करते ही दिखता है। देश की सरकार को और जनता को यह नहीं भूलना चाहिए कि पाकिस्तान का निर्माण धर्म के आधार पर हुआ था, जबकि हिंदुस्तान ने तो अपनी पुरानी तहजीब और संस्कारों को ही अपनाने का फैसला किया था। इसलिए यहां हरेक धर्मावलंबी के लिए बराबरी का स्थान सुनिश्चित किया गया। अगर हम भी धर्म आधारित देश बनाने की कोशिश करेंगे तो हमारी खास पहचान गुम हो जाएगी। पाकिस्तान में धार्मिक कट्टरता के कारण लोकतंत्र का कैसा नुकसान हुआ, किस तरह कट्टरपंथियों के आगे सरकारें समर्पण करने मजबूर हुईं, यह भी हमारे सामने ही है। हम बात-बात पर खुद को पाकिस्तान से बेहतर बताते भी हैं, लेकिन यह गर्व हम कब तक कर पाएंगे, इस बारे में भी सोचना होगा। वैसे पाकिस्तान में भी धार्मिक कट्टरता के खिलाफ आवाज उठती रही है। हाल ही में एक श्रीलंका के नागरिक की ईशनिंदा पर भीड़ ने हत्या कर दी। इस दुखद घटना पर पाकिस्तान के प्रधानमंत्री इमरान खान चुप नहीं रहे, बल्कि उन्होंने इसे पाकिस्तान के लिए 'बेहद शर्मनाक दिन' बताया, और श्रीलंकाई राष्ट्रपति गोटाभाया राजपक्षे से बात कर सख्त कार्रवाई का आश्वासन दिया। इस मामले में अब तक कई गिरफ्तारियां भी हो चुकी हैं। पाकिस्तान के राष्ट्रपति, मानवाधिकार मंत्री, कुछेक कलाकारों ने भी इस घटना की निंदा की। वहीं पाकिस्तान की पत्रकार यूसरा असकरी ने इस घटना पर अफसोस जताते हुए ट्वीट में सवाल पूछा है, 'हम क्या हो गए हैं?' इस वक्त भारत में भी नागरिक समाज को यही सवाल खुद से करने की जरूरत है कि हम क्या हो गए हैं।

चिकित्सा उपयोग में बाधक न हो नारकोटिक्स कानून

भारत को वर्षों के परिश्रम से मिले लाभों तथा केरल पैटर्न पर आगे प्रयास करने चाहिए। इसके साथ ही संतुलन के सिद्धांत का सम्मान करने के लिए काम करते हुए नशीली दवाओं के दुरुपयोग को नियंत्रित करने की सरकार की जिम्मेदारी और कष्टदायी दर्द की अनावश्यक पीड़ा को कम करने की उसकी जिम्मेदारी के बीच एक सहानुभूतिपूर्ण संतुलन बनाना चाहिए। तीनों फार्म बिलों की वापसी सुर्खियों में है। अब इस बात के संकेत हैं कि संसद के शीतकालीन सत्र में नारकोटिक ड्रग्स एंड साइकोट्रॉपिक पदार्थ (एनडीपीएस) अधिनियम में कथित तौर पर संशोधन पेश किए जा सकते हैं। इससे चिकित्सा पेशे में कार्यरत और वेदना प्रशामक देखभाल विशेषज्ञों के बीच कुछ चिंता है। इस बात की आशंका है कि नशीले पदार्थों को विनियमित करने की कोशिश में संतुलन का सिद्धांत (प्रिंसिपल ऑफ बैलेंस) तीव्र दर्द से पीड़ित रोगियों के हितों के खिलाफ हो सकता है। संतुलन का सिद्धांत नारकोटिक ड्रग्स, 1961 पर संयुक्त राष्ट्र एकल कन्वेंशन में निर्धारित दोहरी जिम्मेदारी को स्वीकार करता है। यह किसी भी सरकार को सौंपी दोहरी जिम्मेदारी- पहली, दवा के अनुचित गैर चिकित्सा उपयोग को रोकने और दूसरी, उसी समय में दर्द के उपचार के लिए दवा की उपलब्धता सुनिश्चित करने की है। मतलब यह है कि उचित नियंत्रण के साथ दवा का सुरक्षित रूप से इस्तेमाल किया जाए और यह कैंसर और अन्य बीमारियों से पीड़ित रोगियों के लिए दर्द दूर करने में मददगार साबित हो।

मार्फिन और उस वर्ग (ओपिओइड) से संबंधित अफीम और दवाओं को छोड़कर कोई अन्य दवा नहीं है जो कई प्रकार के दर्द को दूर कर सकती है। यह विशेष रूप से कैंसर के दर्द में लगभग 75 प्रतिशत तक राहत देता है। दशकों के अनुभव से यह भी स्पष्ट है कि दवा पर तर्कहीन नियंत्रण केवल दर्द से राहत के उपयोग पर प्रभावी होता है और गैर-चिकित्सा उपयोग पर इसका बहुत कम प्रभाव पड़ता है। दर्द से राहत की जरूरत दुनिया भर के स्वास्थ्य पेशेवरों ने महसूस की है और इसे स्पष्ट भी किया गया है लेकिन संयुक्तराज्य अमेरिका ने इस सदी के अंत में इसे मान्यता दी है। उद्योग संचालित अभियान की गलत सलाह पर उत्तरी अमेरिका में पर्याप्त नियंत्रण उपायों के बिना दर्द निवारक दवाओं (ओपिओइड) के बढ़ते दुरुपयोग के परिणामस्वरूप यह निर्णय लिया गया। यह खबर बन गई। तथ्य यह है कि इससे पहले एक चौथाई सदी तक पर्याप्त नियंत्रण और विलेखन के साथ पश्चिमी यूरोपीय देश (ओपिओइड) को गलत हाथों तक पहुंचने से रोकने के साथ इसका प्रभावी ढंग से और सुरक्षित रूप से उपयोग कर रहे थे। इसके गलत उपयोग की ज्यादा रिपोर्ट्स नहीं आई या इस पर जोर नहीं दिया गया था। संयुक्त राज्य अमेरिका में नशे की बढ़ती लत से त्रस्त होकर करीब 50 वर्ष पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति रिचर्ड निक्सन ने ड्रग्स के खिलाफ युद्ध की घोषणा की। दुनिया भर में नशाखोरी के खिलाफ चल रही मुहिम में शामिल होकर भारत ने 1985 के नारकोटिक ड्रग्स एंड साइकोट्रॉपिक

एम.आर.राजगोपाल

पदार्थ (एनडीपीएस) अधिनियम नाम से एक कठोर कानून बनाया जिसने दर्द से राहत के लिए मॉर्फिन की उपलब्धता को प्रभावी ढंग से पंगु बना दिया, लेकिन इस कानून का अनुचित और गैर-चिकित्सा उपयोग पर बहुत कम प्रभाव पड़ा। इस कानून में एक छोटी सी लिपिकीय त्रुटि के लिए भी अनिवार्य और कठोर दंड की व्यवस्था थी। यदि किसी फार्मासिस्ट या डॉक्टर के पास 25 ग्राम से अधिक बेहिसाब मॉर्फिन पाया गया तो न्यायाधीश के पास उसके लिए न्यूनतम दस वर्षों के कठोर कारावास देने के अलावा कोई विकल्प नहीं होगा। व्यक्ति को तब तक निर्दोष नहीं समझा जाएगा जब तक वह दोषी साबित नहीं होता। इसके साथ ही खुद को निर्दोष साबित करने की जिम्मेदारी भी आरोपी पर थोपी गई। इस कठोर कानून के कारण अस्पतालों और फार्मेसियों ने दवा का स्टॉक करना बंद कर दिया। राज्य औषधि नियंत्रकों ने आवश्यक लाइसेंस जारी करना बंद कर दिया। मेडिकल मॉर्फिन की राष्ट्रीय खपत 1985 में 600 किलोग्राम से अधिक थी जो 1998 में घटकर सिर्फ 17 किलोग्राम हो गई। जाहिर है कि इस उलटे अनुपात के कारण देश में दर्द का बोझ और बढ़ गया। हमारे लिए इसमें सबक होना चाहिए था। केरल ने 1998 में तर्कसंगत नियम लाए जो मुख्यतः सरकार द्वारा समर्थित गैर-सरकारी कार्रवाई से प्रेरित थे। इसकी वजह से केरल में मॉर्फिन और अन्य ओपिओइड देश के बाकी हिस्सों की तुलना में 15 गुना अधिक सुलभ हो गए। राज्य में 170 से अधिक संस्थान सुरक्षित रूप से दवाओं का संग्रहण और दर्द से राहत के लिए इन्हें वितरित करते हैं। तथ्य यह है कि केरल में यह सफलतापूर्वक किया गया। एक और कम आय वाले देश युगांडा में दशकों से यह किया जा रहा है लेकिन इसने विश्व का थोड़ा ध्यान आकर्षित किया है। इसके विपरीत विश्व स्तर पर तथा अब भारत के कुछ हिस्सों में भी दवाओं के दुरुपयोग और दवा महामारी की बात सुनने में आ रही है।

नागरिक समाज व चिकित्सा समुदाय के समर्थकों के ठोस प्रयासों को अंततः सफलता मिली और 2014 में भारतीय संसद ने एक संशोधन अधिनियम पारित किया जिसमें पहली बार दर्द से राहत प्रदान करने की सरकार की जिम्मेदारी को स्वीकार किया गया। संशोधित कानून का कार्यान्वयन अभी अधूरा पड़ा है। फिर भी, यह सही दिशा में एक बड़ा कदम था। दुर्भाग्यवश, हाल के दिनों में गलत आधारों पर डॉक्टरों को जेल में बंद किया जा रहा है और उन पर मुकदमा चलाया जा रहा है। इस कारण वे सरकार द्वारा नियंत्रित दवाएं लिखने या अस्पतालों में उनका उपयोग करने से परहेज करते हैं। कानून को लागू करने वाली एजेंसियों के लिए यह आवश्यक है कि वे वैध उपयोग और अवैध उपयोग के बीच अंतर करें। ओपिओइड के डायवर्जन और दुरुपयोग के मामलों में अभियोजन की आवश्यकता है लेकिन यदि गलत आधार पर गिरफ्तारियां होती हैं तो अस्पताल और डॉक्टर स्वाभाविक रूप से दवाओं का उपयोग करना बंद कर देंगे। दवा उद्योग इन दवाओं के निर्माण व उन्हें वितरित करने के बारे में हतोत्साहित होगा। इसका नतीजा यह होगा कि हम अधिकाधिक लोगों की गर्दनों पर फांसी के फंदों के निशान देखेंगे। इनमें से कुछ लोग मौत को गले लगाने में सफल होंगे और कुछ के प्रयास विफल भी हो सकते हैं परन्तु इस घाव के निशान उनके और उनके बच्चों के मानस पर होंगे। ऐसे लोगों की संख्या हजारों में नहीं बल्कि लाखों में होगी। दर्द प्रबंधन और प्रशामक देखभाल में काम कर रहे डॉक्टरों एवं गैर सरकारी संगठनों ने सरकार को एक प्रतिवेदन देकर मांग की है कि वह यह सुनिश्चित करे कि डॉक्टरों तथा दवा उद्योग के सदस्यों को केवल अवैध उपयोग या नियंत्रित दवाओं को गलत दिशा में उपयोग के लिए अभियोजन का सामना करना पड़ेगा न कि गलत आधार पर उन पर मामला चलाया जाएगा।

दर्द से राहत के लिए एक अभियान के साथ बड़ी परेशानी यह है कि भारत में कैंसर के दर्द से एक लाख से अधिक लोग पीड़ित हैं लेकिन जब तक यह किसी के अपने परिवार में नहीं होता तब तक कैंसर का दर्द और दुख दिखाई नहीं देता। और भी लाखों लोग अन्य बीमारियों का दर्द झेल रहे हैं। जिन लोगों ने कैंसर जैसी बीमारियों के कष्टदायी दर्द को समझने या उसके गवाह बनने का अनुभव नहीं किया है वे इसके दुख की भयावहता को नहीं समझ सकते। यह कुछ ऐसा है मानों हर कुछ सेकंड में किसी के जबड़े की हड्डी पर गिरने वाली कुल्हाड़ी के प्रहार की तरह दर्द या पैर में लगातार एक साथ सैकड़ों सुईयां चुभाई जा रहीं हों। ये ऐसे अनुभव हैं जो आमतौर पर साझा नहीं किए जाते हैं और जब साझा किए जाते हैं तो उन्हें जानबूझ कर अनसुना कर दिया जाता है। जबड़े के कैंसर से पीड़ित एक आदमी ने एक बार लेखकों में से एक से पूछा, मुझे बताओ, मैं कैसे आराम से रह सकता हूं, खासतौर पर उन हालातों में, जब रात-दिन मेरे कान में कोई कील ठोंकी जा रही हो? वेदना निवारक क्लीनिक में गर्दन पर रस्सी के घर्षण से पड़े निशान वाले लोगों को देखना बहुत सामान्य सी बात है। ये वे लोग होते हैं जो आत्महत्या के प्रयास में सफल नहीं हो पाते हैं। नेशनल क्राइम रिकॉर्ड ब्यूरो ऑफ इंडिया की रिपोर्ट है कि स्वास्थ्य संबंधी तकलीफों के कारण हर साल 26 हजार से ज्यादा लोग आत्महत्या करते हैं। अपने आप को मारना अंतिम त्रासदी नहीं है। इससे बुरी बात यह है कि ऐसा करने की ताकत न रखने वालों की किस्मत उन्हें मौत से बदतर जिंदगी जीने के लिए छोड़ देती है। भारत को वर्षों के परिश्रम से मिले लाभों तथा केरल पैटर्न पर आगे प्रयास करने चाहिए। इसके साथ ही संतुलन के सिद्धांत का सम्मान करने के लिए काम करते हुए नशीली दवाओं के दुरुपयोग को नियंत्रित करने की सरकार की जिम्मेदारी और कष्टदायी दर्द की अनावश्यक पीड़ा को कम करने की उसकी जिम्मेदारी के बीच एक सहानुभूतिपूर्ण संतुलन बनाना चाहिए।

संख्या नहीं अवसर से आगे बढ़ेंगी लड़कियां

देश में पुरुषों की तुलना में महिलाओं की संख्या अधिक होने से खुश हो जाना कोई अर्थ नहीं रखता है। यह खुशी उस वक्त तक अधूरी है जब तक सभी लड़कियों को एक समान शिक्षा और अधिकार नहीं मिल जाते हैं। जब तक बिना किसी भेदभाव और बंदिशों के उन्हें आगे बढ़ने और अपनी पसंद के क्षेत्र में काम करने की आजादी नहीं मिल जाती है। लड़कियों के प्रति समाज को हर स्तर पर अपनी सोच बदलने की जरूरत है। पिछले सप्ताह केंद्रीय स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय द्वारा जारी राष्ट्रीय परिवार और स्वास्थ्य सर्वेक्षण के आंकड़े में बताया गया है कि देश में पुरुषों की तुलना में महिलाओं की संख्या अधिक हो गई है।

सर्वेक्षण के अनुसार प्रति एक हजार पुरुषों पर 1020 महिलाएं हैं। माना यह जा रहा है कि आजादी के बाद यह पहली बार है जब देश में महिलाओं की संख्या एक हजार को पार कर गई है। आंकड़ों के अनुसार सुखद बात यह है कि शहरों की तुलना में गांवों में यह स्थिति और भी अधिक बेहतर है। शहरों में जहां प्रति एक हजार पर 985 महिलाएं हैं वहीं गांवों में यह संख्या 1037 दर्ज की गई है। राष्ट्रीय परिवार और स्वास्थ्य सर्वेक्षण के आंकड़ों के अनुसार जन्म के समय भी लिंग अनुपात में सुधार हुआ है। 2015-16 में जहां जन्म के समय प्रति एक हजार बालक पर 919 बालिका थी, वहीं 2019-20 में बढ़कर 929 हो गया है। राष्ट्रीय परिवार और स्वास्थ्य सर्वेक्षण का यह आंकड़ा वास्तव में एक सुखद एहसास दिला रहा है। यह इस बात को भी स्पष्ट कर रहा है कि अब देश में लोगों की सोच बदल रही है। अब बेटी पर बेटे को प्राथमिकता देने वाली संकीर्ण विचारधारा में परिवर्तन आ रहा है। अब माता-पिता को यह एहसास होने लगा है कि जो उम्मीदें और आशाएं वह केवल बेटों से करते थे वह बेटी भी पूरा कर सकती है। दुनिया के किसी भी क्षेत्र में और कोई भी फील्ड में लड़के की तरह लड़कियां भी कामयाबी के झंडे गाड़ सकती हैं। वंश को आगे बढ़ाने और मरने के बाद केवल बेटे से ही चिता को आग देने से मोक्ष मिलेगा, यह विचार बदलने लगा है। अब घर में लड़की के जन्म लेने पर भी खुशियां मनाई जाती हैं। उसे भी लड़के की तरह अच्छे स्कूल में दाखिला दिलाया जाता है और घर के अंदर भी उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। धीरे-धीरे ही सही, समाज की सोच में परिवर्तन आने लगा है और लड़की द्वारा मनपसंद जीवनसाथी चुने जाने को प्राथमिकता दी जाने लगी है।

लेकिन सवाल यह उठता है कि क्या ऐसे सकारात्मक सोच पूरी तरह से ग्रामीण क्षेत्रों में क्रियान्वित नजर आती है? क्या वास्तव में देश के दूरदराज इलाकों में लड़का और लड़की के बीच किया जाने वाला फर्क मिटता जा रहा है? क्या ऐसे क्षेत्रों में लड़कों की तरह लड़कियों को भी आगे पढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है? शायद इसका जवाब अभी भी पूरी तरह से हां में नहीं मिलता है। अभी भी देश के कुछ राज्यों के दूरदराज ग्रामीण क्षेत्र ऐसे भी हैं जहां लड़का और लड़की के बीच अंतर किया जाता है। लड़कियों की तुलना में लड़कों को आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। घर से लेकर बाहर तक उसे हर काम में प्राथमिकता दी जाती है। प्रसव के दौरान लड़का पैदा होने की कामना की जाती है और उसके जन्म पर लड़कियों की तुलना में अधिक उत्सव मनाया जाता है। अधिक से अधिक बेटा को जन्म देने वाली महिलाओं को समाज में अधिक सम्मान दिया जाता है। हम इस सच्चाई से मुंह नहीं मोड़ सकते हैं कि देश के ऐसे कई ग्रामीण क्षेत्र हैं जहां आज भी लड़का-लड़की के बीच भेद किया जाता है। हालांकि पहले की तुलना में इन क्षेत्रों के लोगों की सोच में भी बदलाव आया है। इन्हीं में एक उत्तराखंड के सुदूर ग्रामीण क्षेत्र कपकोट तहसील का असो गांव भी है। जहां जागरूकता और शिक्षा की कमी के कारण लड़कियों की अपेक्षा लड़कों पर अधिक तवज्जो दी जाती है। शिक्षा की कमी के कारण गांव में अंधविश्वास भी अपनी जड़ें जमाये बैठा है। अंधविश्वास का आलम यह है कि लड़का के जन्म के लिए जानवरों की बलि तक चढ़ाई जाती है। जिस घर में गर्भवती महिला के प्रसव का समय जैसे जैसे नजदीक आता है, वैसे वैसे उसकी सेहत से अधिक कर्मकांड पर ज्यादा ध्यान दिया जाता है ताकि घर में लड़के का जन्म हो सके। लेकिन अगर लड़की का जन्म होता है तो फिर उसे वह सम्मान नहीं दिया जाता है, जिसकी वह हकदार होती है। यहां तक कि जिस महिला की लड़के से अधिक लड़कियां होती हैं उसका

डॉली आर्या

समाज में भी तिरस्कार किया जाता है। कई बार अनैतिक रूप से लड़की को गर्भ में ही मार देने का कुकृत्य तक किया जाता है। यदि लड़की जन्म ले भी लेती है तो उसे अच्छी शिक्षा देने की जगह बचपन से ही घर के काम में लगा दिया जाता है। उसे उसके हिस्से का हक तक देने से वंचित कर दिया है। यद्यपि कुछ घरों में लड़कियों को स्कूल भेजा जाता है, लेकिन यदि 12वीं या कॉलेज गांव से दूर होता है तो 10वीं के बाद ही उसकी पढ़ाई छुड़वा दी जाती है और जल्द ही उसकी शादी की तैयारियां शुरू हो जाती हैं। वहीं दूसरी ओर लड़कों को पूरी आजादी मिलती है। उसका अच्छे स्कूल में दाखिला करवाया जाता है और उसकी प्रत्येक जरूरतों को पूरा किया जाता है। दरअसल शिक्षा और जागरूकता की कमी के कारण माता-पिता की यह सोच होती है कि लड़की को पढ़ कर क्या करना है? उसे तो पराए घर ही जाना है। कौन सा लड़की हमें खिला रही है? बुढ़ापे का असली सहारा तो लड़का ही बनेगा। गांव के कुछ मां-बाप की यह सोच है कि अगर लड़की बीच में बोले तो, उसे तमीज नहीं होने का ताना सुनाया जाता है, जबकि यही गलती अगर लड़के करते हैं तो उसे नजअंदाज कर दिया जाता है। कोविड-19 के दौर में जबकि ऑनलाइन पढ़ाई का सिलसिला चल रहा है, ऐसे में लड़कों को फोन तो उपलब्ध करा दी जाती है, लेकिन लड़कियों को यह कह कर मना कर दिया जाता है कि इससे लड़की बिगड़ जाएगी। यही कारण है कि पिछले दो वर्षों में ऑनलाइन पढ़ाई का सबसे अधिक नुकसान गांव की लड़कियों को उठाना पड़ा है। कई लड़कियों का इस दौरान पढ़ाई ने नाता बिल्कुल टूट चुका है। हालांकि परिस्थिति ठीक होने और स्कूल फिर से खुलने से कई लड़कियों को राहत मिली थी और वह फिर से पढ़ाई की ओर लौट रही हैं, लेकिन कुछ ऐसी भी हैं जिन्हें शादी के नाम पर आगे पढ़ने से रोक दिया गया है। ऐसी लड़कियां अब शायद ही कभी पढ़ सकेंगी।

क्या कृषि कानूनों पर भाजपा के यूटर्न से बदल गया है पश्चिमी यूपी का चुनावी गणित

बात पांच साल पहले की कि जाए तो भाजपा ने 2017 के विधानसभा चुनाव में 71 में से 51 सीटों पर जीत हासिल की थी। इससे पहले 2014 में हुए लोकसभा चुनाव में भी बीजेपी ने इस इलाके से जीत का परचम लहराया था, जिसके चलते चरण सिंह का परिवार भी पराजित हो गया था। उत्तर प्रदेश के पश्चिमी जिले जिन्हें आम बोलचाल की भाषा में पश्चिमी यूपी कहा जाता है, इस बार विधानसभा चुनाव के हिसाब से काफी अहम हो गया है।

पश्चिमी यूपी के 14 जिलों की करीब सौ विधानसभा सीटों में से 71 विधानसभा सीटों पर जाट महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। यह इलाका कभी पूर्व प्रधानमंत्री चौधरी चरण सिंह का सियासी गढ़ माना जाता था, यहां उनकी मर्जी के बिना मतदाता किसी को वोट नहीं देते थे। इसीलिए यहां तमाम राजनैतिक दल चौधरी चरण सिंह के पीछे हाथ बांधे खड़े रहते थे। चौधरी चरण सिंह 1967 तक कांग्रेस के साथ थे। वह उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री बने। गेहूं के समर्थन मूल्य को लेकर उनकी केंद्र सरकार से खटपट हो गई। जानकार बताते हैं कि चौधरी साहब ने साफ मना कर दिया कि वह केंद्र का कानून यूपी में लागू नहीं करेंगे। चौधरी चरण सिंह ने अपने हिसाब से गेहूं और धान का मूल्य घोषित किया। कांग्रेस छोड़ दी और चौधरी कुम्भाराम के साथ मिलकर भारतीय क्रांति दल बना लिया। 1969 में मध्यावधि चुनाव हुए और वेस्ट यूपी की बदौलत भारतीय क्रांति दल ने 98 सीटें जीत लीं और चौधरी साहब मुख्यमंत्री बने। इसके बाद यूपी की राजनीति में किसान मुद्दा गौण होता चला गया और वोटर जातीय गणित में उलझ कर रह गए। चरण सिंह की मृत्यु के बाद उनकी विरासत को उनके बेटे छोटे चौधरी अजित सिंह (अब दिवंगत) उतनी बखूबी नहीं संभाल पाए, बल्कि वह गठबंधन की सियासत में उलझ कर रह गए। यही हाल चरण सिंह के पौत्र जयंत सिंह का भी है, वह भी अपनी सियासत बचाने के लिए गठबंधन की राह पर ही चलना ज्यादा पसंद करते हैं। राष्ट्रीय लोकदल का समाजवादी पार्टी के साथ गठबंधन हुआ है। इससे सपा-रालोद दोनों को काफी उम्मीद हैं। लेकिन यहां राकेश टिकैत का फैक्टर भी काम कर रहा है। जिन्होंने मोदी सरकार को नया कृषि कानून वापस लेने को मजबूर कर दिया। राकेश लगातार बीजेपी के खिलाफ जहर उगल रहे हैं। इसी के चलते पश्चिमी यूपी में पिछले तीन चुनावों में अपना झंडा फहराने में सफल रही भाजपा इस बार सहमी-सहमी-सी है। भाजपा नेता लगातार पश्चिमी यूपी का दौरा करके पार्टी को मजबूत करने में लगे हैं। बात पांच साल पहले की कि जाए तो भाजपा ने 2017 के विधानसभा चुनाव में 71 में से 51 सीटों पर जीत हासिल की थी। इससे पहले 2014 में हुए

अजय कुमार

लोकसभा चुनाव में भी बीजेपी ने इस इलाके से जीत का परचम लहराया था, जिसके चलते चरण सिंह का परिवार भी पराजित हो गया था। 2019 में भी नतीजे बीजेपी के पक्ष में रहे थे। परंतु इस बार हालात बुरी तरह से बदले हुए हैं। न 2014 जैसी मोदी लहर है, न ही 2013 के दंगों की पीड़ा को लोग याद रखे हुए हैं। नये कृषि कानून के खिलाफ चले आंदोलन ने जाट-मुसलमानों के बीच की खाई को पाट दिया है। इसीलिए मोदी सरकार के कृषि कानूनों के वापस लेने के फैसले को सियासी नजरों से भी देखाजा रहा है। खासकर अगले साल होने वाले यूपी विधानसभा चुनाव से इसे जोड़ा जा रहा है।

दरअसल पश्चिमी यूपी की 14 जिलों की 71 विधानसभा सीटों पर किसानों का दबदबा है, जिसमें जाट-मुसलमान-गूजर सभी बिरादरियों के किसान शामिल हैं। इन इलाकों में किसान आंदोलन का प्रभाव भी काफी है। खुद किसान आंदोलन के प्रमुख चेहरों में से एक राकेश टिकैत इन्हीं इलाकों से आते हैं। भाजपा ने 2017 के विधानसभा चुनाव में जाट बाहुल्य 71 में से 51 पर जीत हासिल की थी। कभी इस इलाके में राष्ट्रीय लोक दल की तूती बोलती थी, जाट समुदाय इसी पार्टी को वोट देते थे, लेकिन 2017 में उसे सिर्फ एक सीट मिली वो भी बाद में भाजपा में शामिल हो गए। तब समाजवादी पार्टी ने 16, कांग्रेस ने दो जबकि बसपा और रालोद ने एक-एक सीट जीती थी। इस बार, रालोद-सपा गठबंधन किसान आंदोलन के कारण भाजपा की सीटों पर सेंध लगाने की उम्मीद कर रहा है। बीजेपी का स्थानीय नेतृत्व भी इस कानून वापसी के फायदे और नुकसान पर दो धड़ों में बंटा है। कुछ नेताओं का जहां मानना है कि इससे किसानों की भाजपा के प्रति नाराजगी कम होगी, वहीं कुछ का कहना है कि जो नुकसान होना था वो हो चुका है। सवाल अब ये उठता है कि कृषि कानून पर मोदी सरकार के यू-टर्न के बाद समाजवादी पार्टी और राष्ट्रीय लोकदल का गठबंधन क्या कामयाब होगा भी? क्या अखिलेश यादव और समाजवादी पार्टी को इसका फायदा और बीजेपी को इस गठबंधन से नुकसान होगा? इस पर राजनीति के कुछ जानकार कहते हैं कि राष्ट्रीय लोकदल और समाजवादी पार्टी दोनों की राजनीति के केंद्र में किसान ही है। इस तरह से दोनों नेचुरल एलायंस पार्टनर हैं। फिर भी गठबंधन तो राजनीति में फायदे के लिए ही किए जाते हैं। लेकिन ऐसा नहीं है कि समाजवादी पार्टी और आरएलडी का गठबंधन किसान आंदोलन की वजह से हो रहा था। 2019 के लोकसभा चुनाव में भी दोनों दलों ने गठबंधन में चुनाव लड़ा था। ये अलग बात है कि वो उतना सफल नहीं हो पाया था। इसलिए ये कहना कि कृषि कानून के विरोध की वजह से रालोद सपा से गठबंधन करना चाहती थी, गलत होगा। यहाँ ये जानना भी जरूरी है कि 2017 के विधानसभा चुनाव में या उससे पहले समाजवादी पार्टी और आरएलडी का कभी कोई गठबंधन नहीं था। इसकी वजह थी कि चौधरी अजित सिंह पूर्व प्रधानमंत्री चौधरी चरण सिंह का पुत्र होने के नाते चरण सिंह की सियासी विरासत पर अपना हक समझते थे, जबकि पूर्व सपा प्रमुख मुलायम सिंह यादव कहते थे कि चौधरी चरण सिंह उनके गुरु हैं, इसलिए उनकी सियासी विरासत पर उनका पहला हक है। हाँ, इतना भर जरूर होता था कि दोनों दल का शीर्ष नेतृत्व इस बात का ध्यान रखते थे कि पार्टी के दिग्गज नेताओं के खिलाफ प्रत्याशी नहीं उतारा जाए। राष्ट्रीय लोकदल की बात की जाए तो 2017 के चुनाव में एक सीट पर उनके उम्मीदवार को जीत मिली थी। 2002 के विधानसभा चुनाव में रालोद का सबसे बेहतरीन प्रदर्शन रहा था, जब बीजेपी के साथ उनका गठबंधन था और उन्होंने 14 सीटें जीतीं थी। इसके बाद 2007 में आरएलडी ने अकेले चुनाव लड़ने का फैसला किया और 10 सीटों पर उनके उम्मीदवार जीते। 2012 का चुनाव आरएलडी ने कांग्रेस के साथ लड़ा और 9 सीटें जीतीं। पिता चौधरी अजित सिंह की मौत के बाद ये जयंत चौधरी का पहला चुनाव है जब सभी फैसले वो खुद ले रहे हैं। सवाल यही है कि रालोद के इतने खराब रिकॉर्ड के बावजूद अखिलेश रालोद के साथ गठबंधन करके पश्चिमी उत्तर प्रदेश में क्या साध लेंगे? इस सवाल के जवाब में राजनैतिक पंडित कहते हैं कि ये चुनाव ऐसे सामाजिक समीकरण बैठाने का चुनाव है, जब बीजेपी को हराने के लिए जहाँ जहाँ जो पार्टी एक-दूसरे का पूरक बन सकती हैं वहाँ उन्हें एक दूसरे का पूरक बनना चाहिए। 2013 से 2019 तक बीजेपी पश्चिमी उत्तर प्रदेश में कथित रूप से सांप्रदायिक ध्रुवीकरण करने में सफल रही है। जिस वजह से इस इलाके के जाट और मुसलमानों में दूरी आ गई थी और इसका फायदा बीजेपी को मिला था। सपा-रालोद गठबंधन से वो दूरी नजदीकी में बदल जाएगी। इसलिए समाजवादी पार्टी और आरएलडी के बीच के गठबंधन में सीटों का बँटवारा बेहद अहम होगा। कुछ राजनैतिक पंडित कहते हैं कि पश्चिमी उत्तर प्रदेश में यूपी विधानसभा की तकरीबन 100 सीटें आती हैं। (पश्चिमी उत्तर प्रदेश की वैसे सीमा निर्धारित नहीं है, इस वजह से आँकड़े अलग-अलग हो सकते हैं) 2017 विधानसभा चुनाव में बीजेपी इनमें से 80 सीटों पर जीती थी। जबकि 2012 के चुनाव में सिर्फ 38 सीटें जीती थीं। 2019 के लोकसभा चुनाव में 18 सीटें बीजेपी जीती जबकि 2014 में 23 सांसद यहां से जीते थे। उत्तर प्रदेश की राजनीति पर अच्छी पकड़ रखने वालों का कहना है कि 2013 के मुज्जफरनगर दंगे से पश्चिमी उत्तर प्रदेश में बीजेपी की कहानी बदली है, जैसा आँकड़े भी बताते हैं। बीजेपी को इस विधानसभा चुनाव में पश्चिमी उत्तर प्रदेश के इसी किले के ढहने का डर था। इस वजह से उन्होंने कृषि कानून वापस लेने का फैसला किया। दरअसल कृषि कानून की वजह से वहाँ पिछले दिनों जितनी महापंचायत हुईं उसमें जाट-मुस्लिम एकता दोबारा से दिखने लगी थी।

बीजेपी इसी बात से चिंतित थी। योगी आदित्यनाथ के कैराना दौरे में बीजेपी की यही चिंता साफ दिखी। कैराना पहुँच कर योगी आदित्यनाथ ने एक बार फिर हिंदुओं के पलायन का मुद्दा अपने भाषण में उठाया था। जाट बिरादरी को इस बात की याद दिलाई कि किस तरह से अखिलेश सरकार ने 2013 के मुजफ्फरनगर दंगों के समय मुसलमानों को बचाया और जाट लड़कों को फंसाया था। मुसलमानों को मुआवजा दिया गया। उनके रहने के लिए शिविर लगाए गए। बीजेपी यह भी आरोप लगाती है कि सपा के कद्दावर नेता आजम खान पुलिस को अपने हिसाब से काम करने को मजबूर कर रहे थे। खैर, जातीय गणित की बात की जाए तो पश्चिमी उत्तर प्रदेश में मुसलमान 32 फीसदी और दलित तकरीबन 18 फीसदी हैं। यहाँ जाट 12 फीसदी और ओबीसी 30 फीसदी हैं। किसान और खेती यहां हमेशा प्रमुख मुद्दा रहा है। बीजेपी को क्यों नुकसान होगा, इसकी बात आती है तो बीजेपी के कमजोर होने के जो कारण गिनाए जाते हैं उसके अनुसार पहला मोदी सरकार ने कृषि कानून वापस लेने का फैसला लेने में थोड़ी देरी कर दी। इसलिए किसान कहने लगे हैं कि ये कानून सरकार ने खुद वापस नहीं लिए हैं। दूसरा किसानों का दुख है, जो इस एक साल में उन्होंने झेला है। किसी फैसले से कोई कितना भी खुश हो, दुख की याद हमेशा साथ रहती है। तीसरा चौधरी अजित सिंह की मौत के बाद जयंत को इस बार भावनात्मक वोट भी पड़ने की उम्मीद जताई जा रही है क्योंकि जाट इस बात से दुखी है कि 2019 के लोकसभा चुनाव में उसने छोटे चौधरी अजित सिंह को हरा दिया था। इसी बीच उनकी मृत्यु भी हो गई। इसीलिए जयंत को जिता कर जाट समाज इस गम से हलका होना चाहता है। इसके अलावा महंगाई, गन्ना किसानों को बकाया जैसी समस्याएं भी गुल खिला सकती हैं।

भारत के साथ होने वाली सीरीज के लिए क्रिकेट दक्षिण अफ्रीका ने जारी किया नया शेड्यूल

नई दिल्ली। क्रिकेट दक्षिण अफ्रीका (सीएसए) ने अपने घर में भारत के साथ होने वाली आगामी सीरीज के लिए नए शेड्यूल की घोषणा की है, जिसमें तीन टेस्ट और तीन वनडे मैचों की सीरीज खेली जाएगी। नए कार्यक्रम के अनुसार, भारत 26 दिसंबर से बॉक्सिंग डे टेस्ट के साथ दक्षिण अफ्रीका दौरे पर अपने अभियान की शुरूआत करेगा। यह मैच सेंचुरियन के सुपरस्पोर्ट पार्क में खेला जाएगा। दोनों टीमों के बीच तीन मैचों की टेस्ट सीरीज का दूसरा टेस्ट 3 से 7 जनवरी 2022 तक जोहानिसबर्ग और तीसरा तथा अंतिम टेस्ट मैच केप टाउन के न्यूलैंड्स स्टेडियम में 11 से 15 जनवरी 2022 तक खेला जाएगा।

दोनों टीमों के बीच इसके बाद तीन मैचों की वनडे सीरीज की शुरूआत होगी। वनडे सीरीज का पहला मैच 19 जनवरी को पार्ल में, दूसरा भी पार्ल में 21 जनवरी को और तीसरा तथा अंतिम वनडे केप टाउन के न्यूलैंड्स स्टेडियम में 23 जनवरी को खेला जाएगा। टेस्ट सीरीज आईसीसी विश्व टेस्ट चैम्पियनशिप का हिस्सा है। भारत का यह दौरा पहले 17 दिसंबर से शुरू होना था। दक्षिण अफ्रीका दौरे पर भारत को चार मैचों की टी20 सीरीज भी खेलनी थी। लेकिन कोरोना वायरस के नए वैरिएंट ओमिक्रॉन के प्रसार के बीच भारतीय क्रिकेट टीम के कार्यक्रम में बदलाव किया गया है। भारतीय टीम को दक्षिण अफ्रीका दौरे पर चार टी20 इंटरनेशनल मैच भी खेलने थे, जिसे फिलहाल टाल दिया गया है और बाद में इसकी नई तारीखें तय की जाएगी।

तीन मैचों की टेस्ट सीरीज

पहला टेस्ट- 26-30 दिसंबर, सेंचुरियन

दूसरा टेस्ट- 03-07 जनवरी, जोहानिसबर्ग

तीसरा टेस्ट- 11-15 जनवरी, केपटाउन

तीन मैचों की वनडे सीरीज

पहला वनडे- 19 जनवरी, पार्ल

दूसरा वनडे- 21 जनवरी, पार्ल

तीसरा वनडे- 23 जनवरी, केपटाउन

पहली बार भारत घरेलू सरजमीं पर खेलगा डेविस कप मुकाबला, डेनमार्क की करेगा मेजबानी

नयी दिल्ली। भारत अगले साल चार और पांच मार्च को डेविस कप टेनिस प्रतियोगिता के विश्व ग्रुप एक के मुकाबले में डेनमार्क की मेजबानी करेगा। फरवरी 2019 के बाद से यह पहली बार होगा कि भारत घरेलू सरजमीं पर डेविस कप मुकाबला खेलगा। भारत ने इससे पहले फिनलैंड (2021), क्रोएशिया (2020) और कजाकिस्तान (2019, पाकिस्तान के खिलाफ मुकाबले के लिए) की यात्रा की थी। भारत ने फरवरी 2019 में अपनी सरजमीं पर इटली की मेजबानी की। कोलकाता में खेले गये इस मुकाबले में उसे 1-3 से हार का सामना करना पड़ा था।

डेनमार्क के पास होल्गर रूण (103 वीं रैंकिंग) के रूप में एकल वर्ग में ऐसा खिलाड़ी है जिसकी रैंकिंग भारतीय खिलाड़यों से बेहतर है। इसके बावजूद घरेलू परिस्थितियों के कारण भारत का पलड़ा भारी होगा। भारत और डेनमार्क की टीमों ने डेविस कप में सिर्फ दो बार एक-दूसरे का सामना किया है। 1927 में कोपनहेगन में डेनमार्क ने भारत को 5-0 से हराया तो वही सितंबर 1984 में भारत ने आरहूस में खेले गये मुकाबले में 3-2 से जीत दर्ज की थी। भारतीय कोच जीशान अली ने कहा, ह्यह्य शुक्र है कि कई टाई के बाद हमें घरेलू मैच मिला है। पिछले दो मुकाबले हमारे लिए कठिन थे, हमने क्रोएशिया से खेला जिसने डेविस कप फाइनल में जगह बनाई। इसके बाद हमने फिनलैंड खेला और सभी को लगा कि फिनलैंड एक आसान टीम है, लेकिन ऐसा नहीं था।

उन्होंने कहा, ह्यह्य कागज पर भारत को एक मजबूत टीम माना जाता है, लेकिन रामकुमार रामनाथन (विश्व रैंकिंग 190) को छोड़कर हमारे पास एकल में शीर्ष 200 (रैंकिंग) में कोई नहीं है। लंबे समय से हमारे पास शीर्ष-100 का कोई खिलाड़ी नहीं है।

उन्होंने कहा, ह्यह्य हम हमेशा अंडरडॉग (जीत के कम दावेदार) रहे है लेकिन डेविस कप में हमारे खिलाड़ियों ने हमेशा अच्छा प्रदर्शन किया है। जीशान का मानना है कि बहुत कुछ इस बात पर निर्भर करेगा कि इस मुकाबले के लिए कौन से खिलाड़ी उपलब्ध होंगे। उन्होंने कहा, ह्यह्यपिछली बार हमारा शीर्ष खिलाड़ी हमारे साथ नहीं था, युकी भांबरी चोटिल था। अगर हमारे पास पूरी ताकत वाली टीम होगी तो अच्छा मौका होगा।

राहुल द्रविड़ के बाद अब टीम इंडिया ने भी दिखाई दरियादिली, वानखेड़े स्टेडियम के पिच क्यूरेटर को डोनेट रुपये

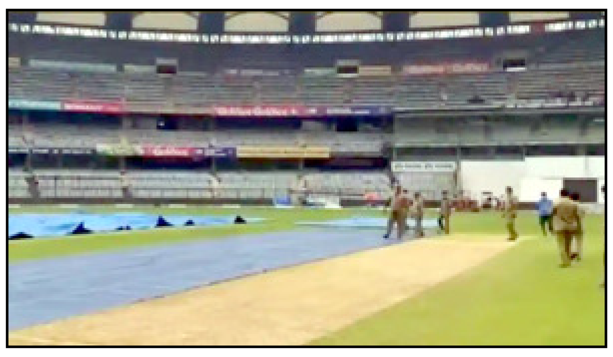

नई दिल्ली। भारत ने मुंबई के वानखेड़े स्टेडियम में खेले गए दूसरे और अंतिम टेस्ट मैच न्यूजीलैंड को 372 रनों से करारी मात देकर दो मैचों की टेस्ट सीरीज पर 1-0 से कब्जा कर लिया। रनों के लिहाज से यह टीम इंडिया की सबसे बड़ी टेस्ट जीत है। भारत ने मैच के चौथे दिन सोमवार को मेहमान टीम को उसकी दूसरी पारी में 167 रन पर ढेर कर दिया और एकतरफा जीत अपने नाम कर ली। इस जीत के बाद भारतीय क्रिकेट टीम ने दरियादिली दिखाते हुए वानखेड़े स्टेडियम के पिच क्यूरेटर को 35000 रुपये दान किए। इससे पहले, भारतीय कोच राहुल द्रविड़ ने भी कानुपर के ग्रीन पार्क पिच क्यूरेटर को इतनी ही राशि दान की थी।

मुंबई में टेस्ट मैच शुरू होने से दो दिन पहले तक जमकर बारिश हुई थी। इसके कारण मैच वाले दिन भी मैदान गीला था और इस वजह से टॉस 11.30 बजे टॉस हुआ। भारत ने टॉस जीतकर बल्लेबाजी का निर्णय था और ऐसा लग रहा था कि गीली होने के कारण पिच हरकत करेगी। लेकिन भारत ने पहली पारी में 325 रन का स्कोर बनाया, जिसमें एजाज पटेल ने एक पारी में सभी 10 विकेट लेने का रिकॉर्ड बनाया। इसके बाद न्यूजीलैंड की पहली पारी केवल 62 रन पर ढेर हो गई। हालांकि मुंबई में अक्सर टेस्ट मैच तीन दिन तक ही चल पाता है, इस बार टेस्ट मुकाबला चौथे दिन तक पहुंचा। मुंबई की पिच पर पर्याप्त टर्न और उछाल देखने को मिला। कानपुर में भारत और न्यूजीलैंड के बीच खेला गया पहला टेस्ट मैच ड्रॉ रहा था। मैच के बाद भारत के हेड कोच द्रविड़ ने वहां के पिच क्यूरेटर को 35000 रुपए डोनेट किए थे। उत्तर प्रदेश क्रिकेट एसोसिएशन (यूपीसीए) ने खेल के बाद प्रेस बॉक्स में इस बात का खुलासा किया था। मुंबई टेस्ट की दूसरी पारी भारत ने 276/7 पर घोषित करके न्यूजीलैंड के सामने 540 रन का पहाड़ जैसे लक्ष्य रखा था। लेकिन न्यूजीलैंड की टीम दूसरी पारी में 167 रन ही बना सकी।

टीम इंडिया की विशाल जीत पर बोले पूर्व कोच रवि शास्त्री

'विराट कोहली टेस्ट क्रिकेट की पूजा करते हैं, भारत इस फॉर्मेट का एंबेसडर है'

नई दिल्ली। न्यूजीलैंड के खिलाफ मुंबई टेस्ट में मिली विशाल जीत के बाद पूर्व कोच रवि शास्त्री ने भारतीय क्रिकेट टीम को टेस्ट क्रिकेट का एंबेसडर बताते हुए टीम इंडिया की जमकर तारीफ की है। टेस्ट क्रिकेट के भविष्य पर बोलते हुए शास्त्री का मानना ??है कि भारतीय क्रिकेट टीम के खिलाड़ी टेस्ट क्रिकेट के प्रति पूरी तरह से समर्पित हैं और कप्तान विराट कोहली फ्रंट से टीम को लीड कर रहे हैं। कोहली की अगुवाई में भारतीय टीम ने घरेलू मैदान पर लंबे समय से टेस्ट सीरीज न हारने का रिकॉर्ड बरकरार रखते हुए सोमवार को न्यूजीलैंड को दूसरे टेस्ट में 372 रनों से हराकर दो मैचों की टेस्ट सीरीज 1-0 से जीत ली।

पूर्व कोच ने आगे कहा कि भारत ने आईसीसी टेस्ट टीम रैंकिंग में पिछले पांच साल में नंबर वन के रूप में समाप्त किया है और इस इस बात का सबूत है कि उसके खिलाड़ी कितनी गंभीरता से टेस्ट क्रिकेट को लेते हैं। कोहली की अगुवाई में न्यूजीलैंड को दूसरे टेस्ट में हराने के बाद भारतीय टीम अब दुनिया की नंबर वन टेस्ट टीम बन गई है। भारत अब 124 प्वॉइंट्स के साथ आइसीसी टेस्ट रैंकिंग में पहले स्थान पर है, जबकि दूसरे नंबर पर 121 प्वॉइंटस के साथ न्यूजीलैंड है।

शास्त्री ने अपने पॉडकास्ट पर फेमस लेखक जेफरी आर्चर से कहा, 'मुझे लगता है कि अगर कोई टीम पिछले पांच वर्षों में टेस्ट मैच की एंबेसडर रही है, तो वह भारतीय क्रिकेट टीम है। विराट टेस्ट क्रिकेट की पूजा करते हैं, जैसा कि ज्यादातर टीम करते हैं। अगर आप टीम में किसी से पूछेंगे, तो उनमें से 99 प्रतिशत यही कहेंगे कि उन्हें टेस्ट क्रिकेट पसंद है। इसलिए, भारत पिछले पांच वर्षों से नंबर 1 टेस्ट टीम रही है। भारत ऑस्ट्रेलिया में लगातार टेस्ट सीरीज जीतने वाली एकमात्र टीम है जबकि इस साल की शुरूआत में इंग्लैंड के दौरे पर उसे 2-1 की बढ़त है। कोविड-19 के कारण सीरीज का एक टेस्ट मैच अभी खेला जाना बाकी है। शास्त्री ने दावा करते हुए कहा कि भारत ने टेस्ट क्रिकेट में अपना दबदबा बनाया है और दुनिया में एक प्रमुख तेज गेंदबाजी यूनिट के रूप में टीम का उभरना उसके लिए बड़ी बात है। पूर्व कोच शास्त्री ने कहा, 'हम न्यूजीलैंड के खिलाफ डब्ल्यूटीसी फाइनल हार गए, लेकिन पिछले पांच वर्षों से हमने इस फॉर्मेट में अपना दबदबा बनाया है। ऑस्ट्रेलिया में दो बार सीरीज जीते, इंग्लैंड में सीरीज में बढ़त लेना, दुनिया में हर जगह जीतना, व्हाइट बॉल क्रिकेट और रेड बॉल क्रिकेट में एक बेंचमार्क स्थापित करना और तेज गेंदबाजों का उभरकर सामने आना, भारत के लिए आसाधारण रहा है।'

किशनी में खेलकूद प्रतियोगिता का आयोजन संपन्न

अखंड भारत संदेश

किशनी। ब्लॉक स्तरीय मिनी क्रीडा प्रतियोगिता किशनी के ग्रामीण स्टेडियम में आयोजित की गई जिसमें जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी मैनपुरी के द्वारा सरस्वती माता के चित्र पर माल्यार्पण करते हुए शुभारंभ किया गया। सभी 9 न्याय पंचायत के बच्चों को द्वारा मार्च पास्ट के माध्यम से जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी और अन्य अधिकारियों द्वारा सलामी दी गई। दृष्टिबाधित बच्चे के द्वारा बहुत ही मनमोहक और भावुक गीत प्रस्तुत किया गया जिसको सुनकर सभी का मन भावुक हो गया। कमपोजिट विद्यालय नैगमा के बच्चों के द्वारा पीटी का बेहतरीन प्रस्तुतीकरण किया गया जिस पर खंड शिक्षा अधिकारी जेपी पाल के द्वारा ?1000 का नगद इनाम उनके प्रशिक्षकों और टीम को प्रदान किया गया। जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी के द्वारा दृष्टिबाधित बच्चे को उपहार स्वरूप भेंट प्रदान की गई। खंड शिक्षा अधिकारी बेवर के द्वारा सभी बच्चों का उत्साह वर्धन करते हुए शुभकामनाएं दी गई हो। ब्लॉक स्तरीय क्रीड़ा प्रतियोगिता में खो खो कबड्डी 400 मीटर दौड़ 100 मीटर,200मीटर दौड़, भाला फेंक ,चक्का फेंक ,आदि विभिन्न प्रतियोगिताएं हुई जिनमें विजिट होने वाले प्रतिभागियों को 14 दिसंबर को जिला स्तर पर प्रतिभाग कराया जाएगा। कार्यक्रम का संचालन मशहूर कवि बलराम श्रीवास्तव और क्रीड़ा प्रभारी श्री सुनील दुबे के द्वारा किया गया। विकासखंड के सभी खेल अनुदेशकों के द्वारा नियमबद्ध तरीके से खेलों को आयोजित कराया गया जिसमें नामित किए गए अनुशासन समिति के सदस्यों ने अपनी भूमिका का बखूबी निर्वहन किया। ए आर पी शरद यादव, विनय कुमार पंकज राजपूत और अनीता यादव के द्वारा पूरे कार्यक्रम की विधिवत मॉनिटरिंग करते हुए सफल हुए बच्चों का लेखा जोखा रखा गया ताकि वे जनपद स्तर पर प्रतिभाग कर सकें। खंड शिक्षा अधिकारी किसने के द्वारा बताया गया कि खेलों में अनुशासन का बहुत महत्व है और विकासखंड के सभी बच्चों में अनुशासन के दायरे में रहकर अपने प्रतिभा प्रदर्शन किया है और आगे भी बच्चे जनपद स्तर पर जाकर विकासखंड का नाम रोशन करेंगे ऐसी उनकी कामना है।

किसनी कोर्ट में चल रहे मुकद्दमे की पत्रावली गायब

अखंड भारत संदेश

किशनी। कोर्ट में मुकद्दमा लम्बित हो और पत्रावली खोजाये। इससे बडा गम्भीर मामला और क्या होगा। पर किशनी तहसील में यह भी हुआ है। क्षेत्र के गांव अहिमलपुर निवासी अरबिन्द नारायण पुत्र प्रयाग नरायण ने डीएम को दिये प्रार्थनापत्र में आरोप लगाया कि तहसील किशनी में तहसीलदार के न्यायालय में अरबिन्द बनाम प्रयागनरायण धारा -35 का वाद बिचाराधीन है। उक्त वाद में अन्तिम तारीख 07 अक्टूबर 2021 दी गई थी। इसके बाद तहसीलदार के कोर्ट में उक्त मुकद्दमे की पत्रावली को गुम कर दिया गया। वादी ने आरोप लगाया कि उक्त वाद न्यायालय में गत तीन वर्षों से चल रहा था। उक्त पत्रावली में उनकी रजिस्टर्ड वसीयत की मूल प्रति भी संलग्न थी। उन्होंने प्रार्थना की कि उक्त पत्रावली को किसी भी सूरत में ढुंढबाया जाय तथा उक्त प्रकरण में संलिप्त लोगों के खिलाफ कार्यवाही की जाय।

पाल अस्पताल के डाक्टर से पैसे दिलवाने के लिये पिता ने लगाई डीएम से गुहार

अखंड भारत संदेश

किशनी। डाक्टर भगवान का दूसरा रूप होता है येसा लोग अक्सर कहते हैं। पर जब डाक्टर के मन में लालच घुस जाय और वह बेईमानी पर उतारू होजाय तो बात गम्भीर हो ही जाती है।

ग्रामसभा फरेंजी के गांव नसीरपुर निवासी सुरेन्द्र सिंह पुत्र पातीराम ने डीएम को प्राथर्नापत्र दिया कि उनका बेटा गौतम बीमार था। इलाज के लिये वह कस्बा के पाल हॉस्पिटल लेकर गये। वहां मौजूद डाक्टर बी.के. पाल ने उनसे कहा कि उनके बच्चे में मात्र तीन पॉइन्ट खून शेष बचा है इसलिये खून की बोतल लगानी होगी। साथ ही कहा गया कि उन्हैं पचास हजार रुपए जमा कराने होंगे। उन्होंने इन्तजाम कर पचास हजार की रकम डाक्टर के हवाले कर दिये। पीडित से कहा कि उनके बेटे की हालत खराब होती चली जा रही थी। उसमें कोई सुधार नहीं हो रहा था तो वह घबराया और बच्चे को लेकर आगरा के अस्पताल में भर्ती करा दिया। जहां इलाज के बाद उनका बेटा ठीक हो गया। उन्होंने बताया कि डा0 पाल ने कहा था कि यदि तुम्हारा बेटा अन्यत्र कहीं ठीक होता है तो वह उनके पैसे बापस कर देंगे। पर अब डाक्टर उनके पेसे देने से मुकर रहा है। उन्होंने अपने पैसे दिलबाने की गुहार लगाई है।

डीएम से की शिकायतः दौराने मुकद्दमा लेखपाल व राजस्व निरीक्षक करने जाते हैं पैमाइश

किशनी। ग्रामसभा सौज के गांव हंसापोखर निवासी कालिका प्रसाद पुत्र रोहनलाल,रामप्रसाद पुत्र रामसेवक ने डीएम से शिकायत की कि उनके गांव में गाटा संख्या 3813/0.405,3813/0.405ल0 का बिपक्षीगण विनोदकुमार व मनोजकुमार पुत्रगण रनवीर सिंह,प्रमोद पुत्र प्यारेलाल, कुसमादेवी पत्नी पत्नी प्रमोद को फर्जी पट्टा दिया था। उक्त प्रकरण का मुकद्दमा न्यायालय में लम्बित है। बाबजूद इसके लेखपाल तथा कानूनगो उक्त भूखण्ड की पैमाइश करने को तैयार हैं। उन्होंने फैसला आने तक पैमाइश रोकने की मांग की है।

दीवानी परिसर में पहुंची एक ही नंबर की 2 गाड़ियां, मचा रहा हड़कंप

अखंड भारत संदेश

मैनपुरी। दीवानी परिसर में एक बडा खुलासा सामने आया एक ही नंबर की दो गाड़ियां देखने को मिली ' परिसर में भगदड़ मच गई पुलिस ने गाडी को कब्जे मे लिया । मैनपुरी मोहल्ला देवपुरा नई बस्ती के निवासी एडवोकेट गौरव कुमार ने पुलिस को सूचना देकर बताया कि उनके बस्ते के सामने खडी दो हुंडई ईऑन गाडी जिसका नम्बर एक समान था गाडी न,(वढ84ट0230) इसी गाडी के ठीक सामने इसी नम्बर की दूसरी ईऑन खड़ी है

जानकारी मिलते ही मौके पर पहुंची पुलिस ने शुरू की खोजबीन,दूसरी संदिग्ध गाड़ी में एक सूटकेश भी मौजूद था ओर उस सूटकेस का खुलासा नही हुआ ,मोखे पर पहुची पुलिस ने गाडी को कब्जे मे लिया काफी समय से इन्तजार करने के बावजूद भी नही आया गाडी का मालिक पुलिस ने गाडी थाना कोतवाली पहुचा दी।

जन आरोग्य मेले में 1234 मरीजों का हुआ इलाज

ज्ञानपुर। मुख्यमंत्री जन आरोग्य स्वास्थ्य मेला के तहत रविवार को जिले के 17 केंद्रों पर शिविर लगा। इसमें 1234 मरीजों ने बेहतर उपचार का लाभ उठाया। साथ ही स्वास्थ्य मेले में आयुष्मान योजना के तहत कैंप लगाकर पात्रों का गोल्डन कार्ड बनाने के साथ ही सरकार द्वारा स्वास्थ्य विभाग के माध्यम से चलाई जा रहीं अन्य योजनाओं का लाभ दिया गया। उधर, सीएमओं डॉ. संतोष चक ने प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र कटरा और सेमराध में जनआरोग्य मेले का निरीक्षण किया। लोगों को बेहतर स्वास्थ्य सेवा मिल सके इसके लिए हर रविवार को मुख्यमंत्री जनआरोग्य मेला लगाया जा रहा है। मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ. संतोष चक ने बताया है कि 17 स्वास्थ्य केंद्रों पर 1234 लोगों का इलाज किया गया। इसमें 530 पुरुषों, 583 महिला, 290 बच्चों का इलाज किया गया जिसमें छह की हालत गंभीर होने पर रेफर किया गया। कहा कि 131 लाभार्थियो का गोल्डेन कार्ड बनाया गया।

ढाई लाख से ज्यादा को मिलेगी स्वास्थ्य सुविधा

अखंड भारत संदेश

ज्ञानपुर। कलेक्ट्रेट सभागार में रविवार को 43 नए स्वास्थ उपकेंद्रों का लोकार्पण किया गया। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने प्रदेश के पांच हजार स्वास्थ्य उपकेंद्रों का लोकार्पण किया, जिसमें भदोही जिले के 43 थे। ऐसे में स्थानीय स्तर पर जनप्रतिनिधियों व जिलाधिकारी ने कलेक्ट्रेट पहुंचकर औपचारिक रूप से लोकार्पण किया। इन उपकेंद्रों पर एक साल के भीतर ढाई से तीन लाख लोगों को लाभ मिलेगा। विधायक भदोही रवींद्र नाथ त्रिपाठी ने बताया कि पांच हजार की आबादी में एक स्वास्थ्य उपकेंद्र स्थापित किया गया है। यह उपकेंद्र पिछड़े गांवों में स्थापित किए जा रहे हैं। इन 43 स्वास्थ्य उपकेंद्रों से एक वर्ष में ढाई से तीन लाख लोगों को स्वास्थ्य सुविधाएं उपलब्ध कराई जा सकेंगी। उपकेंद्र में महिलाओं और बच्चों समेत अन्य आयु वर्ग के लोगों को भी स्वास्थ्य सुविधाएं घर के समीप मिल सकेंगी। बच्चों के टीकाकरण में इनकी विशेष भूमिका रहेंगी। औराई विधायक दीनानाथ भास्कर ने कहा कि नवीन उपकेंद्रों के बन जाने के बाद जनपद के लोगों को दूर नहीं जाना पड़ेगा, गांवों में ही अच्छे उपचार की सुविधा मुहैया होगी। इस मौके पर जिलाधिकारी आर्यका अखौरी, मुख्य विकास अधिकारी भानु प्रताप सिंह, मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ. संतोष कुमार चक एवं स्वास्थ विभाग के अधिकारी उपस्थित रहे।

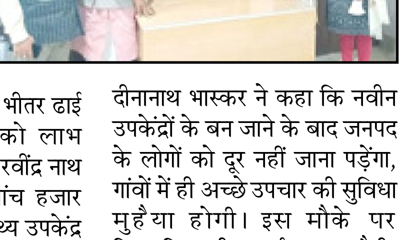

पाल अस्पताल के डाक्टर से पैसे दिलवाने के लिये पिता ने लगाई डीएम से गुहार

अखंड भारत संदेश

किशनी। डाक्टर भगवान का दूसरा रूप होता है येसा लोग अक्सर कहते हैं। पर जब डाक्टर के मन में लालच घुस जाय और वह बेईमानी पर उतारू होजाय तो बात गम्भीर हो ही जाती है।

ग्रामसभा फरेंजी के गांव नसीरपुर निवासी सुरेन्द्र सिंह पुत्र पातीराम ने डीएम को प्राथर्नापत्र दिया कि उनका बेटा गौतम बीमार था। इलाज के लिये वह कस्बा के पाल हॉस्पिटल लेकर गये। वहां मौजूद डाक्टर बी.के. पाल ने उनसे कहा कि उनके बच्चे में मात्र तीन पॉइन्ट खून शेष बचा है इसलिये खून की बोतल लगानी होगी। साथ ही कहा गया कि उन्हैं पचास हजार रुपए जमा कराने होंगे। उन्होंने इन्तजाम कर पचास हजार की रकम डाक्टर के हवाले कर दिये। पीडित से कहा कि उनके बेटे की हालत खराब होती चली जा रही थी। उसमें कोई सुधार नहीं हो रहा था तो वह घबराया और बच्चे को लेकर आगरा के अस्पताल में भर्ती करा दिया। जहां इलाज के बाद उनका बेटा ठीक हो गया। उन्होंने बताया कि डा0 पाल ने कहा था कि यदि तुम्हारा बेटा अन्यत्र कहीं ठीक होता है तो वह उनके पैसे बापस कर देंगे। पर अब डाक्टर उनके पेसे देने से मुकर रहा है। उन्होंने अपने पैसे दिलबाने की गुहार लगाई है।

किसनी कोर्ट में चल रहे मुकद्दमे की पत्रावली गायब

अखंड भारत संदेश

किशनी। कोर्ट में मुकद्दमा लम्बित हो और पत्रावली खोजाये। इससे बडा गम्भीर मामला और क्या होगा। पर किशनी तहसील में यह भी हुआ है। क्षेत्र के गांव अहिमलपुर निवासी अरबिन्द नारायण पुत्र प्रयाग नरायण ने डीएम को दिये प्रार्थनापत्र में आरोप लगाया कि तहसील किशनी में तहसीलदार के न्यायालय में अरबिन्द बनाम प्रयागनरायण धारा -35 का वाद बिचाराधीन है। उक्त वाद में अन्तिम तारीख 07 अक्टूबर 2021 दी गई थी। इसके बाद तहसीलदार के कोर्ट में उक्त मुकद्दमे की पत्रावली को गुम कर दिया गया। वादी ने आरोप लगाया कि उक्त वाद न्यायालय में गत तीन वर्षों से चल रहा था। उक्त पत्रावली में उनकी रजिस्टर्ड वसीयत की मूल प्रति भी संलग्न थी। उन्होंने प्रार्थना की कि उक्त पत्रावली को किसी भी सूरत में ढुंढबाया जाय तथा उक्त प्रकरण में संलिप्त लोगों के खिलाफ कार्यवाही की जाय।

चन्नी का आरोप, सीट बंटवारा समझौते पर गुप्त रूप से काम कर रहे अमरिंदर और बादल

चंडीगढ़। पंजाब के मुख्यमंत्री चरणजीत सिंह चन्नी ने सोमवार को आरोप लगाया कि अगले साल की शुरूआत में होने वाले विधानसभा चुनाव के मद्देनजर पूर्व मुख्यमंत्री अमरिंदर सिंह और शिरोमणि अकाली दल के बीच गुप्त रूप से सीट बंटवारे को लेकर बातचीत चल रही है। चन्नी ने आरोप लगाया कि पूर्व में भी सिंह, शिअद अध्यक्ष सुखबीर सिंह बादल और भाजपा के बीच अंदरुनी गठजोड़ रहा था और कहा कि अब वे राज्य के हितों को गुप्त रूप से नुकसान पहुंचा रहे हैं। हाल में राज्य की सत्तारूढ़ कांग्रेस का साथ छोड़कर अपनी पार्टी बनाने वाले अमरिंदर सिंह पर निशाना साधते हुए मुख्यमंत्री ने दावा किया कि सिंह अकाली दल के साथ मिलकर दोस्ताना मैच खेल रहे थे। एक निजी टीवी चैनल द्वारा आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते हुए चन्नी ने कहा कि पूर्व मुख्यमंत्री और बादल ने अपने संकीर्ण निहित स्वार्थ के लिए एक-दूसरे की मदद की।

सीएम योगी का अखिलेश पर कटाक्षः आजमगढ़ में बोले-

'अब तो अब्बाजान भी लगवा चुके, आप भी लगवा लें कोरोना वैक्सीन'

आजमगढ़। उत्तर प्रदेश के आजमगढ़ जिले के सगड़ी में सोमवार को जनसभा को संबोधित करते हुए मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ पूरे फार्म में दिखे। आजमगढ़ सांसद और पूर्व मुख्यमंत्री व सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव पर जम कर व्यंग बाण छोड़े। कोरोना वैक्सीन न लगवाने को लेकर अखिलेश यादव को एक बार फिर लपेटे में लिया। सीएम योगी ने कहा कि आजमगढ़ के सांसद कोरोना वैक्सीन को भाजपाई और मोदी जी की वैक्सीन बताते थे। बोले- अब तो अब्बा जान भी वैक्सीन लगवा चुके हैं। आप भी लगवा लें। नया वैरिएंट आ गया है। वैक्सीन लगवा लेंगे तो शायद सच बोलने की आदत आ जाएगी। नहीं तो झूठ पर झूठ बोलकर जैसे आजमगढ़ के लोगों को धोखा दे रहे थे वैसे ही प्रदेश के लोगों को भी धोखा दे रहे थे। सीएम योगी यहीं नहीं रूके। उन्होंने अखिलेश यादव पर कटाक्ष किया कि कोरोना संकट के समय अखिलेश यादव ने आजमगढ़ को लावारिस छोड़ दिया था। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि

समाजवादी पार्टी सत्ता में आने के बाद गरीबों, दलितों व व्यापारियों को सता रही थी।

आजमगढ़ इसका भुक्तभोगी था। यहां के लोग कहीं बाहर जाते थे तो उन्हें किसी धर्मशाला में कमरा नहीं मिलता था। आजमगढ़ का नाम सुनते ही होटलों में भी कमरे नहीं मिलते थे। यह संकट उन्होंने ही खड़ा किया था, जिन्होंने कोरोना काल में यहां की जनता को लावारिस छोड़ दिया था। सीएम ने कहा कि कोरोना काल में हम आजमगढ़ में तीन बार आए थे।

यहां की मेडिकल व्यवस्था समेत अन्य सुविधाओं की लगातार पड़ताल की। भाजपा के पदाधिकारी और कार्यकर्ता सेवा के कार्य में जुटे थे। लेकिन आजमगढ़ के सांसद नदारद थे। उनका कहीं पता ही नहीं था। पहली लहर में मैंने पूछा कि आजमगढ़ के सांसद कहां है, तो पता चला कि इंग्लैंड गए। जब दूसरी लहर आई तो पता किया तब पता चला कि ऑस्ट्रेलिया गए हैं। उन्होंने मौजूद जनता से पूछा कि आजमगढ़ के लोगों ने उन्हें ऑस्ट्रेलिया व इंग्लैंड जाने के लिए तो नहीं चुना था ना। सगड़ी में जनसभा को संबोधित करते हुए सीएम ने कहा कि समाजवादी पार्टी की सरकार में तो अराजकता ही उसका पर्याय हो गया था। सीएम योगी ने कहा कि कुछ लोगों ने बाबा साहब भीमराव आंबेडकर के नाम पर राजनीति तो की लेकिन जब भी अनुसूचितों व गरीबों की बात होती थी, उनपर अत्याचार होते थे तो वो मौन साध लेते थे। याद कीजिए जब समाजवादी पार्टी की सरकार थी तब रामपुर में उस समय मंत्री आजम खां द्वारा गरीबों व अनुसूचितों के घर उजाड़े जाते थे। उस वक्त कांग्रेस और बसपा मौन थी। तब केवल भारतीय जनता पार्टी आंदोलन कर रही थी। सत्ताधारी दल का एक मंत्री अराजकता पैदा करे, हमें यह स्वीकार नहीं था। सीएम योगी को सुनने के लिए सगड़ी विधानसभा स्थित जूनियर विद्यालय के मैदान में भारी संख्या में भीड़ उमड़ी।

उत्तर प्रदेश सरकार की एमएसएमई नीति के अन्तर्गत लाखों उद्यम स्थापित, करोड़ों लोगों को मिला रोजगार

लखनऊ। किसी भी देश के विकास के लिए सूक्ष्म, लघु एवं माध्यम उद्यम रीढ़ का कार्य करती है। समाज से व्यक्तियों की कई प्रकार की भौतिक खाद्य वस्तुओं की आवश्यकता होती है। उनकी पूर्ति समाज में प्रचलित कुटीर उद्योगों एवं एम.एस.एम.ई. उद्यमों से ही होती है। छोटे उद्यमों के विकास से समाज के परम्परागत कौशल और कला को सजोये रखने में मदद मिलती है, वही उद्यम में लगे लोगों को रोजगार मिलता रहता है। इन उद्यमों से प्रदेश और देश की संस्कृति को बढ़ावा मिलता है। साथ ही प्रदेश, देश की आर्थिक उन्नति में सहायक होते हैं। प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी ने प्रदेश के परम्परागत उद्यमों, कारीगरी आदि को बढ़ावा देते हुए नये उद्यमों के स्थापना हेतु सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यमों के विकास पर विशेष बल दिया है। इसके विकास के लिए विभिन्न बैंकों द्वारा ऋण वितरित करते हुए उद्यम स्थापित कराकर लोगों को रोजगार दिया गया है।विगत वर्षों में बैंकों के माध्यम से प्रदेश में सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम ईकाइयों को बढ़-चढ़कर ऋण वितरण किया गया। जहां वर्ष 2016-17 में केवल रू0 28,136 करोड़ का ऋण वितरण एमएसएमई इकाइयों को किया गया था, वहीं वर्ष 2020-21 में रू0 73,765 करोड़ का ऋण वितरण किया गया जो विगत 04 वर्षों में 2.5 गुना से अधिक की वृद्धि को दशार्ता हैं। प्रदेश में वर्ष 2020-21 की अधिकांश अवधि में प्रदेश में लॉकडाउन लागू होने के बावजूद भी यह वृद्धि दर्ज की गयी है। वार्षिक ऋण योजना के अन्तर्गतविगतवर्षों में एमएसएमई क्षेत्र में ऋण वितरण की स्थिति बड़ी सफल रही है।

ममता बनर्जी की नजर उत्तर प्रदेश चुनाव पर

अखिलेश का साथ देकर कराएंगी पार्टी की राज्य में इंट्री!

नई दिल्ली। पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी की सक्रियता जिस तरह अपने राज्य से बाहर तेजी से बढ़ी है, उससे कई तरह के सियासी समीकरण बनने बिगड़ने की अटकलें तेज हो गई हैं। दिल्ली के बाद ममता महाराष्ट्र गईं और अब उनकी नजर उत्तर प्रदेश चुनाव में अपनी पार्टी को पहचान दिलाने की तरफ है। कांग्रेस छोड़कर तृणमूल कांग्रेस में आए ललितेश पति त्रिपाठी इसके लिए पूरी तैयारी कर रहे हैं। बेशक अभी उत्तर प्रदेश में तृणमूल कांग्रेस कहीं नहीं है, लेकिन जो भी थोड़ी बहुत ताकत उसे वहां नजर आ रही है, उसका विस्तार करने का ये मौका वह चूकना नहीं चाहती।

तृणमूल कांग्रेस के सूत्रों का कहना है कि दिसंबर के अंत या जनवरी के पहले सप्ताह में ममता बनर्जी उत्तर प्रदेश चुनाव को लेकर अपने पत्ते खोल सकती हैं। तृणमूल कांग्रेस में शामिल होने के बाद ललितेश पति त्रिपाठी को भी बड़ी जिम्मेदारी दी जानी है। ललितेश की टीम चार-पांच विधानसभा सीटों पर उम्मीदवार

उतारने के बारे में गंभीरता से काम भी कर रही है। समझा जा रहा है कि ममता बनर्जी प्रदेश में समाजवादी पार्टी और उसके नेता अखिलेश यादव को बिना शर्त अपना समर्थन देकर, उनसे तृणमूल के उम्मीदवारों के कुछ सीटें छोड़ने की मांग कर सकती हैं। इससे पहले बिहार से बाहर निकलकर अपना जनाधार बढ़ाने में लगा राष्ट्रीय जनता दल भी समाजवादी पार्टी को अपना समर्थन देने का एलान कर चुका है।पश्चिम बंगाल में मुख्यमंत्री ममता बनर्जी के मंत्रिमंडल के सदस्य का कहना है कि उनकी पार्टी ने पश्चिम बंगाल में भाजपा के विजय अभियान को रोका है। तृममूल कांग्रेस उत्तर प्रदेश में भी भाजपा को झटका देगी। इसके लिए वहां के सबसे बड़े विपक्षी दल समाजवादी पार्टी को हम समर्थन दे सकते हैं। हालांकि इसकी औपचारिक घोषणा या इस बारे में कोई भी निर्णय हमारी नेता ममता बनर्जी को करना है। मुझे लग रहा है कि इस महीने के अंत तक इस बारे में वह कोई घोषणा कर सकती हैं।

तृणमूल कांग्रेस की नेता और पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी जब दिल्ली दौरे पर आती हैं, तो वह कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी से भी मिलने की कोशिश जरूर करती हैं। नवंबर में भी जब वह दिल्ली आई थीं तो सोनिया गांधी से मिलने का समय मांगा था। बताते हैं सोनिया गांधी से उनकी भेंट हुई और इस दौरान कुछ समय के लिए राहुल गांधी भी वहां बैठे थे। बाद में 30 नवंबर को ममता बनर्जी जब महाराष्ट्र गईं, तो परोक्ष रूप से राहुल गांधी पर हमला बोल दिया। ममता बनर्जी के बाद उनके राजनीतिक सलाहकार प्रशांत किशोर ने भी ट्विटर पर मोर्चा खोल दिया था। कांग्रेस को ममता बनर्जी का यह राजनीतिक प्रयोग जरा कम समझ में आ रहा है। केंद्र सरकार के एक पूर्व मंत्री और वरिष्ठ कांग्रेस नेता का कहना है कि लोकसभा में अधीर रंजन चौधरी पार्टी के नेता हैं। चौधरी और ममता के समीकरण ठीक नहीं माने जाते हैं, लेकिन राहुल गांधी से अधीर रंजन चौधरी की केमिस्ट्री ठीक है। इसलिए हो सकता है कि ममता बनर्जी को राहुल और अधीर की नजदीकी अच्छी न लगती हो। लेकिन सोनिया गांधी का वह आदर करती हैं। उनका कहना है कि राजनीति में यह सब चलता है।

पहले चर्चा की मांग, फिर हंगामा..... निर्मला सीतारमण बोलीं- यह विपक्ष का दिखावा है

नयी दिल्ली। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने सोमवार को राज्यसभा में कहा कि विपक्षी सदस्य पहले चर्चा की मांग करते हैं फिर सरकार के तैयार होने के बावजूद चर्चा नहीं करते और फिर सरकार पर ही चर्चा से भागने का आरोप लगाते हैं। उन्होंने कहा ह्यह्यपहले चर्चा की मांग, फिर हंगामा.... यह विपक्ष का दिखावा है। यह टिप्पणी वित्त मंत्री ने उच्च सदन में आज उस वक्त की जब पेट्रोलियम उत्पादों सहित आवश्यक वस्तुओं के दाम में वृद्धि की वजह से देश में उत्पन्न हालात पर नियत अल्पकालिक चर्चा विपक्षी सदस्यों के हंगामे की वजह से शुरू नहीं हो पाई।

विपक्षी सदस्य 12 निलंबित सदस्यों का निलंबन वापस लिए जाने की मांग को लेकर हंगामा कर रहे थे। सदन में मौजूद वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने कहा ह्यह्ययह विषय उन्होंने (विपक्ष ने) तय किया था। विपक्ष इस पर चर्चा करना चाहता था और सरकार चर्चा के लिए तैयार है। तय कर वह (विपक्ष) चर्चा नहीं कर रहे हैं, और फिर हम पर आरोप लगाया जाता है कि सरकार चर्चा से भाग रही है। हम चर्चा चाहते हैं, महंगाई पर

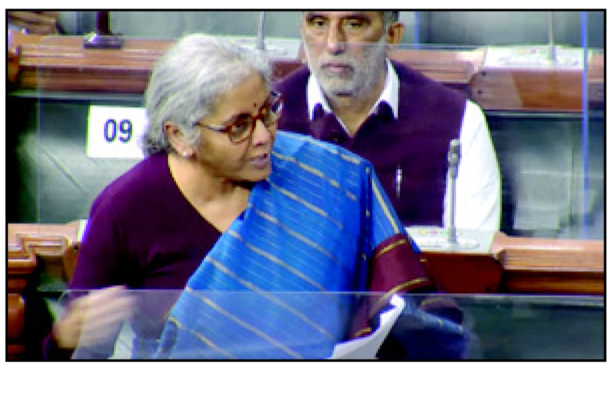

वे लोकतंत्र की बात करते हैं और हम उनके विषय पर चर्चा के लिए तैयार हैं। क्या यह लोकतंत्र और सदन की भावना नहीं है ? उन्होंने कहा ह्यह्यहम चर्चा से भाग नहीं रहे हैं। विषय चर्चा चाहते हैं। लेकिन आप देख रहे हैं। पहले चर्चा की मांग, फिर हंगामा..... यह विपक्ष का दिखावा है। वित्त मंत्री का इशारा आसन के समक्ष आ कर नारेबाजी कर रहे विपक्षी सदस्यों की ओर था।

चलता रहेगा आंदोलन... किसान नेता बोले- संयुक्त किसान मोर्चे की बैठक में बनेगी आगे की रणनीति

नई दिल्ली। तीन कृषि कानून की वापसी के बाद भी किसान आंदोलन खत्म नहीं हुआ है। तीन कृषि कानूनों की वापसी के बाद किसान संगठन न्यूनतम समर्थन मूल्य (टरढ) को लेकर कानून बनाने की मांग पर अड़े हैं। किसान संगठनों का कहना है कि केंद्र सरकार एमएसपी को लेकर कानून बना दें वो अपना आंदोलन खत्म कर देंगे। इस बीच सोमवार को किसान नेता गुरनाम सिंह चढूनी ने कहा है कि अब तक न तो केंद्र और न ही किसी राज्य सरकार ने समिति को बुलाया है। उन्होंने आगे कहा कि अभी तक कोई बातचीत नहीं हुई है। कल संयुक्त मोर्चा की बैठक है, आज 5 सदस्यीय समिति की बैठक हुई। पारदर्शी वार्ता के लिए 9 सदस्यीय कमेटी को भी बुलाई गई है। उन्होंने आगे कहा कि 5 सदस्यीय कमेटी की बैठक में यह निर्णय लिया गया है कि हमारा आंदोलन पहले की तरह जारी रहेगा और कल संयुक्त किसान मोर्चा (रङट) की बैठक में आंदोलन को आगे बढ़ाने के लिए हमारे अगले कार्यक्रमों पर निर्णय लिया जाएगा। बता दें कि एक दिन पहले रविवार को भारतीय किसान यूनियन (भाकियू) के राष्ट्रीय प्रवक्ता राकेश टिकैत को जान से मारने की धमकी देने का मामला सामने आया था।

भारत में भी फैल रहा है ओमिक्रॉन

नई दिल्ली। भारत में ओमिक्रॉन से संक्रमण के मामले बढ़ते जा रहे हैं जिसकी वजह से जानकार लोगों को पूरी सावधानी बरतने की सलाह दे रहे हैं. दुनिया में भी कोरोना वायरस का यह नया वेरिएंट नए नए देशों में फैलता जा रहा है.भारत में अभी तक ओमिक्रॉन से संक्रमण के 21 मामलों की पुष्टि हो गई है. इनमें से नौ मामले राजस्थान में, आठ महाराष्ट्र में, दो कर्नाटक में हैं और दिल्ली और गुजरात में एक एक मामला है।

और भी कोविड पॉजिटिव लोगों पर ओमिक्रॉन से ही संक्रमित होने का संदेह है लेकिन इनके सैंपलों की जेनेटिक जांच के नतीजे अभी आए नहीं हैं. दिल्ली में तो पिछले 24 घंटों में जांच किए गए सैंपलों में आई कमी के बावजूद संक्रमण के मामले बढ़ गए.टीका लेना जरूरी दिल्ली के स्वास्थ्य मंत्री सत्येंद्र जैन ने एक ट्वीट में सबसे टीका लेने

की और मास्क पहनने की अपील की. केंद्र सरकार के ताजा आंकड़ों के मुताबिक देश के 94 करोड़ वयस्क नागरिकों में से करीब 51 प्रतिशत को कोरोना वायरस के खिलाफ टीके के दोनों डोज लग चुके हैं. इसके अलावा करीब 85 प्रतिशत वयस्क नागरिकों को कम से कम एक डोज लग चुकी है. ओमिक्रॉन के अधिकांश मामले ऐसे लोगों में सामने आए हैं जो हाल ही में विदेश यात्रा से लौटे थे. हालांकि कर्नाटक में एक डॉक्टर को भी संक्रमण हुआ है और वो कहीं भी नहीं गए थे. डॉक्टरों का कहना है कि नया वेरिएंट का स्थानीय आबादी में फैलना शुरू हो चुका है।

सर्जन अरविंदर सिंह सोइन ने ट्विटर पर लिखा, ₹ओमिक्रॉन यहां आ चुका है, इसका सामुदायिक प्रसार शुरू हो चुका है. दुनिया के और भी कई देशों में अब ओमिक्रॉन के पहले मामलों की पुष्टि हो चुकी है. इनमें नेपाल, जापान, थाईलैंड, रूस, क्रोएशिया, अर्जेंटीना आदि देश शामिल हैं. ओमिक्रॉन के मामले सबसे पहले पकड़ने वाले देश दक्षिण अफ्रीका में रोजाना सामने आने वाले मामलों में पांच गुना उछाल आई है. सभी एहतियात बरतें जहां करीब 15 दिनों पहले जांच किए जाने वाले हर 100 सैंपलों में से सिर्फ दो पॉजिटिव आ रहे थे, वहीं अब करीब 25 पॉजिटिव आ रहे हैं. राष्ट्रपति सिरिल रामाफोसा ने कहा है कि संक्रमण की यह दर देश में पहले कभी नहीं देखी गई।

हालांकि संक्रमण से मरने वालों की संख्या में कोई नाटकीय बढ़ोतरी अभी तक नहीं देखी गई हैं. रामाफोसा ने सभी देशवासियों को टीका लेने की अपील की है. अभी तक देश की कुल आबादी में से करीब 25 प्रतिशत लोगों का ही टीकाकरण पूरा हुआ है. इस बीच ऑक्सफोर्ड/ऐस्ट्राजेनेका टीके को बनाने वाले टीम की मुख्य वैज्ञानिक सारा गिल्बर्ट ने कहा है लोगों को सावधान रहने की अपील की है।

कर्नाटकः चिकमगलूर में कोरोना संक्रमित छात्रों की संख्या पहुंची 101, स्कूल के 10 स्टाफ भी पॉजिटिव

नई दिल्ली। कर्नाटक में कोरोना वायरस के नए केस की संख्या लगातार बढ़ती जा रही है। पिछले तीन-चार दिनों में चिकमगलूर का एक स्कूल कोरोना वायरस कोरोना वायरस नया क्लस्टर बनकर उभरा है। सोमवार को इस स्कूल में संक्रमित छात्रों की संख्या 101 पहुंच गई। इसमें 90 छात्र हैं और 11 स्टाफ हैं। सभी छात्रों के सैंपल को जीनोम सिक्वेंसिंग के लिए भेज दिया गया है। सोमवार को जिले के स्वास्थ्य अधिकारी डॉ उमेश ने बताया कि इससे पहले स्कूल के 59 छात्रों और 10 स्टाफ की रिपोर्ट पॉजिटिव आई थी। स्कूल में स्वास्थ्य विभाग कर्मचारियों को तैनात किया गया है। सभी का होम आइसोलेशन में ही प्रोटोकॉल के अनुसार इलाज किया जा रहा है। बता दें कि स्कूल परिसर को सील कर दिया गया है उसी में ब्लॉक बनाकर छात्रों का इलाज किया जा रहा है।

तालिबानी शासन में अफगानिस्तान बेहाल, भूख से जा सकती है 10 लाख बच्चों की जान

काबुल। तालिबान के चार महीने के शासन में ही अफगानिस्तान बेहद बदहाली और तंगहाली के दौर में पहुंच गया है। आलम यह है कि दो दशक से युद्धग्रस्त रहा देश अब भुखमरी की कगार पर पहुंच गया है। न्यूयॉर्क टाइम्स की रिपोर्ट के मुताबिक, कुछ सहायता समूहों ने कहा है कि सर्दी के इस मौसम में भूख की वजह से 10 लाख बच्चों की जान जा सकती है। अफगानिस्तान में दशकों से कुपोषण की समस्या रही है और हाल के महीनों में भूख का संकट गंभीर हो गया है। यूनाइडेट नेशंस वर्ल्ड फूड प्रोग्राम और फूड एंड एग्रीकल्चर ऑगेर्नाइजेशन के विश्लेषण के मुताबिक, इस सर्दी 2.28 करोड़ लोग (आधी से अधिक आबादी) को जानलेवा स्तर की

खाद्य असुरक्षा का सामना करना पड़ सकता है। न्यूयॉर्क टाइम्स की रिपोर्ट में कहा गया है कि इनमें से करीब 87 लाख लोग अकाल के करीब है, जोकि खाद्य संकट का सबसे खराब चरण होता है।

राजनीति को मानवीय अनिवार्यता से अलग करने की आवश्यकता पर जोर देते हुए वर्ल्ड फूड प्रोग्राम की अफगानिस्तान में कंट्री डायरेक्टर मैरी-एलेन मैकग्रॉर्टी ने कहा कि लाखों महिलाएं, बच्चे और पुरुष मौजूदा संकट में निर्दोष हैं। सर्दी के बढ़ने के साथ मानवीय संगठनों ने चेतावनी दी है कि 10 लाख से अधिक बच्चों की जान जा सकती है। द न्यू यॉर्क टाइम्स की रिपोर्ट के अनुसार, संकट संभावित रूप से नई तालिबान सरकार और संयुक्त राज्य अमेरिका के लिए हानिकारक है, जो आर्थिक प्रतिबंधों को कम करने के लिए बढ़ते दबाव का सामना कर रहा है। अफगानिस्तान में महीनों से अधिकतर लोगों की आमदनी बंद है, भले ही वे मजदूर हों या डॉक्टर, टीचर या अन्य किसी काम को करने वाले। खाने-पीने की चीजों और अन्य मूलभूत वस्तुओं की कीमत बहुत अधिक होने की वजह से ये कई परिवारों के पहुंच से बाहर हैं।

आंग सान सू की को मिली 4 साल की कैद, कोरोना प्रतिबंधों के उल्लंघन का था आरोप

बैंकॉक। म्यांमार की लोकतंत्र समर्थक नेता आंग सान सू की स्पेशल कोर्ट ने 4 साल कैद की सदा सुनाई है। सू की पर कोरोना प्रतिबंधों का उल्लंघन करने और लोगों को उकसाने का आरोप है। एक लीगल ऑफिसर ने सू की को यह सजा दिए जाने की जानकारी दी है। इसी साल 1 फरवरी को लोकतंत्र में तख्तापलट हुआ था और सू की के समर्थन वाली सरकार को अपदस्थ कर दिया गया था। उसके बाद से ही 76 वर्षीय सू की के खिलाफ कई मुकदमे चल रहे हैं। इनमें से ही एक में उन्हें यह सजा सुनाई गई है। बीते साल नवंबर में चुनाव से पहले एक कार्यक्रम में सू की की मौजूदगी

और उसमें बड़ी संख्या में समर्थकों के जुटने को लेकर उनके खिलाफ केस चल रहा था।

इस इवेंट को लेकर ही उन पर कोरोना के नियमों के उल्लंघन का केस चल रहा था। एक लीगल ऑफिसर ने नाम उजागर न किए जाने की शर्त पर सू की को यह जानकारी दी है। सू की पर चल रहे मुकदमे को मीडिया और अन्य लोगों से दूर रखा गया था। म्यांमार की आंतरिक राजनीति की समझ रखने वाले लोगों का कहना है कि सू की को अगले चुनाव से दूर रखने और उनकी छवि को खराब करने के लिए भी इस तरह के कई मुकदमे उनके खिलाफ चल रहे हैं। दरअसल म्यांमार के संविधान के मुताबिक किसी मामले में दोषी करार दिए जाने के बाद जेल जाने वाले शख्स को चुनाव लड़ने का अधिकार नहीं है। इसके अलावा वह किसी संवैधानिक पद पर भी नहीं बैठ सकता है।

ऐसे में माना जा रहा है कि म्यांमार के सैन्य शासन ने सू की को सत्ता से हमेशा के लिए बेदखल करने के लिए भी ऐसे कई मामले शुरू किए हैं। कहा जा रहा है कि सू की को सजा सुनाए जाने के बाद कुछ इलाकों में तनाव की स्थिति भी पैदा हो सकती है।

अंखड भारत संदेश के लिए स्वामी श्री योगी सत्यम क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान संस्थान झूंसी, प्रयागराज 211019 से प्रकाशित एवं रामा प्रिंटिग प्रेस 53/25/1ए बेली रोड नया कटरा प्रयागराज से मुद्रित।

मुद्रक/प्रकाशक

स्वामी श्री योगी सत्यम पी.आर.बी. एक्ट के अन्तर्गत समाचारों के चयन के लिए उत्तरदायी। इस समाचार पत्र में प्रकाशित समस्त समाचारों से संबंधित विवादों का न्याय क्षेत्र प्रयागराज होगा। आरएनआई नं.
UPHIN 2001/9025